आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 दिसम्बर, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 दिसम्बर, 2013 ★ मार्गशीर्ष, 2070

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

जय गुरु हीरा | जय गुरु हस्ती | जय गुरु मान

नीति और ईमानदारी से प्राप्त धन समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है।
- आचार्य श्री हीरा

U TURN
अहिंसा तीर्थ अभियान
मानवीय आहार शाकाहार

बीमारियों को निमंत्रण मांसाहार से

ह्रदय रोग, किडनी, माइग्रेन तथा अनेकों दोष
मानसिक बीमारियों के मुख्य कारणों में से
एक है मनुष्य का मांसाहारी होना

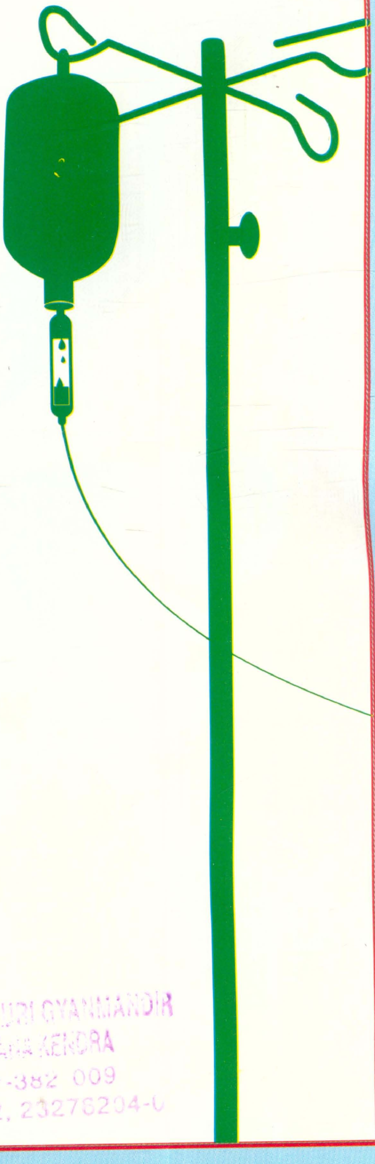

शाकाहार अपनाओ,
संसार में सुख-शांति बरसाओ

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रचारक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
जलगाव • औरंगाबाद • नासिक

जनहितार्थ प्रकाशित

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382 009
Phone : (079) 23276252, 23276204-0

2903

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

30695

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
Website: www.jinvani.net

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी,
अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे।
अरहा नायपुत्ते,
भगवं वेसालिए वियाहए।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.18

इस तरह श्रेष्ठ ज्ञानी दर्शी,
अति श्रेष्ठ ज्ञान-दर्शनधारी।
अर्हन् वैशालिक ज्ञातपुत्र,
व्याख्यान किया जनहितकारी।।

दिसम्बर, 2013
वीर निर्वाण संवत्, 2540
मार्गशीर्ष, 2070

वर्ष 71 अंक 12

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	शासन-व्यवस्था	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	वाग्वैभव(20)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	12
प्रवचन-	मृषानुबंधी रौद्र-ध्यान	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	13
	आदत में परिवर्तन हेतु करें नित्य आराधना	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	18
	क्रोध शमन का एक उपाय : मौन	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.	25
शोधालेख -	जैन प्राकृत साहित्य : एक सर्वेक्षण	-प्रो. सागरमल जैन	29
	पंच समवाय सिद्धान्त : एक समीक्षा(4)	-डॉ. श्वेता जैन	36
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (84)	-श्री धर्मचन्द जैन	42
परिवार-स्तम्भ -	पारिवारिक जीवन की सफलता के सूत्र	-प्रो. सुमेरचन्द जैन	45
युवा-स्तम्भ -	वचनों को सम्भालो	-श्री पारसमल संकलेचा	49
स्वास्थ्य-विज्ञान -	इलास्टिक डोरी द्वारा रोगों का सरल उपचार	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	52
बाल-स्तम्भ -	हीरा-कुणी	-महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर	57
अभिव्यक्ति -	वीतराग ध्यान-साधना-शिविर से मिले लाभ	-पूजा जैन सोमानी	60
	आराधक बन जायें	-श्रीमती सुनीता नरेन्द्र डागा	61
कविता/गीत-	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.	35
	सार्थक जो शिक्षा को कर दे	-डॉ. दिलीप धींग	41
	जिनेन्द्र दोहे	-उपप्रवर्तक जिनेन्द्रमुनि जी	48
	करना होगा संरक्षण कन्या धन का	-श्री महावीर प्रसाद जैन	62
विचार-	आयु का क्षण	-संकलित	44
	दें नैतिक शिक्षा और सुसंस्कार	-श्रीमती रेनू सिरोया 'कुमुदिनी'	51
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	63
स्वाध्याय संघ-	पर्युषण रिपोर्ट-2013	-संकलित	65
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	78
श्राविका-मण्डल-	बनें आगम अध्येता (2)	-संकलित	114
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	116

सम्पादकीय

शासन-व्यवस्था

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

प्राचीनकाल में जो राजा के कर्त्तव्य होते थे, उनसे भी अधिक व्यापक कर्त्तव्य आधुनिक प्रजातन्त्र में शासक के होते हैं- नागरिकों की सुरक्षा, आजीविका-व्यवस्था, शिक्षा एवं चिकित्सा व्यवस्था, अपराध की रोकथाम, समाज के हितकारी कार्य, पर्यावरण रक्षा, विकास के साधनों एवं कार्यों की सुलभता, शान्ति एवं सह-अस्तित्व की सुरक्षा, एकता एवं अखण्डता का स्थिरीकरण, आन्तरिक अनुशासन, देश की सीमा-रक्षा, राज्यों एवं देशों से पारस्परिक हितावह सम्बन्धों का स्थापन, उनका सुदृढीकरण, विभिन्न कार्यों के सम्पादन हेतु सैन्य बल एवं पुलिस बल का संयोजन, वित्त-व्यवस्था, निर्धन एवं निःशक्तजनों के कल्याण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन, औद्योगिक एवं आर्थिक संस्थानों का विकास आदि। सम्पूर्ण देश का विकास किस प्रकार हो, इसके लिए ढांचागत व्यवस्था करने का कार्य भी शासन का है। आज की भाषा में इस शासन-व्यवस्था को सरकार कहा जाता है।

देश के इन विविध कार्यों को सम्पादित करना किसी एक व्यक्ति के द्वारा सम्भव नहीं हो सकता। इसके लिए विभिन्न विभागों, मंत्रालयों के माध्यम से व्यवस्था की जाती है। गृह, विदेश, रक्षा, शिक्षा, वित्त, चिकित्सा, रेल, विमान, खान आदि विभागों के मंत्री एवं मंत्रालय होते हैं, जो सम्पूर्ण देश में व्यवस्था का संचालन करते हैं। देश के विकास की दिशा उसके शासक की सूझबूझ एवं दृष्टि पर निर्भर करती है। राज्यों का विकास हो या देश का, सर्वत्र उपयुक्त दृष्टि सम्पन्न शासक की आवश्यकता होती है। देश का विकास प्रजा के हित के संरक्षण तथा उसके बौद्धिक, शैक्षिक विकास के साथ ही सम्भव है। विकास का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए, जिसमें प्रजा स्वावलम्बी बनकर अपने परिवार एवं समाज के शैक्षिक धरातल को ऊँचा उठा सके। प्रजा को सीधे तौर पर दिया गया धन क्षणिक तुष्टि तो प्रदान कर सकता है, किन्तु उसके समुचित विकास में सहायक नहीं हो सकता। राजनेता का दायित्व बहुत बड़ा है। विभिन्न मंत्रालयों के मंत्री अपने कार्यों को निष्ठापूर्वक करने की शपथ ग्रहण करते हैं। किन्तु लोभ-लालच का ऐसा प्रभाव होता है कि वे निजी स्वार्थों की पूर्ति के पैमाने पर कार्यों को संचालित करते हैं, जिससे भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता को बढ़ावा मिलता है। एक राजनेता का प्रभाव सम्पूर्ण प्रजा पर पड़ता है। इसलिए शासक को सावधान रहने की आवश्यकता है कि वह प्रजा को कुपथ पर चलने का उदाहरण तो प्रस्तुत नहीं कर रहा है। देश में भले ही धर्मनिरपेक्षता हो, किन्तु नैतिकता, प्रामाणिकता, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, सदाचार आदि मूल्यों का प्रतिषेध नहीं किया जा सकता। भारत में एक धर्म राजधर्म के रूप में नहीं है,

किन्तु सभी धर्मों को समान महत्त्व है, यही इसकी धर्मनिरपेक्षता है। इसे दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि देश में सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव है तथा नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था है। धर्म में आस्था न रखने वाले लोगों के मत में भी नैतिक मूल्यों के प्रति सम्मान का भाव होता है।

राजनीति एवं शासन-व्यवस्था का संचालन दोनों भिन्न शब्द हैं। राजनीति में अपना अथवा अपने दल का उदय तथा दूसरे दल का पतन अभीष्ट होता है। सत्ता की प्राप्ति हेतु भी इस प्रकार की राजनीति खेली जाती है। यह राजनीति चूंकि अपने से भिन्न का पतन देखना चाहती है इसलिए 'राजनीति करना' एक मुहावरा बन गया है। इसमें फूट डालना, परस्पर एक-दूसरे को भिड़ाना और इस तरह अपनी ताकत बढ़ाना आदि क्रियाएँ देखी जाती है। राजनीति का यह रूप समाज की विभिन्न संस्थाओं एवं घरों में भी देखा जाता हैं। इस राजनीति को गंदी राजनीति कहा जाता है।

राजनीति का एक स्वरूप है- राज्य के विकास का चिन्तन एवं तदनुरूप साधनों की सुलभता हेतु प्रयत्न। राजा के लिए कहा गया है-

> राज्यं धर्मेण विन्देत, धर्मेण परिपालयेत्।
> धर्ममूलां श्रियं प्राप्य, न जहाति न हीयते।।

धर्मपूर्वक अर्थात् न्याय-नीति से राज्य को प्राप्त करे तथा धर्म से ही उसका पालन करे। न्याय-नीति (धर्म) से प्राप्त लक्ष्मी राजा का कभी त्याग नहीं करती है और राजा कभी हीनता को प्राप्त नहीं करता है।

वित्त की व्यवस्था हेतु प्राचीनकाल से ही प्रजा की आय का छठा भाग राजा ग्रहण करता था। आज उच्चवर्ग से अधिक तथा कमजोर वर्ग से कम कर लिया जाता है, जो एक शुभ संकेत है। राज्य अथवा देश की आय जिन साधनों से एवं जिस प्रकार की जाती है उसमें पारदर्शिता हो तथा सही कार्यों में उस धन का विनियोग हो। आज किसानों एवं जरूरतमंदों को जो सहायता पहुँचायी जाती है, उसका कुछ अंश ही उनके पास पहुँच पाता है। प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने कहा था कि हम जो राशि भेजते हैं उसका पन्द्रह प्रतिशत ही गरीब तक पहुँचता है। उनका यह कथन देश की दुःखद स्थिति को बयां करता है। अब देश में इण्टरनेट आदि तकनीकी साधनों के बढ़ने से बीच की छीजत को रोका जा सकता है।

शासन-व्यवस्था में प्रामाणिकता एवं विकास कार्यों के प्रति तत्परता के साथ पर्यावरण-संरक्षण एवं मानव की जीवन शैली के सम्यक् समुचित विकास की ओर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। आज समाज की कुरीतियों को दूर करने में भी शासन-व्यवस्था का प्रभाव दिखाई देता है। बाल-विवाह की प्रथा पर रोक का कार्य काफी अंशों में सरकार के प्रयत्नों से ही सम्भव हुआ है। शिक्षा के कारण विवाह भी 25 एवं उससे अधिक आयु में हो रहे हैं। किन्तु

सरकार एवं न्यायालय के द्वारा लिव-इन-रिलेशनशिप की जो स्वतन्त्रता दी जा रही है, इससे समाज के नियन्त्रण का ढांचा चरमरा सकता है तथा स्वच्छन्दता एवं कामचारिता की वृद्धि के साथ अनेक नई समस्याएँ भी खड़ी हो सकती हैं।

देश में हजारों कत्लखाने चल रहे हैं। इनमें पशु-सम्पदा का जिस प्रकार विनाश हो रहा है वह न नैतिक दृष्टि से उचित है, न पर्यावरण शुद्धता की दृष्टि से, न मानवीय दृष्टि से और न ही प्राणिमात्र के जीवन जीने के अधिकार की दृष्टि से। गायों के कत्ल पर रोक लगाई गई है, फिर भी चोरी-छिपे उन्हें कत्लखानों तक पहुँचाया जाता है। करोड़ों का मांस निर्यात होता है जिससे आर्थिक आय भले ही होती है, किन्तु मूक प्राणियों की अन्तरात्मा दुःखी होकर कभी शान्ति और समृद्धि का आशीर्वाद नहीं दे सकती। आज मानव-अधिकार की रक्षा हेतु आयोगों का गठन किया गया है, किन्तु इन मूक प्राणियों की रक्षा के लिए कोई अधिकारों की योजना सरकार के पास नहीं है। मनुष्य मतदाता है, इसलिए उसकी रक्षा करना तो कर्तव्य है ही, किन्तु मानव-सम्पदा से भी बढ़कर पशु सम्पदा का मूल्यांकन किये जाने की आवश्यकता है। पशु-पक्षियों के कल्याण हेतु भी सरकार को योजनाएँ बनाकर क्रियान्वित करना चाहिए, इसके लिए राजनेता में आध्यात्मिक दृष्टि एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि का विकास आवश्यक है।

विश्व की भांति भारत का समाज भी निरन्तर बदलता जा रहा है। संयुक्त परिवार एकल परिवार में बदले हैं और अब एकल परिवार के सदस्य भी विकेन्द्रित हो रहे हैं। यह सामाजिक समस्या निरन्तर बढ़ रही है। भौतिक साधनों के प्रति आकर्षण निरन्तर बढ़ रहा है। जीवन में अशान्ति, असंतोष और नकारात्मक विचारों ने अधिकार जमा लिया है। प्रतिभावान किशोरों एवं युवकों में निराशा और डिप्रेशन की स्थिति देखी जाती है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा में आध्यात्मिक मूल्यों को भी स्थान दिया जाय, जिससे मानसिक विकृतियों पर भी नियन्त्रण होगा, शारीरिक रोग भी कुछ कम होंगे तथा पारस्परिक लड़ाई-झगड़े, घरेलू हिंसा आदि में भी कमी आने की सम्भावना है। निराशा, डिप्रेशन एवं तनाव के क्षण जीवन में कम होने से अधिक रचनात्मक कार्यों को बल मिल सकेगा। परस्पर सौहार्द, मैत्री एवं भाई-चारे में अभिवृद्धि का आधार आध्यात्मिक मूल्यों के शिक्षण से सम्भव है।

एक अच्छे राज्य के लिए राजा के पाँच कर्त्तव्य बताए गए हैं-

दुष्टस्य दण्डः सुजनस्य पूजा, न्यायेन कोशस्य च संप्रवृद्धिः
अपक्षपातो रिपुराष्ट्ररक्षा पंचैव यज्ञाः कथिता नृपाणाम्। -अर्हन्नीति

दुष्ट या अपराधी व्यक्ति को दण्ड, सज्जन व्यक्ति को सम्मान, न्यायपूर्वक कोष की अभिवृद्धि, बिना पक्षपात के व्यवहार तथा शत्रु-राष्ट्रों से प्रजा की रक्षा- ये पाँच कार्य राजा के कहे गए हैं।

शासक ही यदि अपराधी हो तो वह दुष्टों व अपराधियों का शमन नहीं कर सकता। आज

सज्जन व्यक्तियों के कार्य सरलता से सम्पन्न नहीं होते, किन्तु पहुँच वाले दुष्टों के कार्य सरकार में आसानी से हो जाते हैं। आज सज्जनों को सक्रिय होकर दुर्जनता के दम्भ पर चोट करनी चाहिए। सरकार को भी व्यवस्था में इस प्रकार की पारदर्शिता लानी चाहिए कि सही व्यक्ति का कार्य सही समय पर हो सके।

राजा का हित प्रजा के हित के साथ जुड़ा हुआ होता है। कहा गया है-

प्रजासुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः, प्रजानां तु प्रियं हितम्।।-कौटिल्य अर्थशास्त्र

जो शासक या राजनेता प्रजा के सुख में अपना सुख मानता है उसे प्रजा सदैव चाहती है। वह प्रजा के हित में अपना हित समझता है, उसे अपना हित प्रिय नहीं, अपितु प्रजा का हित प्रिय लगता है। यह एक उच्च आध्यात्मिक दृष्टि है, जो राजनेता को प्रजा के साथ अन्तर्हृदय से जोड़ती है। ऐसा राजनेता सच्चा लोकसेवक होता है तथा प्रजा के दिलों पर राज करता है।

एक राजनेता को चाहिए कि वह संयमी हो, अपनी इन्द्रियों को वश में करे। जो राजनेता अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं करता, वह सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज करता हुआ भी शीघ्र विनाश को प्राप्त हो जाता है- **अवशेन्द्रियचातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति।**

शासक अथवा मंत्री को उपकार करने का अधिकार प्राप्त होता है। वह इस अधिकार का यदि उपयोग नहीं करता है तो धिक्कार का पात्र बनता है-

अधिकारपदं प्राप्य नोपकारं करोति यः।
अकारो लोपमात्रेण ककारो द्वित्वतां व्रजेत्।।

अर्थात् अधिकार पद को प्राप्त करके जो उपकार नहीं करता है, उसके 'अधिकार' पद में 'अ' का लोप एवं क का द्वित्व होकर धिक्कार में परिणत हो जाता है

जो राजनेता हितकारी वचनों को सुनने से कतराता है, वह अच्छा शासक नहीं होता- **हितान्न यः संश्रुणुते सः किं प्रभुः।** एक शासक को विद्या सम्पन्न होना चाहिए। प्राचीनकाल में राजकुमारों को ऋषि-मुनियों के आश्रमों में सभी प्रकार की विद्याएँ प्रदानकर योग्य बनाया जाता था। आज राजनीति में ऐसे योग्य व्यक्तियों का अभाव सा है। चुनाव लड़ने की शर्त में उन्नत शिक्षा को एक आधार बनाया जाना चाहिए। आज चुनाव में एक-दूसरे दलों पर आरोप लगाकर विजय प्राप्त करने की अभिलाषा रहती है, किन्तु यह क्षुद्र राजनीति है। मतदाता भी इन आरोपों के आधार पर ही अपना निर्णय करने की सोचता है, जबकि विभिन्न दलों के द्वारा कृत कार्यों एवं उनके प्रस्तावित कार्यक्रमों को पूर्ण करने के सामर्थ्य का आकलन करके ही चयन करना चाहिए। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

तेणे जहा संधिमुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी।
एवं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि।।

– उत्तराध्ययन सूत्र, 4.3

अनुवाद–जिस प्रकार कोई चोर सेंधद्वार पर पकड़ा जाता है एवं अपने कर्मों के कारण वह पापी छेदा जाता है (दण्डित होता है), उसी प्रकार जीव यहाँ से मरकर एवं इस भव में भी कृत कर्म का फल भोग करता है। कृत कर्मों का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं है।

विवेचनः– मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसके अनुसार उसे फल की प्राप्ति होती है, यह कर्मसिद्धान्त का प्रमुख नियम है। यदि कोई जीव मन से दूसरों का बुरा चाहता है, दुर्वचनों का प्रयोग करता है, दूसरों को दुःख देता है, दूसरों को परितापित करता है, दूसरों का शोषण करता है तो उसे फलस्वरूप दुःख की प्राप्ति होती है तथा दूसरों के प्रति शुभभावना भाता है, सुवचनों का प्रयोग करता है, सुख उपजाता है, सेवा करता है, दान आदि से सहयोग करता है, तो उसे फल में सुख मिलता है। कर्मों का फल इस जीवन में भी मिल सकता है एवं परलोक में भी प्राप्त हो सकता है। कुछ लोग मनुष्य भव में हिंसा, झूठ, चोरी, छल-फरेब एवं अन्याय-अनीति का सहारा लेकर धनपति बन जाते हैं एवं लोग उन्हें सुखी समझते रहते हैं। वस्तुतः वे सुखी होते नहीं हैं। वे सदैव भयभीत एवं शंकालु बने रहते हैं। वे शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर दुःख भोगते रहते हैं। इस जन्म में भी फल-भोग करते रहते हैं तथा अन्य जन्म में भी कृत कर्मों का फलभोग होता है। इसलिए कर्मवाद में हमारा विश्वास होना चाहिए। विश्वास को दृढ़ करने की दृष्टि से ही कहा गया है कि कृत कर्मों का फल भोग किए बिना उनसे मुक्ति नहीं है। बुरे कर्मों का भी फल भोगना होता है एवं उपार्जित पुण्य कर्मों का भी यथास्थिति फल भोग करना होता है। मन, वचन एवं काया की शुभ प्रवृत्ति से तीन कार्य होते हैं- (1) अशुभ कर्म के आस्रव का निरोध अर्थात् संवर होता है (2) बद्ध अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है तथा (3) पुण्य कर्म का उपार्जन होता है। पुण्य कर्म से ही मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, मनुष्यायु आदि की प्राप्ति होती है।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि जैन धर्म में प्रतिपादित कर्मसिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक है। कृत कर्मों का फलभोग करने के कथन के साथ एक अन्य उल्लेख यह भी है कि शुभ योग एवं तपस्या आदि के द्वारा पूर्वबद्ध पाप कर्म का क्षय भी किया जा सकता है। तपस्या से पूर्वबद्ध ज्ञानावरणादि कर्मों का स्थितिज्ञात एवं रसघात होता है एवं मात्र प्रदेशोदय के रूप में ही फल भोगना होता है। साधना का यह महत्त्व है कि हम पुराने पाप कर्म का शीघ्र क्षय कर सकते हैं तथा अघातिकर्म की कुछ पाप प्रवृत्तियों को पुण्य प्रकृतियों में बदल सकते. हैं। इसलिए 'कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि' एक आपेक्षिक कथन है, जो कर्मसिद्धान्त के प्रति आस्था उत्पन्न करता है।**- सम्पादक**

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (20)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- अन्तर के सौन्दर्य को विकसित करना। जीव का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।
- नर और नारी दोनों की शोभा शील है।
- तन का रूप हमारे हाथ की बात नहीं है, किन्तु आत्मा के उजलेपन को प्रकट करना हमारे वश की बात है।
- समय अनमोल है, इसे बाजार से नहीं खरीदा जा सकता है।
- जो समय का सदुपयोग करते हैं, वे मंजिल पर पहुँच जाते हैं।
- धन को धूल समझकर, परिवार को बंधन मानकर तथा राग-द्वेष को कर्म का कारण तुमने जानकर छोड़ दिया है, तो उन्हें पुनः ग्रहण मत करना।
- अशुभ से शुभ की ओर तथा शुभ से शुद्ध की ओर बढ़ेंगे तो पाप की ओर से राग छूटेगा।
- स्वार्थ बढ़ने पर अपनत्व घट जाता है।
- सब अवस्थाओं में कोई रक्षा करने वाला है तो वह है 'धर्म'। तू धर्म को अपने पास रख।
- छोटी-छोटी बातों के लिए उलझकर शक्ति क्षीण न करें।
- संखिया कितना सफेद है। किन्तु उसे यदि मिश्री समझकर कोई खा ले तो मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। अतः हर अच्छी दिखने वाली वस्तु वास्तव में अच्छी हो, यह आवश्यक नहीं है।
- चारित्र की नौका, व्रत की नाव और महाव्रत के जहाज पर बैठकर चलेंगे तो आप संसार सागर पार हो सकेंगे।
- एक वासना का दुर्गुण सौ गुणों पर पानी फेर देता है।
- मानव जीवन पाया है तो कुछ मर्यादा करो।
- साधक, साधन, साधना और साध्य का योग मिलने पर सिद्धि मिलती है।
- पारस पत्थर से कोई चटनी बांटे या अमृत से पैर धोए, तो उसे आप क्या मूर्ख नहीं कहेंगे?
- थारी-म्हारी करने में समय बर्बाद मत करो।
- आपको दुनिया की चिन्ता है, अपने-आप की भी चिन्ता कीजिए।

-हीरा प्रवचन-पीयूष से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

मृषानुबंधी रौद्र-ध्यान

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

रौद्रध्यान के चार प्रकार हैं- 1. हिंसानुबन्धी, 2. मृषानुबन्धी, 3. स्तेनानुबन्धी और 4. संरक्षणानुबन्धी। हिंसानुबन्धी रौद्रध्यान का विवेचन सितम्बर 2013 के अंक में किया गया था। अक्टूबर-नवम्बर 2013 का अंक 'आगमादर्श आचार्य श्री हीराचन्द्र' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। अतः सितम्बर में प्रकाशित 'रौद्र-ध्यान की रौद्रता' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित प्रवचन का शेषांश तथा मृषानुबन्धी रौद्रध्यान का विवेचन प्रस्तुत अंक में दिया जा रहा है।**-सम्पादक**

यदि तुम्हारे मन में दूसरे के प्रति हिंसा व अनिष्ट की भावना होगी, तो उसके मन में भी वैसे ही विचार तुम्हारे प्रति जग उठेंगे। इस सम्बन्ध में एक पुरानी कहानी आपको याद होगी- एक चन्दन का व्यापारी एक बार राजा के जन्म-दिवस पर बधाई देने के लिए भेंट सजाकर ले गया। नगर के और भी हजारों आदमी भेंट लेकर पहुँच रहे थे, राजा सभी से प्रसन्न हो-होकर कुशल पूछ रहा था। जैसे ही चन्दन के व्यापारी को देखा तो राजा के मनोभावों में एकदम परिवर्तन आ गया। व्यापारी से घृणा एवं नफरत ही नहीं, किन्तु उसे तुरन्त मार डालने की भावना जगने लगी। राजा को अपनी भावना के इस आकस्मिक परिवर्तन पर बड़ा आश्चर्य हुआ, पर उसने विचारों पर कठोर संयम रखा, मन का क्रोध व्यापारी के समक्ष प्रदर्शित नहीं होने दिया।

राजा ने मंत्री से अपने मन की स्थिति बताई और कहा- "सहसा मेरे मन में यह दुर्भावना क्यों आई, जबकि उस व्यापारी ने प्रत्यक्ष में कभी मेरा कोई अपराध नहीं किया।" मंत्री ने मनोवैज्ञानिक रीति से इस घटना का रहस्य ढूंढना चाहा। वह कुछ दिनों बाद व्यापारी की दुकान पर पहुँचा। व्यापार की हालत पूछी, तो सेठ ने कहा-"कुछ महीनों से बड़ा मंदा चल रहा है, माल की खपत बिल्कुल नहीं है। अब तो इज्जत बचाने की फिकर हो रही है।"

मंत्री सेठ की भावना का रहस्य समझ गया। उसने आदेश दिया- "महाराज के स्वास्थ्य के लिए चंदन की लकड़ियों से खाना बनेगा, अतः कल से आप एक मण चंदन प्रतिदिन राज महल में भेजा कीजिए। वैद्यों के कथनानुसार अब हमेशा ही महाराज का खाना चंदन की लकड़ियों से ही पकाया जायेगा।"

मंत्री का आदेश पाकर व्यापारी बेहद प्रसन्न हुआ। कुछ दिनों बाद मंत्री ने व्यापारी को

राजा के समक्ष बुलाया। राजा ने उसे देखा तो मन में अपार स्नेह उमड़ पड़ा। जैसे- कोई अपना भाई हो, राजा का मन हुआ उसे बाँहों में भरकर छाती से लगा लूँ। पर अब भी भावना पर राजा ने संयम रखा और कुछ समय बातचीत कर व्यापारी को विदा किया।

राजा ने मंत्री से अपनी मनोभावना जताई और पूछा- "यह भी बड़ी विचित्र बात है उस दिन इसी आदमी को देखकर मन दुर्भावना से भर गया था और आज प्रेम से छलक उठा।" इसका क्या कारण है, सोचने लगे?

मंत्री ने निवेदन किया-"महाराज! पिछले जन्मदिन पर जब यह व्यापारी आया था तो इसके व्यापार में बड़ा मंदा चल रहा था। माल की खपत नहीं थी, गोदाम अटे पड़े थे। इसलिए यह सोच रहा था, यदि राजा की मृत्यु हो जाये तो मेरा सब माल निकल जाय, चूँकि राजा का दाह-संस्कार तो चन्दन में ही होगा और मेरे सिवाय और किसी के पास 'चन्दन नहीं है, तो बस मुँहमांगा दाम लेकर मुनाफा कमा लूँगा।" उन विचारों के कारण ही इसे देखकर आपके मन में भी क्रोध व द्वेष उमड़ आया। मन मन को पकड़ता है, हृदय हृदय को छू लेता है। अतः यह आपकी मृत्यु कामना कर रहा था तो आपके मन में भी इसको मारने के संकल्प जग उठे। अब आपकी रसोई के लिए जन्मभर तक चन्दन का आर्डर इसे मिल गया है। यह सोचता है- "महाराज चिरंजीवी रहें, स्वस्थ रहें, तो मेरा माल रोज बिकता रहेगा, इसलिए यह आपके स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की सतत कामना करता रहता है।" इसकी भावना ने मोड़ लिया तो आपकी भावनाएँ भी बदल गईं। इसके मन में स्नेह है, प्रेम है, सद्भाव है तो आपके मन में अनायास ही इसके प्रति स्नेह एवं सद्भाव उमड़ आया।

यह विचारों का चमत्कार है। दिल-दिल को जानता है। यह कहावत झूठी नहीं है। आपके मन में किसी के प्रति दुर्ध्यान होगा, दुर्विचार होगा तो सामने वाले के मन में भी वैसे ही संकल्प जाग उठेंगे। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। आप किसी को धोखा देना चाहेंगे तो सामने वाला भी आपको फंसाने की युक्तियाँ सोचने लगेगा। संसार में सर्वत्र ही नहले को दहला, सेर को सवासेर मिल जाता है। भाव जैसा प्रभाव और बिम्ब जैसा प्रतिबिम्ब प्रकृति का यह सार्वभौमिक नियम है।

सुदर्शन सेठ का जीवनवृत्त आपने सुना ही है। जिस अर्जुनमाली से समूचा राजगृह संत्रस्त हो चुका था। बड़े-बड़े योद्धा और वीर भी भय से जिसके आगे कांपते थे, उसी अर्जुनमाली के समक्ष सुदर्शन सेठ, जिसके पास ललकारने के लिए एक तिनका भी नहीं, चुपचाप जाकर खड़ा हो गया। और जिसके सद्भाव से वह क्रूर हत्यारा स्तंभित हो गया, उसका हृदय बदल गया, इसका क्या रहस्य है? क्या कोई देवी शक्ति वहाँ आई थी? नहीं! यह सुदर्शन सेठ की अहिंसा का ही चमत्कार था। उसके मन में अर्जुनमाली के प्रति भी स्नेह

एवं करुणा की हिलोरें उठ रही थीं। वह उसे मारना नहीं, किन्तु तारना चाहता था। उसका उद्धार करना चाहता था। इन्हीं सद्विचारों ने उस पर जादू किया और क्रोध परास्त हो गया, हिंसा हार गई, प्रेम की विजय हुई, अहिंसा की रस धारा में वह आप्लावित होकर उसी के साथ भगवान के चरणों में पहुँचकर साधु बन गया।

बक ध्यानी न बनो

मैं इस बात को स्पष्ट कर रहा था कि रौद्रध्यान की परिणति जब आत्मा में होती है, तो मनुष्य क्रूर बन जाता है, वह दूसरों का अहित एवं विनाश सोचने लगता है। उसके परिणाम बड़े ही क्रूर, कलुषित एवं रौद्र हो जाते हैं। वह बाहर में यदि कुछ प्रवृत्ति नहीं भी करता है तो भी परिणामों की रौद्रता के कारण भयंकर पाप कर्मों का बंध कर लेता है। प्रसन्न चन्द्र राजर्षि ध्यान मुद्रा में खड़े-खड़े सातवीं नरक तक के योग्य कर्म बांध चुके थे। कैसे? बाहर में तो साधु का वेष था, ध्यान मुद्रा लगाये खड़े थे। किन्तु मन में रौद्र रूप धारण करके युद्ध कर रहे थे। इसी कारण तो सातवीं नरक के योग्य कर्म बांध चुके थे। तन्दुल मत्स्य- छोटा सा देह लिए होता है, चावल जितनी सी उसकी काया होती है, और अन्तर्मुहूत का आयुष्य होता है। इतने से समय में ही वह सातवीं नरक तक के घोर कर्म बांध लेता है? कैसे? रौद्र ध्यान के कारण! बड़े-बड़े मगरमच्छ जो मुँह खोले पड़े रहते हैं, जिनके उदर में प्रतिक्षण सैकड़ों-हजारों मछलियाँ जाती आती रहती हैं, जैसे किसी गुफा में या कोठरी में आती-जाती हों। तंदुल मत्स्य उन महामच्छों की आँख की भौंहों पर बैठा यह सब दृश्य देखता है और विचार करता है- ''यह मत्स्य कितना मूर्ख है, बेवकूफ है! इतनी मछलियाँ पेट में प्रवेश कर रही हैं, अब क्यों नहीं मुँह बंद कर लेता, सबको क्यों नहीं गटक जाता? मुँह में आये भोजन को वापस क्यों निकलने दे रहा है? यदि मेरा मुँह इतना बड़ा होता, और ऐसे मछलियाँ आतीं तो बस एक को भी जीवित नहीं छोड़ता, सबको निगल जाता।'' कितने रौद्र परिणाम हैं उसके? कर कुछ नहीं सकता, पर विचारों ही विचारों से घोर पाप कर्म बांध लेता है।

अपने यहाँ बगुले का चिंतन भी प्रसिद्ध है, काकचेष्टा, बकध्यान-कौए की चेष्टा और बगुले का ध्यान- यह भी एक कहावत बन गई है। बगुला एक पाँव पर खड़ा रहकर एक दृष्टि से देखता रहता है, बड़ी तत्परता से ऐसे खड़ा रहता है, जैसे कोई तपस्वी जल में खड़ा तपस्या कर रहा हो। पर उसका ध्यान किस पर रहता है? आत्मा या परमात्मा पर? नहीं न? मछली पर! शिकार पर।

बिल्ली भी कभी-कभी बड़ी स्थिर और तन्मय होकर ध्यान लगाकर बैठती है। छिपकली भी स्थिर होकर दीवार पर ऐसे चिपक जाती है। लगता नहीं जीवित है या मरी हुई। समाधि जैसा रूप रचकर बैठ जाती है, पर उसका ध्यान कहाँ है? शिकार पर! शिकार को

कब थोड़ा सा असावधान और निकट आया देखे और कब उसे चंगुल में फंसाए, यही उसकी मनोवृत्ति रहती है। तो जो व्यक्ति लोभ आदि के वशीभूत होकर दूसरों के नाश की भावना रखता है, दूसरों का अहित सोचता रहता है, दूसरों को धोखा देने की योजना बनाता रहता है, छल-कपट हत्या आदि के द्वारा अपना उल्लू सीधा करने की चिंता में बहता है- वह रौद्र ध्यान ध्याने वाला होता है। उसके परिणाम निरन्तर क्रूर-क्रूरतर बने रहते हैं। वह आर्त्त एवं रौद्र ध्यान के वश होकर इस जीवन में भी पीड़ा संत्रास आदि भोगता है, और परलोक तो निश्चय ही दुःखमय होता है। अतः श्रावक को रौद्र ध्यान के इन परिणामों पर विचार कर इनका त्याग करना चाहिए। मन को प्रतिपल शुद्ध भावों से पवित्र रखना चाहिए। किसी का भला यदि नहीं सोच सके, तो कम से कम किसी का भी अहित एवं विनाश तो नहीं सोचे।

रौद्रध्यान में चित्त की वृत्तियाँ किस प्रकार मलिन होती हैं, यह वर्णन आपके सामने चल रहा था। शास्त्र में चित्तवृत्तियों के जो चार रूप बताये है उनमें प्रथम रूप हिंसानुबंधी चिंतन है, इस पर विवेचन किया गया था। अब दूसरा रूप हमारे समक्ष आता है- 'मृषानुबंधी चिंतन।'

असत्य के दुष्परिणाम

हिंसा के साथ असत्य का गहरा सम्बन्ध है। जो हिंसा करता है, वह झूठ भी बोलता है। कोई कहे मदिरा तो पीता हूँ लेकिन नशा नहीं करता- यह बात कितनी अटपटी है। जो शराब पीयेगा उसे नशा भी आयेगा, जो हाथ में अंगारे लेगा उसका हाथ भी जलेगा। इसी प्रकार जो हिंसा करेगा उसे असत्य का भी सहारा लेना पड़ेगा। कोई कहे- "मैं हिंसा का त्याग तो नहीं कर सकता, लेकिन असत्य का त्याग कर सकता हूँ।" यह क्या संभव है? सर्वथा हिंसा का त्याग किए बिना सर्वथा असत्य का त्याग भी नहीं हो सकता। तो भाव यह है कि जो हिंसा करता है, वह मृषा भी बोलता है। मृषा- झूठ से मनुष्य का आत्मबल गिर जाता है। विश्वास उठ जाता है। असत्यवादी की सत्य बात पर भी लोग विश्वास नहीं करते। असत्य का सबसे बड़ा दुष्परिणाम जीवन में यही आता है- आत्मबल का पतन और विश्वास का नाश। शास्त्र में बताया है-

अविस्सासो य भूयाणं, तम्हा मोसं विवज्जए।-दशवैकालिक सूत्र 6.13

असत्य मनुष्य के अविश्वास का मूल है। संसार असत्यवादी का विश्वास नहीं करता- असत्यं प्रत्ययमूलकारणं। वेदों में भी असत्य की निन्दा की गई है। कहा है-

अश्रद्धामनृतेऽदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।-यजुर्वेद, 19.77

प्रजापति ने सत्य में श्रद्धा और असत्य में अश्रद्धा की स्थापना की। असत्य के साथ

अविश्वास का गठबंधन है। महात्मा बुद्ध ने एक स्थान पर कहा है-

जिह्वा तस्स द्विधा होति उरगस्सेव दिसम्पति।
यो जातं पुच्छितो पञ्हं अञ्ञथा विसुञ्झति।।

-जातक, 8.422.50

जो व्यक्ति जानबूझकर असत्य बोलता है, किसी के पूछने पर असत्य बात कहता है, उसकी जीभ सांप की तरह दो टुकड़े हो जाती है।

असत्य का इस जीवन में तो यह दुष्परिणाम आता है कि कोई उसका विश्वास नहीं करता। जगत् में उसकी बदनामी होती है। लोग असत्यवादी से घृणा करने लगते हैं, और इस प्रकार अपना अपमान, अविश्वास एवं बदनामी देखकर असत्यवादी मन-ही-मन दुःखी होता रहता है। असत्य के ये मनोवैज्ञानिक दुष्परिणाम हैं, और इनका उल्लेख आज से हजारों वर्ष पहले स्वयं भगवान महावीर ने किया है- **अलियवयणं....भयंकरं दुहकरं अयसकरं....मणसंकिलेसवियरणं....नीयजण-निसेवियं ... अप्पच्चय कारगं....परमसाहुगरहणिज्जं दुग्गइविणिवायवड्ढणं....**।-प्रश्नव्याकरण 1.2

असत्य वचन बड़ा भयंकर है, दुःखकर है, अपयश करने वाला, मन में संक्लेश बढ़ाने वाला है। नीच पुरुष ही असत्य का आश्रय लेते हैं। इससे अविश्वास बढ़ता है। भले आदमी इसकी निन्दा करते हैं। असत्य से आत्मा का पतन होता है। दुर्गति मिलती है।

असत्य से परलोक में दुःख होता है। यह बात तो इसी से स्पष्ट हो जाती है कि जो वस्तु इस लोक में भी दुःख एवं कष्ट देने वाली है, वह परलोक में तो न जाने कितना दुःख, पीड़ा एवं संत्रास का कारण बनेगी। आचार्यों ने बताया है-

निगोदेष्वथ तिर्यक्षु, तथा नरकवासिषु।
उत्पद्यन्ते मृषावाद- प्रसादेन शरीरिणः।।

मृषावाद के फलस्वरूप जीव निगोद, तिर्यंच एवं नरक गति में जन्म लेता है। वहाँ असंख्यातकाल तक दुःख भोगता है तथा घोर वेदना से कराहता रहता है। लाखों-करोड़ों वर्ष तक सुख की सांस भी नहीं ले पाता। **(क्रमशः)**

जिनवाणी ऑनलाइन भी उपलब्ध

सम्माननीय पाठकों को सूचित करते हुए प्रमोद का अनुभव हो रहा है कि अब जिनवाणी मासिक पत्रिका को ऑनलाइन भी पढ़ा जा सकता है। इसकी वेबसाइट है- **www.jinvani.net**

विनयचन्द डागा — मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

डॉ. धर्मचन्द जैन — सम्पादक, जिनवाणी मासिक पत्रिका

प्रवचन

आदत में परिवर्तन हेतु करें नित्य आराधना

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा चोरू ग्राम (जिला-टोंक) में 20 मार्च, 2013 को दिये गये प्रवचन का संकलन श्री पारसचन्द जी बोहरा, सवाईमाधोपुर ने किया था तथा सम्पादन श्री पुखराज जी मोहनोत, जोधपुर ने किया है।-सम्पादक

अविचल-अविनाशी पद पर विराजमान सिद्ध भगवन्तों, अनन्तज्ञानी-अनन्तदर्शनी अरिहन्त भगवन्तों तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र में जीवन-पर्यन्त रमण करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय अनुपम वाणी संसार-चक्र में भटकने वाले प्राणियों को सन्मार्ग बताने वाली, भवसागर में डूबते हुए प्राणियों को तारने वाली, अनादि-अनादि के जन्म-मरण को मिटाने वाली है। आप आलोयणा के पाठ में बोलते हैं-"सिद्धां जैसो जीव है, जीव सोही सिद्ध होय।" तात्पर्य यह कि सांसारिक प्राणी की आत्मा और सिद्ध भगवन्तों की आत्मा के मूल गुणों में कोई अन्तर नहीं है। अन्तर है तो मात्र ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के आच्छादन का। सांसारिक जीवों की आत्मा कर्म-सहित है और सिद्ध बन गए जीवों की आत्मा कर्म-रहित। सांसारिक जीव अनादि काल से राग-द्वेष व कषायादि के वशीभूत होकर शुभाशुभ कर्मदल से आच्छादित इस लोक में चौरासी लाख जीवयोनियों में भटक रहा है। ये कर्मदल ही इस जीवात्मा को परमात्म तत्त्व से अलग किए हुए हैं। जीव जब सम्पूर्ण कर्म-दलिकों को नष्ट कर देता है तब वह परमात्मा, सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बन जाता है। सिद्ध बनने के लिए तत्पर बना हुआ जीव समता भाव से समस्त सुख-दुःख सहन करता है। वह प्रत्येक परिस्थिति में भीतर के आत्मगुणों को प्रकट करने की साधना में लगा रहता है।

आप और हम कर्मों को नष्ट करना चाहते हैं। जहाँ चाह, वहाँ राह विद्यमान है, पर राह पर चलेंगे तब लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। पहली बात तो राह पर चलते नहीं हैं और चलते भी हैं तो तन और कहीं रहता है, मन कहीं और जाता है। होता क्या है? भीतर के आत्मगुण अधिकाधिक कर्म दलिकों से आच्छादित होते जाते हैं। धर्म-साधना और शुभ भावों के परिणामों से कुछ कर्म हटते हैं तो कुछ और नवीन कर्म चिपक जाते हैं। बुराई को बुराई के रूप में जान रहे हैं, समझ रहे हैं, पर उसे छोड़ नहीं पा रहे हैं। क्यों हो रहा है ऐसा? कारण बता रहा

हूँ। इस जीवात्मा का अनादि काल से जैसा स्वभाव बन गया है, वह छूट नहीं पा रहा है। छूटे भी कैसे? मारवाड़ में तो कहावत भी है- "पड़्योड़ा स्वभाव जासी जीव सूं।"

आपने शराब पीने वाले व्यक्तियों को देखा होगा। शराबी शराब पीकर सारा भान भूल जाता है। वह नशे की हालत में नहीं समझ पाता कि वह क्या कर रहा है, क्या कह रहा है, उसके सामने कौन है? उसे यह भी पता नहीं रहता कि वह किधर जा रहा है, कहाँ जा रहा है? वह लड़खड़ाते हुए चलता है और कहीं भी गिर सकता है। वह कभी गंदगी भरी नालियों में गिर जाता है तो कभी सड़क के बीच फैले-पसरे कीचड़ में फिसल जाता है। आते-जाते लोग उसे नफरत की नजरों से देखते हैं और आगे निकल जाते हैं। कुछ लोग टीका-टिप्पणी भी करते हैं, पर क्या नशे में चूर शराबी यह देख पाता है या सुन पाता है। कुत्ते आ-आकर उसका मुँह सूंघते हैं। एकाध कुत्ता उसका मुँह भी चाट जाता है पर वह बेखबर है। कई बार तो कुत्ता उसके मुँह पर पेशाब भी कर देता है। कितनी घृणास्पद दशा है, पर शराबी को तो कुछ पता नहीं। नशा चीज ही ऐसी है।

नशा भी एक निश्चित अवधि तक रहता है। अवधि बीतने पर नशा भी उतर जाता है। नशा उतर जाने पर शराबी की आँखें कुछ-कुछ खुलती हैं और वह अपने आस-पास देखता है। मूँदी हुई आँखें जब पूरी खुलती हैं तब उसे अपना और जहाँ वह है उस स्थान का ध्यान आता है। लोग उसे देखते हैं, वह लोगों को देखता है। सोचता है- यह क्या हुआ? कब से मैं यहाँ इस दशा में पड़ा हुआ हूँ। उठता है अपनी जगह से और चल पड़ता है अपने घर की ओर। मन में कुछ ग्लानि, कुछ पश्चात्ताप- "मैंने शराब पी और यह दशा हुई मेरी। मैंने अच्छा नहीं किया। शराब बुरी चीज है। मैं गलत रास्ते पर जा रहा हूँ। मुझे शराब नहीं पीनी चाहिए। आज तो पी पर अब नहीं पीऊँगा।"

दूसरे दिन शराबी व्यक्ति के मन में यही विचार कि मैं शराब नहीं पीऊँगा। पूरे दिन वह शराब नहीं पीने की ही सोचता रहा। दिन बीता और सांझ होने लगी। जैसे-जैसे सांझ होती गई, शराबी व्यक्ति अपने दिनभर के विचार से जूझने लगा। उसका शराब नहीं पीने का विचार धीरे-धीरे डगमगाने लगा। सांझ गहराई। अंधेरा होने लगा। उस अंधेरे ने उसके शराब नहीं पीने के संकल्प को निगल लिया। संकल्प-विकल्पों के झूले में झूलता उसका मन शराब के ठेके की दुकान पर जाने को ललचाने लगा। आखिर वह पूर्णतः चलायमान हो गया। उसके कदम शराब के ठेके की ओर बढ़ गए। उसने वहाँ जाकर बोतल खरीदी और एक अंधेरे कोने में जाकर उस ज़हर को गले के नीचे घूँट-दर-घूँट उतारने लगा।

पूछ रहा हूँ आपसे। यह क्यों हुआ? दिनभर का संकल्प क्यों विकल्प बन झूला-झूलने लगा। अंधेरे के होते ही क्यों वह शराब के ठेके की ओर गया एवं वहाँ शराब खरीद

कर क्यों पीना आरम्भ कर दिया उसने। बता रहा हूँ- उसे आदत पड़ गई पीने की। पड़ी हुई वह आदत उससे छूट नहीं रही। विचलित हो गया वह। यह एक दिन की नहीं, उसके लिए हमेशा की कहानी है। पीने के बाद हमेशा पश्चात्ताप, नहीं पीने का विचार, पर सांझ होते ही फिर वही ढर्रा, फिर वही बात, फिर वही चलन। संकल्प सरल है, पर संकल्प में दृढ़ता बहुत कठिन है। आदमी आदतन इतना मजबूर है कि वह अपनी आदत को छोड़ नहीं पाता। आदत नहीं छोड़ता है तो परिवर्तन होता नहीं है।

परिवर्तन सर्वत्र, सदैव होता रहता है। आप जानते हैं कि प्रत्येक बारह कोस के बाद बोली-भाषा बदल जाती है। मारवाड़ के लोग मारवाड़ी बोलते हैं, मेवाड़ में मेवाड़ी बोली जाती है, सिवाना पट्टी की सिवाञ्ची बोली कुछ भिन्न तरह की है, अजमेर-ब्यावर-जयपुर के लोग भी अलग तरह से बोलते हैं। यही बात राष्ट्र के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भी साफ दिखाई देती है। प्रकृति को देखें तो समय-समय पर मौसम बदलता है। कभी गर्मी, कभी सर्दी, कभी वर्षा। पेड़ों को देखिए तो पतझड़ आने पर पत्ते झड़ जाएंगे और वसंत आने पर फिर से नये पत्ते लग जायेंगे। प्राणी जगत में जानवरों और मानवों में देखिए- पहले बचपन, फिर यौवन और फिर बुढ़ापा। बचपन में होश नहीं, जवानी में जोश की कमी नहीं और वृद्धावस्था में न जोश, न होश। चेहरे पर झुर्रियाँ, माँसपेशियाँ सिकुड़ जाती हैं, बाल काले से सफेद हो जाते हैं, दाँत सब गिर जाते हैं और मुँह पिलपिला हो जाता है, कमर झुक कर टेढ़ी हो जाती है, कान ढीले पड़ कर लटक जाते हैं, पैर निःशक्त बन जाते हैं और दो-चार कदम भी लकड़ी के सहारे से ही चला जा सकता है। ये सब देखकर लगता है कि परिवर्तन संसार का अपरिवर्तनशील नियम है। जन्म के बाद मरण, सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख, धूप के बाद छाँव। सभी परिवर्तन को ही इंगित करते हैं, पर आदत......!

आदत प्रकृति के इस नियम में शायद नहीं आती। तभी तो, एक बार जो आदत पड़ जाती है फिर जीवन भर वह छूट नहीं पाती और कभी-कभी तो जन्म-जन्म तक साथ चली चलती है। क्यों नहीं बदलती आदत? प्रश्न कर रहा हूँ। क्या कहेंगे आप? यहीं कहेंगे कि- ''महाराज! आदत है, ऐसी पीछे लगी है कि छूटती नहीं।'' शराब के लिए कहीं पढ़ा था कि पहले व्यक्ति शराब को पीता है, फिर शराब व्यक्ति को पीने लगती है। पर वह भी छूटती नहीं। शरीर का नाश, धन की बर्बादी, घर-परिवार का सर्वनाश। हो रहा है विनाश व्यसनों के कारण, पर व्यसन छूट नहीं पा रहे हैं। छूट जायें तो जीवन का सुधार हो जाये, विभाव में पड़ा जीव स्वभाव में आ जाये, लेकिन यह कहावत है कि आदत पड़ गई, जावे कोनी।

किसी व्यक्ति को जब गुस्सा आता है, तब वह कुछ न कुछ कह जाता है और कई बार व्यक्ति कुछ गलत भी कर बैठता है। बाद में ख्याल आता है कि यह मैंने क्या किया?

मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था, ऐसा नहीं करना चाहिए था। मन में पश्चात्ताप होता है। कई बार व्यक्ति दुःखी भी बन जाता है। इतना होने पर भी क्या गुस्सा छोड़ देगा वह? नहीं छोड़ा जाता गुस्सा। क्यों नहीं छोड़ा जाता? आदत जो पड़ गई है। कभी ऐसा भी होता है कि सामने जो व्यक्ति है वह आयु में बड़ा है, रिश्ते-नाते से पद में बड़ा है या कोई सम्माननीय, प्रतिष्ठित व्यक्ति है। अब उस पर गुस्सा आता है, पर उसके समक्ष तो गुस्सा प्रकट नहीं किया जा सकता, उसे तो कुछ कहना मुमकिन नहीं हो पाता है। तब क्या होता है? कैसे अंतर के गुस्से को प्रकट किया जाता है? शायद उस समय व्यक्ति बड़बड़ाकर अपने स्वभाव का परिचय दे देता है।

घर में छोटे-छोटे बालगोपाल हैं। व्यक्ति उन्हें खूब प्यार-दुलार करता है, गोदी में लेकर घुमाता है, खेलाता है। इतना स्नेह, इतना अपनत्व हो जाता है कि बालक उसके पास जब भी वह चाहे, हंसता-खिलखिलाता चला आता है। अब जो स्वभाव है वह भला कैसे छूटे? व्यक्ति गुस्से वाला है, अतः कभी गुस्सा आया और सटाक्-सटाक् दो थप्पड़ बालक के गाल पर जड़ दिए। पूछ रहा हूँ आपसे कि फिर क्या होगा? अब वह व्यक्ति बालक को दुलारना चाहे, खिलाना चाहे तो क्या बालक पूर्व की भांति उसके पास चला जायेगा? नहीं! अब वह उस व्यक्ति के पास जाने में हिचकिचायेगा, शायद ही जायेगा।

घर में जिसे पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया, व्यापार करने या नौकरी पर जाने योग्य बनाया, कभी उसे गुस्से में कुछ कह दिया, भला-बुरा, कुछ का कुछ सुना दिया तो क्या होगा? क्या उसे आपका गुस्सा अच्छा लगेगा? वह क्या आपके कहे-सुने को सहन कर लेगा? नहीं कर पायेगा सहन। अप्रिय लगेगी आपकी कही बात उसे। भले ही वह सामने कुछ नहीं बोले, आपको कुछ भी न कहे, पर उसके मन में नाराजगी का भाव उत्पन्न हो जायेगा। जो इज्जत, जो सम्मान उसकी नज़रों में आपके लिए पहले था, वह अब नहीं रहेगा। जो कुछ आपने सुनाया है, वह उसके भीतर में कहीं चुभ रहा होगा। बता रहा हूँ, सुना होगा आपने भी। तीर और तलवार के घाव तो समय व्यतीत होने के साथ भर जाते हैं, पर वचनों के घाव, शब्द-बाण के घाव कभी नहीं भरते। वे इस जन्म में तो हरे रहते ही हैं, पर आने वाले जन्मों तक भी हरे रह सकते हैं। आपने गुस्से में कुछ कहा। परिणाम यह भी हो सकता है कि वह आपका लाल, बुढ़ापे का सहारा घर-बार छोड़कर कहीं अन्यत्र चला जाए। माता-पिता का घर छोड़कर एक नया घर, अपना स्वयं का घर बसाले। होता है ऐसा। कई बार ऐसा होते देखा और सुना गया है। पर क्यों होता है? क्योंकि गुस्से की आदत जो है। आदत ऐसी जो छूटती नहीं, छोड़ी जाती नहीं। कभी आप छोड़ना चाहें पर वह आपको नहीं छोड़ती।

नौकरी करने वाले के लिए यह कहा जाता है कि नौ काम किए, पर एक नहीं किया तो वह 'नहीं' जीवित रहता है। जो पहले किया, उन पर पानी फिर जाता है। माता-पिता तो अपने बच्चों की नौ तरह से क्या, सौ तरह से बल्कि हजार-लाख तरह से सेवा करते हैं, पर फिर भी जब चूक होती है, उबाल आता है, गुस्सा प्रकट होता है तो पिछले सारे किए-कराए पर पानी फिर जाता है। सब व्यर्थ, सारा बेकार चला जाता है। जिसके लिए बहुत कष्ट उठाया। जिसके जीवन का निर्माण किया। जरा-से गुस्से ने उस अपने को पराया बना दिया। इस पर भी माता-पिता कुछ कर नहीं सकते। उन्हें तो जो कुछ हो गया और जो अब हो रहा है उसी में संतोष रखना पड़ता है। गुस्सा उनका स्वभाव है और सहन करना, संतुष्ट रहना उनकी मजबूरी है।

'कोहो पीइं पणासेइ'। क्रोध प्रीति का नाश करता है। लेकिन जहाँ प्रतिष्ठा का प्रश्न मन में आ जाता है वहाँ क्रोध का, मान का उठाव हो ही जाता है। क्रोध-मान आदि में व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा देखता है। यह पुरातन परम्परा कहूँ या अनादि से जीव का स्वभाव, पर सत्य यही है। व्यक्ति को इसी तरह जीवन जीने की आदत-सी पड़ गई है। तीर्थंकर भगवंतों की अनमोल अनुपम वाणी सत्य ही कह रही है कि व्यक्ति जन्म-जन्मान्तर से, अनादिकाल से कषायों व राग-द्वेष में जन्म-मरण करते-करते अपने स्वभाव से विभाव में, 'पर' के प्रभाव में ऐसा रमण कर रहा है कि अब उसे वह 'विभाव' ही अपना स्वभाव लग रहा है। ऐसा कब तक चलेगा? चाहिए कुछ परिवर्तन, कुछ बदलाव, जिससे जीव आत्मधर्म की ओर कदम बढ़ा सके? इसमें अवरोधक बनी हुई है उसकी विभाव में उलझी हुई प्रकृति। जीव जिस दिन 'पर' को भूलेगा, 'पर-पदार्थों' में रमण का त्यागना प्रारम्भ कर देगा, 'स्व' में रमण करने की ओर कदम बढ़ा देगा, वह दिन उसके अध्यात्म विकास का स्वर्णिम दिन बन जायेगा।

पर-पदार्थों के मोहाकर्षण में उलझे जीवात्मा को विभाव से स्वभाव में लाना है। कैसे हो सकेगा यह? आप जिस क्रोधादि-चतुष्क के झूले में प्रतिपल ऊपर-नीचे हो रहे हैं, उसे स्थिर बनाकर कैसे उसे छोड़ना और अहिंसा, सत्य, विनय, सरलता आदि के झूले में सवार होना? जीवन में इस तरह के परिवर्तन हेतु ही ये नित्य प्रातः प्रार्थना, सामायिक-साधना, जप-तप की आराधना, प्रतिक्रमण से दैनिक कार्यालोचना करना आदि आचार्यों ने आपके लिए आवश्यक कर्म निर्धारित किये हैं। आज का युवावर्ग कई बार कहता है- 'महाराज! घर के बड़े-बूढ़े वर्षों से ये दैनिक-कर्म नित्य कर रहे हैं, पर हमारे देखने में तो उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया। न क्रोध कम देखा उनका, न उनका मान घटा। सरलता भी उनमें प्रवेश नहीं कर पाई। लोभ का दामन तो उनका कभी छूटा ही नहीं, मैं उन्हें

कहता हूँ- ''भाई! धैर्य रखो। ये जितने आध्यात्मिक नित्यकर्म हैं, इन्हें सदैव करते रहने के पीछे परिवर्तन की ही भावना है। परिवर्तन होगा, अवश्य होगा। अब तक हुआ नहीं तो अब हो जायेगा। घिसते-घिसते पत्थर भी गोल बन जाता है और महीन, बारीक धूल बनकर तल में बिछ जाता है। यह अध्यात्म-साधना, यह धर्माराधना एक सतत प्रक्रिया है। आज नहीं तो कल, इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में यह जीवात्मा अपने निज स्वभाव में आने को तत्पर बनेगी। आवश्यकता इस बात की है कि हम इनमें लगे रहें, निरन्तर इन धर्म-क्रियाओं को करते रहें। न जाने कब भावों में शुभता, शुभ्रता आ जाए, कब उत्कृष्ट रसायन बन जाए और यह आत्मा महात्मा बनकर परमात्मा बनने के लिए सन्नद्ध हो जाए।''

नियमित प्रार्थना, सामायिक, प्रतिक्रमण की बात रखी जा रही है। तन-मन को जोड़कर नित्य साधना करने के लिए ही वीतराग-वाणी से प्रेरणा की जा रही है। नित्य साधना-आराधना करें, नियमित करें जिससे टूट हुए दिल मिलें और बुझे हुए दीपों में नई रोशनी जगमगाए। आपका मन समर्पणशील है, अतः कैसी भी विषम परिस्थितियाँ आएँ, कितनी ही उलझनें आएँ, आप टूटें नहीं। आपको कहीं भी पश्चात्ताप करने की या अन्तर में दुःख-दर्द अनुभव करने की आवश्यकता नहीं है। आपका अधिकांश समय यदि साधना में लगा रहता है तो जीवन के अंतिम श्वास तक आपके भीतर शांति बनी रहेगी, अन्तरात्मा में अपूर्व संतुष्टि का अहसास होता रहेगा।

संवत् 2022 में आचार्य भगवंत का बालोतरा में चातुर्मास था। संयोग ऐसा था कि उस समय भारत व पाकिस्तान में युद्ध चल रहा था। सेना के बम-वर्षक विमान जोधपुर से बालोतरा होकर निकलते थे। सम्पूर्ण युद्धक्षेत्र में ब्लेक-आॅउट का सरकारी आदेश था। घर या बाहर प्रकाश की एक झलक तक नहीं दिखना चाहिए- ऐसी घोषणा थी। बीड़ी-सिगरेट या अन्य किसी तरह से भी कोई चिंनगारी तक दिखाई देना खतरे को निमन्त्रण देने के बराबर था। रोशनी जहाँ दिखाई देती, दुश्मन देश के विमान बम वर्षा कर सकते थे। प्रत्येक मोहल्ले में घरों के बाहर खाइयाँ खोदी गई थीं। लोग रात-रात भर जाग-जाग कर पहरा देते थे, लेकिन गुप अंधेरे में। अनेक व्यक्ति, बच्चे व बूढ़े, नर व नारी को खाइयों में रातें व्यतीत करने की हिदायत थी।

ऐसे कठिन समय में भी एक बुढ़िया अपने घर के बाहर दरवाजे के पास खाट बिछाकर उस पर आराम से सोती थी। उसकी निश्चिंतता देख सभी आश्चर्य करते थे। एक बार उसे इस तरह निश्चिंत सोते देखकर एक जवान ने उससे प्रश्न किया-''काकी! युद्ध चल रहा है, बमों के धमाके हो रहे हैं। लोग खाइयों में दुबके बैठे हैं और तुम यहाँ खुले में, खाटपर निश्चिंत सो रही हो। क्या तुम्हें मरने का कोई डर नहीं है?''

बुढ़िया ने उस जवान से कहा- ''बेटे! मैं क्यों डरूँ? मैं सो रही हूँ, पर मेरा नाथ (भगवान) तो जग रहा है फिर किस बात का डर? अब रही बात युद्ध की और बमों के बरसने की तो भी क्या? मौत आनी है तो डरना क्यों? मौत नहीं आनी है तो डर के मारे मरना क्यों? मैं यदि युद्ध समाप्ति के बाद भी जीवित रह गई तो आनन्द से भगवान का भजन करूँगी और यदि युद्ध के चलते प्राण निकल गए तो क्या? मर कर जाऊँगी कहाँ? जाना तो अपने कर्मों के अनुसार ही है।''

आप सभी को यही बात ध्यान रखनी है। अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए समता भाव से साधना-आराधना के साथ आगे बढ़ना है। यदि ऐसा करेंगे तो चाहे जैसी परिस्थिति हो, विषम से विषम समय उपस्थित हो जाए, पर आप हर स्थिति में, पल-प्रतिपल शांति व संतोष का अनुभव करेंगे।

स्वामी जी श्री चौथमल जी महाराज कहा करते थे कि ''व्यक्ति के पास धन नहीं होवे तो रोवे के म्हारै धन कोयनी। धन होवे तो यूँ रोवे कि रखूँ कठे, संभालूँ कीकर? लड़को नहीं होवे तो रोवे के लड़को कोनी। लड़को होवे पण कह्या में कोनी रेवे तो यूँ रोवे के मारे कह्या में कोनी।'' दोनों ही हालात में जब रोना ही है तो बजाय रोने के, मन में शांति धारण करना सबसे बेहतर है। इसीलिए बता रहा हूँ कि स्वार्थ की वृत्ति को छोड़ें। परमार्थ को अपने अन्तर में स्थान दें। ऐसा करेंगे तो आत्म-प्रदेशों में समत्व का भाव जागृत होगा। समत्व जग गया तो चेन्नई वाले भी इस छोटे से ग्राम में आकर अध्यात्म-भाव में रमण कर सकेंगे। ऐसा नहीं है तो चाहे जहाँ जायें, चाहे जहाँ बैठें, भले ही वह धर्मसभा ही क्यों न हो, पर अन्दर में धर्म की बात नहीं बन पाएगी। भलाई और कर्त्तव्य-पालन के साथ सन्तोष की वृत्ति रखकर आगे बढ़ेंगे तो सभी का कल्याण संभव है। ▪

जिनवाणी पर अभिमत

डॉ. दिलीप धींग

सितम्बर-2013 के अंक में श्रमणसंघीय महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी 'कुमुद' का लेख 'स्थानकवासी परम्परा की विचारधारा' स्थानकवासी परम्परा तथा जिनशासन के गौरव को अभिवर्द्धित करने वाला है। लेखक ने आगम, दर्शन, इतिहास और परम्परा के आधार पर स्थानकवासी परम्परा की प्रासंगिकता, वैज्ञानिकता और उपादेयता को सरल तथा प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया है। जैनविद्या शोध प्रतिष्ठान, चेन्नई के महासचिव श्री एस.कृष्णचन्दजी चोरड़िया ने भी संपादकीय 'लोभ का विज्ञान', वर्तमान व पूर्व आचार्यप्रवर के प्रवचनों, शोधालेखों, नारी-स्तम्भ आदि पर प्रेरक अभिमत प्रकट किये हैं। आपको तथा आपकी टीम को हार्दिक बधाइयाँ।

प्रवचन

क्रोध-शमन का एक उपाय : मौन

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी

श्री पार्श्वभवन, बीजापुर में 5 नवम्बर 2007 को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन मेहता द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

बन्धुओं !

दीवार से एक ईंट निकाल दें तो दीवार कमजोर हो जाती है। बांध में एक छेद हो जाय तो बाँध में पूरे पानी को रोकने की क्षमता नहीं रहती है। नाव में एक छेद हो जाय तो नाव जो तिराती है, डूबाने वाली बन सकती है। आगमकार कह रहे हैं- भगवान् की वाणी सत्य है, किन्तु जब तक हम उस वाणी पर श्रद्धा नहीं करेंगे तब तक संसार में भटकाव बना रहेगा।

आप में क्रोध है, मान है, माया है, लोभ है तो मानकर चलिये, आप दुःखी हैं। क्रोधादि कषाय दुःख देने वाले हैं, अशांति और असमाधि के कारण हैं। एक तपस्वी साधक को एक क्षण के लिए क्रोध आ जाय तो वह क्रोध मुनिराज का जीवन बर्बाद कर सकता है। ज्ञाताधर्मकथांग में वर्णन आता है कि तपस्या करने वाले महाबल मुनिराज ने माया की तो वे दूसरे भव में तिर्यञ्च बनकर स्त्री परिवार में जन्मे। अहंकार के कारण उन्होंने सारी सम्पत्ति स्वाह कर दी। लोभ के कारण मुम्मण सेठ के क्या हालात हुए मुझे कहने की जरूरत नहीं, आप जानते हैं।

कषाय असमाधि का कारण है। जहाँ क्रोध है वहाँ शांति रहने वाली नहीं। क्रोध पर विजय कैसे प्राप्त की जाय? क्रोध के मुख्यतः चार प्रकार हैं- एक क्रोध ऐसा होता है जो आने के बाद जीवन भर नहीं जाता। पर्वत में दरार पड़ जाय तो वह संधने वाली नहीं है। ऐसे ही अनन्तानुबंधी क्रोध समकित का नाश करने वाला है। अनन्तानुबंधी क्रोध में आयुष्य का बंध हो जाय तो वह नरक में ले जाने वाला है। कई लोग ऐसी गांठ बांधते हैं, जिसमें मरना कबूल कर लेंगे, लेकिन क्षमायाचना नहीं करेंगे। एक क्रोधी भाई से किसी संत ने कहा-क्रोध नरक में ले जाने वाला है, भाई से क्षमा माँग ले। वह बोला- बाबजी! मैं नरक

में जाने के लिए तैयार हूँ, पर उस भाई से क्षमायाचना नहीं करता। ऐसा क्रोध अनन्तानुबंधी है। यह क्रोध का एक भेद है।

क्रोध का दूसरा प्रकार है – अप्रत्याख्यानी। अप्रत्याख्यानी क्रोध तालाब में दरार की भांति बताया गया है। कभी किसी तालाब का पानी सूख जाय तो जमीन में दरारें पड़ जाती हैं। साल भर में जब वर्षा होती है तो तालाब की जमीन पर पड़ी दरारें समाप्त हो जाती हैं। इसी तरह एक भाई दूसरे भाई से साल भर में क्षमायाचना कर ले तो ठीक अन्यथा बिना क्षमायाचना किए आयुष्य बंध हो जाय तो मर कर उसे तिर्यंच योनि में जाना पड़ता है। आपको एक हजार का नहीं, एक लाख का नहीं, एक करोड़ का चैक दिया जाए एवं कहा जाए कि आप कुत्ता बन जाओ, तो आपमें से कोई तैयार नहीं होगा। शास्त्र कह रहा है- एक साल में क्षमायाचना नहीं हुई तो मरकर तिर्यंच योनि में जाना पड़ सकता है।

तीसरा भेद है – प्रत्याख्यानावरण। रेत में लकीर कितने समय तक रहती है? रेत की लकीर हवा का झोंका आया और मिट जाती है। इसी तरह कई कषाय ऐसे होते हैं जो आते तो अवश्य हैं, पर रेत में लकीर की भांति रहते कुछ समय ही हैं। जिस कषाय का उदय होता है उसी कषाय का बंध होता है यह नियम है। कषाय उदय में आ गया तो पन्द्रह दिन में क्षमायाचना हो तो ठीक, अन्यथा न आपका श्रावकपना सुरक्षित है न हमारा साधुपना ही।

चौथा भेद है- संज्वलन। यह जल में लकीर के समान माना गया है। जल में जहाज चलता है एवं आगे-आगे लकीर बनती है, पीछे-पीछे लकीर साफ होती जाती है। ऐसे ही कषाय आया, आने के साथ साधक क्षमायाचना कर लेता है। क्रोध आने पर तुरन्त क्षमायाचना का भाव श्रेष्ठ है। पर आज आप चाहते हैं कि सामने वाला आकर पहले क्षमायाचना करे, मैं बाद में कर लूँगा। सासूजी चाहती हैं पहले बहूजी क्षमायाचना करे और बहूजी सोचती हैं पहले सासूजी क्षमायाचना करें। यह समझ लेना जो कोई क्षमायाचना करता है वह आराधक होता है।

चार प्रकार के व्यक्तियों का मैं आपको थर्मामीटर दे रहा हूँ। आप उत्तम हैं या अधम अथवा अधमाधम आप स्वयं पता कर सकते हैं। उत्तम पुरुष क्रोध आने के साथ क्षमायाचना करता है। आप क्रोध कषाय से पूरी तरह बचे रहें वह तो सर्वश्रेष्ठ है, पर यदि क्रोध आ जाय तो क्रोध आने के साथ क्षमायाचना कर लेनी चाहिये। मध्यम पुरुष एक घंटा गुस्सा रखता है, एक घंटे में आवेग को वह समाप्त कर देता है। तीसरा एक वर्ष गुस्सा रखता है। अधमाधम जीवन पर्यन्त गुस्सा रखता है। आप कौनसे पुरुष बनना चाहते हैं? उत्तम, मध्यम, अधम या अधमाधम। आपका नम्बर किसमें है, आप अपना चिन्तन करना। आप उत्तम या मध्यम पुरुष नहीं बन सको तो अधम और अधमाधम तो मत बनना।

संसार कम करना है तो क्रोध पर नियन्त्रण करो। क्रोध पर कैसे विजय प्राप्त करना? कैसे क्रोध को जीतना ? कल गोचरी जा रहा था। एक भाई कहने लगा - मैं क्रोध को जीतना चाहता हूँ, आप कोई ऐसा मंत्र बताओ, कोई ऐसा जाप बताओ जिसे मैं कर सकूँ। अनेक भाई संतों से मंत्र की मांग करते हैं। क्यों ? वे चाहते हैं कि महाराज जो मंत्र दें, उसे तिजोरी में रख दें और मालामाल हो जाएँ।

एक बहिन हीरे की दुकान पर जाकर कहती है- काँच की चूड़ियाँ दिखाओ। जौहरी कहता है - बाई जी यहाँ हीरे मिलते हैं, काँच की चूड़ियाँ नहीं। जैन संतों के पास आप मंत्र मांगते हैं । यहाँ आकर भी संसार बढ़ाने की मांग करना, भौतिक सामग्री की चाहना करना, क्या हीरे की दुकान से काँच की चूड़ियाँ मांगना नहीं है? आगमवाणी क्रोध जीतने का मंत्र बता रही है। हर आदमी की आदत है - खुद क्रोध करे तो कुछ नहीं, दूसरा कोई गुस्सा करे तो उसे नसीहत देते हैं कि तुम्हें गुस्सा नहीं करना चाहिये। खुद का गुस्सा नहीं दिखता, दूसरे का गुस्सा दिखता है और नसीहत के दो शब्द कहने में भी संकोच नहीं है। आप दूसरों को नहीं, अपने-आपको देखें कि मुझे क्रोध क्यों आता है ? क्या आदमी को क्रोध आने के साथ यह ध्यान में आता है कि गुस्सा करने वाला तिर्यंच गति में जाता है? भगवान् क्रोध-विजय का उपाय बता रहे हैं- **उवसमसारं खु सामन्नं**। क्षमाभाव से क्रोध पर विजय प्राप्त की जा सकती है। ज्ञानियों ने कहा- क्रोध के प्रसंग पर आप मौन धारण कर लें। मौन कर लेगें तो क्रोध काफूर हो जायेगा।

कलह होने पर जितना ज्यादा बोला जायेगा, उतना ज्यादा बिगाड़ होगा। झगड़ा मिटाना है तो मौन कर लें। आज कुछ लोग मौन करते हैं। एक घंटे मौन में भी कुछ लोग कागज पर लिखकर जवाब देते हैं। ऐसा करना वाणी का मौन है, पर मन का मौन नहीं है। मौन में तन-मन और वाणी तीनों का मौन हो।

क्रोध को जीतने का एक मंत्र है-मौन। क्रोध का जब भी आवेग हो, आप मौन धारण कर लें। सामने वाला कितनी देर बोलेगा। उसे आप जबाब नहीं देंगे तो उसे शान्त होना पड़ेगा। कभी आप अजनबी गली- मौहल्ले में चले जाते हैं तो कुत्ते भौंकते हैं। कुत्ता भौंक सकता है, क्या आप भी कुत्ते को देखकर भौंकते हैं ? कुत्ता कभी काट सकता है। आप कुत्ते की पिण्डी नहीं पकड़ते हैं। क्यों ? आप कुत्ता नहीं, आदमी हैं। क्रोध करने वाला कुत्ता बन गया। क्या आप भी कुत्ता बनना चाहोगे ? भाई, क्रोध पर विजय प्राप्त करनी है तो आप मौनव्रत धारण कर लें। मौन से क्रोध शान्त हो जायेगा।

एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। बुढ़िया की उम्र करीब सत्तर वर्ष थी। उसके बाल सफेद हो गये। बुढ़िया को क्रोध आता था। उसे नित्य कोई-न-कोई लड़ने वाला

चाहिये था। वह बुढ़िया चाहे जिस घर में चली जाती और वहाँ जाकर लड़ने लग जाती। वह गालियाँ निकालती, भला-बुरा कहती, लड़ती-झगड़ती। बुढ़िया की आदत से सारे गांव के लोग हैरान-परेशान हो गये।

एक-दो घरों में नहीं, घर-घर में अशांति रहने से गाँव वालों ने बैठकर कर निर्णय लिया कि बुढ़िया के लिए हर दिन का एक घर नियत कर दिया जाए। बुढ़िया नियत घर जाती वहाँ लड़ती। एक दिन एक घर, दूसरे दिन दूसरा घर। एक दिन मदनलाल जी के घर की बारी आई। उनके घर बेटे का विवाह हुआ था, घर में नई-नई बहू आई हुई थी। घर में लड़ाई होगी, तो नई बहू भी देखेगी। नई बहू घर में लड़ाई देखकर कहीं लड़ना न सीख जाय, इसलिए घर की मुखिया सासूजी अड़ौस-पड़ौस वालों के वहाँ गई और निवेदन किया- आज की मेरी बारी आप ले लें, आपकी बारी आयेगी उस दिन मैं बारी ले लूँगी। अभी मेरे घर नई बहू आई है। ये दिन उसके पहनने-ओढ़ने, खाने-पीने के दिन हैं। सासू की बात अड़ौस-पड़ौस वालों ने यह कहकर ठुकरा दी कि बळती लाय घर में कुण घालै।

सासूजी उदास हो गई। नई बहू ने पूछा- क्या बात है? सासू ने कहा- गाँव की लड़ौकड़ी बुढ़िया की आज हमारे घर बारी है, वह आज यहाँ लड़ने आयेगी।

बहू ने कहा-सासूजी ! आप चिंता न करें, मुझे आप दो चीजें लाकर दे दें। ठण्डे पानी की मटकी भर दें और कुण्डे में चने रख दें। बहू आसन जमा कर बैठ गई। सवेरे आठ बजे के लगभग बुढ़िया आई। उसकी आदत थी इसलिए आते ही दो-चार गालियाँ दी, पर बहू ने वापस कुछ नहीं कहा।

बहू ने मौन धारण कर ली। वह चने खाती और बुढ़िया को अंगूठा दिखाती। जैसे बन्दर को बिच्छू खा जाय तो उसकी उछल-कूद का क्या कहना ? बहू चने खाती और बुढ़िया को अंगूठा दिखाती, इससे बुढ़िया का पारा और चढ़ गया। बुढ़िया गालियों पर गालियों की बौछार करने लगी, लेकिन बहू तो एकदम शांत। बुढ़िया गालियाँ देती-देती परेशान हो गई। हैरान बुढ़िया ने पंचों से कहा- मुझे दुबारा यहाँ मत भेजना। यही नहीं बुढ़िया ने जीवन भर के लिए क्रोध का त्याग कर लिया।

आपको क्रोध जीतने का उपाय बताया जा रहा है कि क्रोध का जब भी प्रसंग आए आप मौन धारण कर लें। गाली का जबाब नहीं देंगे तो गाली देने वाला बुढ़िया की तरह से थक जायेगा। यही मंत्र है क्रोध को जीतने का। क्रोध जीतने के और क्या उपाय हैं, समय के साथ रखने की भावना है। आप सुनकर ही न रहें, अपितु क्रोध को वश में करने के लिए मौनव्रत अपनाएं, इसी शुभ भावना के साथ..........।

शोधालेख

जैन प्राकृत साहित्य : एक सर्वेक्षण

प्रो. सागरमल जैन

भारतीय संस्कृति एक समन्वित संस्कृति है। अति प्राचीनकाल से ही इसमें दो धाराएँ प्रवाहित होती रही हैं- वैदिक और श्रमण। यद्यपि ये दो स्वतंत्र धाराएँ मूलतः मानव जीवन के दो पक्षों पर आधारित रही हैं। मानव जीवन विरोधी भावों से पूर्ण है। वासना (जैविक पक्ष/ शरीर) और विवेक (अध्यात्म)- ये दोनों तत्त्व उसमें प्रारम्भ से ही समन्वित हैं। परम्परागत दृष्टि से इन्हें शरीर और आत्मा भी कह सकते हैं। जैसे ये दोनों पक्ष हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करते रहते हैं, वैसे ही ये दोनों संस्कृतियाँ भी एक दूसरे को प्रभावित करती रही हैं। भाषा की दृष्टि से भी ये दोनो संस्कृतियाँ दो भिन्न भाषाओं से पुष्ट होती रही है। जहाँ वैदिक संस्कृति में संस्कृत की प्रधानता रही है, वहीं श्रमण संस्कृति में लोकभाषा या प्राकृत की प्रधानता रही है। आदि काल से ही वैदिक धारा की साहित्यिक गतिविधियाँ संस्कृत केन्द्रित रही हैं। यद्यपि उसमें संस्कृत के तीन रूप पाये जाते हैं- 1. छान्दस (वैदिक), 2. छान्दस प्रभावित संस्कृत और 3. साहित्यिक व्याकरण-परिशुद्ध संस्कृत। छान्दस मूलतः वेदों की भाषा है। ब्राह्मण ग्रंथों पर भी छान्दस का ही अधिक प्रभाव रहा है, किन्तु आरण्यकों और उपनिषदों की भाषा छान्दस प्रभावित व्याकरण से परिमार्जित साहित्यिक संस्कृत रही है। पुराण आदि परवर्ती वैदिक परम्परा का साहित्य व्याकरण परिशुद्ध साहित्यिक संस्कृत में ही देखा जाता है। जबकि श्रमणधारा ने प्रारम्भ से ही लोकभाषा को अपनाया। देश और काल की अपेक्षा से इसके भी अनेक रूप पाये जाते हैं, यथा- मागधी, पाली, पैशाची, अर्द्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री और अपभ्रंश। बौद्धों का परम्परागत त्रिपिटक साहित्य पाली भाषा में है, जो मूलतः मागधी और अर्धमागधी के निकट है। वहीं जैन परम्परा का साहित्य मूलतः अर्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री और अपभ्रंश में पाया जाता है। यहाँ यह ज्ञातव्य है जहाँ जैन धर्म की श्वेताम्बर शाखा का साहित्य अर्धमागधी और महाराष्ट्री प्राकृत में है, वहीं दिगम्बर एवं यापनीय शाखा का साहित्य, शौरसेनी प्राकृत में मिलता है। साथ ही यह भी ध्यातव्य है कि छान्दस, अभिलेखीयप्राकृत, पाली और प्राचीन अर्द्धमागधी एक दूसरे से अधिक दूर भी नहीं हैं। वस्तुतः सुदूर क्षेत्र की भारोपीय वर्ग की सभी भाषाएँ एक दूसरे के निकट ही देखी जाती हैं, आज भी आचारांगसूत्र की प्राचीन प्राकृत में अंग्रेजी के अनेक शब्द रूप देखे जाते हैं, जैसे

बोंदि (Body), एस (As), आउट्टे (Out), चिल्लड़-चिल्ड्रन (Children) आदि।

आज प्राकृत की प्रत्येक संगोष्ठी में यह प्रश्न भी उठाया जाता है कि प्राकृत से संस्कृत बनी या संस्कृत से प्राकृत बनी तथा इनमें कौन कितनी प्राचीन है? जैन परम्परा में ही जहाँ 'नमिसाधु' प्राकृत से संस्कृत के निर्माण की बात कहते हैं, वहीं हेमचन्द्र 'प्रकृतिः संस्कृतम्' कहकर संस्कृत से प्राकृत के विकास को समझाते हैं। यद्यपि यह भ्रान्ति भाषाओं के विकास के इतिहास के अज्ञान के कारण है। सर्वप्रथम हमें बोली और भाषा के अंतर को समझ लेना होगा। प्राकृत अपने आपमें एक बोली भी रही है, और भाषा भी। भाषा का निर्माण बोली को व्याकरण के नियमों में जकड़ कर किया जाता है। अतः यह मानना होगा कि संस्कृत का विकास प्राकृत बोलियों से हुआ है। प्राकृत मूल में भाषा नहीं, अनेक बोलियों के रूप में रही है। इस दृष्टि से प्राकृत बोली के रूप में पहले है, और संस्कृत भाषा उसका संस्कारित रूप है। दूसरी ओर यदि प्राकृतभाषा की दृष्टि से विचार करें, तो प्राकृत भाषाओं का व्याकरण संस्कृत व्याकरण से प्रभावित है, अतः संस्कृत पहले और प्राकृतें (लोकभाषाएँ) परवर्ती हैं। मूल में प्राकृतें अनेक बोलियों से विकसित हुई हैं, अतः वे अनेक हैं। संस्कृत भाषा व्याकरणनिष्ठ होने से परवर्ती काल में एक रूप ही रही है। जैन ग्रंथों में भी प्राकृतों के अनेक रूप पाये जाते हैं, यथा-मागधी, अर्धमागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री और उनसे विकसित अपभ्रंशें। आज जो भी प्राचीन स्तर का जैन साहित्य है, वह सभी इन विविध प्राकृतों में लिखित है। यद्यपि जैनाचार्यों ने ईसा की तीसरी-चौथी शती से संस्कृत भाषा को भी अपनाया और उसमें भी विपुल मात्रा में ग्रंथों की रचना की, फिर भी उनका मूल आगम साहित्य, आगमतुल्य साहित्य और अन्य विविध विधाओं का विपुल साहित्य भी प्राकृत भाषा में ही है।

प्राकृत भाषा में रचित जैन साहित्य में प्राचीनता की अपेक्षा से मुख्यतः आगम साहित्य आता है। आगमों के अतिरिक्त दिगम्बर परम्परा के अनेक आगमतुल्य ग्रंथ भी प्राकृत भाषा में ही रचित हैं। इसके अतिरिक्त जैन कर्मसाहित्य के विविध ग्रंथ भी प्राकृत भाषा में ही मिलते हैं। इनके अतिरिक्त जैन साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा 'कथा-साहित्य' भी प्राकृत भाषा में विपुल रूप में प्राप्त होती है। इनके आचार-व्यवहार, खगोल-भूगोल और ज्योतिष सम्बन्धी कुछ ग्रंथ भी प्राकृत भाषा में ही मिलते हैं। जहाँ तक जैनदर्शन सम्बन्धी ग्रंथों का प्रश्न है, सन्मतितर्क (सम्मइसुत्त), नवतत्त्वपयरण, पंचास्तिकाय जैसे कुछ ही ग्रंथ प्राकृत में मिलते हैं, यद्यपि प्राकृत आगम साहित्य में भी जैनों का दार्शनिक चिन्तन पाया जाता है। इसी क्रम में जैनधर्म के ध्यान और योग सम्बन्धी अनेक ग्रंथ भी प्राकृत भाषा में निबद्ध हैं। प्राकृत साहित्य बहुआयामी है। यदि कालक्रम की दृष्टि से इस पर विचार किया

जाये, तो हमें ज्ञात होता है कि जैनों का प्राकृत भाषा में निबद्ध साहित्य ईसा पूर्व पांचवी शती से लेकर ईसा की 20वीं शती तक लिखा जाता रहा है। इस प्रकार प्राकृत के जैनसाहित्य का इतिहास लगभग ढाई सहस्राब्दी का इतिहास है। अतः यहाँ हमें इन सब पर क्रमिक दृष्टि से विचार करना होगा।

जैन प्राकृत आगम साहित्य

प्राकृत जैन साहित्य के इस सर्वेक्षण में प्राचीनता की दृष्टि से हमें सर्वप्रथम जैन आगम साहित्य पर विचार करना होगा। हमारी दिगम्बर परम्परा आगम साहित्य को विलुप्त मानती है। यह भी सत्य और तथ्य है कि आगम-साहित्य का विपुल अंश और उसके अनेक ग्रंथ आज अनुपलब्ध हैं, किन्तु इस आधार पर यह मान लेना कि आगम साहित्य पूर्णतः विलुप्त हो गया, उचित नहीं होगा। जैनधर्म की यापनीय एवं श्वेताम्बर शाखाएँ आगमों का पूर्ण विलोप नहीं मानती हैं। आज भी आचारांग, सूत्रकृतांग, ऋषिभाषित आदि ग्रंथों में प्राचीन सामग्री अशंतः ही सही, किन्तु उपलब्ध है। आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के अनेक सूत्र और ऋषिभाषित (इसिभासियाइं) इस बात के प्रमाण हैं कि प्राकृत जैन साहित्य औपनिषदिक काल में भी जीवन्त था। यहाँ तक कि आचारांग के प्रथम श्रुतस्कंध के अनेक सूत्र औपनिषदिक सूत्रों से यथावत् समानता रखते हैं। वहीं इसिभासियाइं याज्ञवल्क्य आदि 22 औपनिषदिक ऋषियों, अनेक बौद्धभिक्षुओं जैसे- सारिपुत्त, वज्जीयपुत्त और महाकाश्यप, आजीवक मंखलिगोशाल एवं अन्य विलुप्त प्रायः श्रमणधाराओं के ऋषियों के उपदेशों को प्राचीनतम प्राकृत भाषा में यथार्थ रूप से प्रस्तुत करता है। इसिभासियाइं में 45 ऋषियों के उपदेश संकलित हैं। इनमें मात्र पार्श्व और वर्द्धमान (महावीर) को छोड़कर शेष सभी औपनिषदिक, बौद्ध, आजीवक आदि अन्य श्रमण धाराओं से सम्बन्धित हैं। आश्चर्य यह है कि इनमें से अधिकांश को अर्हत् ऋषि कहकर सम्बोधित किया गया है, जो जैन चिन्तकों की उदारदृष्टि का परिचायक है। ज्ञातव्य है कि यह ग्रंथ जैनधर्म के साम्प्रदायिक घेरे में आबद्ध होने के पूर्व की स्थिति का परिचायक है। ज्ञातव्य है कि जब जैनधर्म साम्प्रदायिक घेरे में आबद्ध होने लगा, तब यह प्राचीनतम प्राकृत का एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ भी उपेक्षा का शिकार हुआ, इसकी विषय-वस्तु को दसवें अंग आगम से हटाकर प्रकीर्णक के रूप में डाला गया। सद्भाग्य यही है कि यह ग्रंथ आज भी अपने वास्तविक स्वरूप में सुरक्षित है। प्राकृत और संस्कृत के विद्वानों से मेरी यह अपेक्षा है कि इस ग्रंथ के माध्यम से भारतीय संस्कृति की उदार और उदात्त दृष्टि को पुनःस्थापित करने का प्रयत्न करें। ज्ञातव्य है कि अन्य जैन आगमों में ऋषिभाषित के अनेक सन्दर्भ आज भी देखे जाते हैं।

जैन आगम साहित्य के वर्गीकरण और संख्या का प्रश्न

जैन आगम साहित्य का वर्गीकरण दो रूपों में पाया जाता है- अंग प्रविष्ट और अंग बाह्य। प्राचीनकाल से श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्परा में आगमों को अंगप्रविष्ट और अंगबाह्य ऐसे दो विभागों में बाँटा जाता है। अंगप्रविष्ट ग्रंथों की संख्या 12 (बारह) मानी गयी है और इनके नामों को लेकर भी दोनों परम्पराओं में कोई मतभेद नहीं है। उन दोनों में बारह अंगों के निम्न नाम भी समान रूप से माने गये हैं- 1. आचारांग, 2. सूत्रकृतांग, 3. स्थानांग, 4. समवायांग, 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवतीसूत्र), 6. ज्ञाताधर्मकथा, 7. उपासकदशा, 8. अन्तकृत्‌दशा, 9. अनुत्तरौपपातिकदशा, 10. प्रश्नव्याकरण, 11. विपाकसूत्र और 12. दृष्टिवाद। दोनो परम्पराएँ इस संबंध में भी एकमत हैं कि वर्तमान में दृष्टिवाद अनुपलब्ध है। यद्यपि दिगम्बर परम्परा यह स्वीकार करती है कि उसके दो आगम तुल्य ग्रंथ हैं, वे दृष्टिवाद के आधार पर निर्मित हुए हैं। अंगबाह्यों के सम्बन्ध में दोनों परम्पराओं में आंशिक एकरूपता और आंशिक मतभेद देखा जाता है। दिगम्बर परम्परा अंग बाह्य की संख्या 14 मानती है, जबकि श्वेताम्बर परम्परा ऐसा कोई स्पष्ट निर्देश नहीं करती है। तत्त्वार्थसूत्र के श्वेताम्बर मान्य स्वोपज्ञ-भाष्य में अंग बाह्य को अनेक प्रकार का कहा गया है। दिगम्बर परम्परा की तत्त्वार्थ की टीकाओं और धवला में 14 अंग बाह्यों के नामों के जो निर्देश उपलब्ध हैं, उनमें उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, कल्प, व्यवहार, कल्पिकाकल्पिक, महाकल्पिक, पुण्डरीक, महापुंडरिक, निशीथ आदि हैं। ज्ञातव्य है कि धवला में अंग बाह्यों के जो 14 नाम गिनाये हैं, उनमें कल्प और व्यवहार भी है। धवला में कप्पाकप्पीय, महाकप्पीय, पुण्डरीक और महापुण्डरिक- ये चार नाम तत्त्वार्थभाष्य की अपेक्षा अधिक हैं और उसमें भाष्य में उल्लिखित दशा और ऋषिभाषित को छोड़ दिया गया है। साथ ही इन नामों में से पुण्डरीक और महापुण्डरीक को छोड़कर शेष सभी ग्रंथ श्वेताम्बर परम्परा में भी मान्य हैं। कल्पाकल्पिक का उल्लेख नन्दीसूत्र में है, किन्तु अब यह ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। शेष सभी ग्रंथ श्वेताम्बर परम्परा में आज भी उपलब्ध माने जाते हैं। श्वेताम्बर परम्परा में सूत्रकृतांग में पुण्डरीक नामक एक अध्ययन भी है।

जहाँ तक आगम साहित्य के वर्गीकरण का प्रश्न है, श्वेताम्बर परम्परा में दो प्रकार के वर्गीकरण उपलब्ध होते हैं- 1. नन्दीसूत्र का प्राचीन वर्गीकरण और 2. जिनप्रभ की 'विधिमार्ग प्रपा' का आधुनिक वर्गीकरण। नन्दीसूत्र का प्राचीन वर्गीकरण लगभग ईसा की पाँचवीं शताब्दी का है, जबकि आधुनिक वर्गीकरण प्रायः ईसा की 13वीं-14वीं शती से प्रचलन में है। नन्दीसूत्र के प्राचीन वर्गीकरण में आगमों को सर्वप्रथम अंगप्रविष्ट और अंग बाह्य, ऐसे पूर्व में प्रचलित दो विभागों में ही बाँटा गया है। किन्तु इसकी विशेषता यह है कि

वह अंगबाह्य ग्रन्थों के प्रथमतः दो विभाग करता है- 1. आवश्यक और 2. आवश्यक व्यतिरिक्त। पुनः आवश्यक के सामायिक आदि छह विभाग किये गये हैं। आवश्यक व्यतिरिक्त को पुनः कालिक और उत्कालिक ऐसे दो विभागों में बाँटा गया है। इसमें कालिक के अंतर्गत 31 ग्रंथ और उत्कालिक के अंतर्गत 29 ग्रंथ हैं। इस प्रकार नन्दी सूत्र में 12 अंगप्रविष्ट, 6 आवश्यक, 31 कालिक और 29 उत्कालिक कुल 78 ग्रंथ उल्लेखित हैं, इनमें से कुछ वर्तमान में अनुपलब्ध भी हैं। पूर्ण सूची इस प्रकार है-

श्रुत (आगम) साहित्य- (क) अंग प्रविष्ट और (ख) अंगबाह्य।

(क) अंग प्रविष्ट- 1. आचारांग, 2. सूत्रकृतांग, 3. स्थानांग, 4. समवायांग, 5. व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती), 6. ज्ञाताधर्मकथा, 7. उपासकदशा, 8. अन्तकृद्दशा, 9. अनुत्तरौपपातिकदशा, 10. प्रश्नव्याकरण, 11. विपाकसूत्र, 12. दृष्टिवाद।

(ख) अंगबाह्य- (अ) आवश्यक और (ब) आवश्यक व्यतिरिक्त।

(अ)आवश्यक- 1. सामायिक, 2. चतुर्विंशतिस्तव, 3. वन्दना, 4. प्रतिक्रमण, 5. कायोत्सर्ग, 6. प्रत्याख्यान।

(ख) आवश्यक व्यतिरिक्त- (अ) कालिक और (ब) उत्कालिक।

(अ)कालिक- 1. उत्तराध्ययन, 2. दशाश्रुतस्कन्ध, 3. कल्प, 4. व्यवहार, 5. निशीथ, 6. महानिशीथ, 7. ऋषिभाषित, 8. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, 9. द्वीपसागर प्रज्ञप्ति, 10. चन्द्रप्रज्ञप्ति, 11. क्षुल्लिकाविमानप्रविभक्ति, 12. महल्लिकाविमानप्रविभक्ति, 13. अंगचूलिका, 14. वग्गचूलिका, 15. विवाहचूलिका, 16. अरुणोपपात, 17. वरुणोपपात, 18. गरुडोपपात, 19. धरणोपपात, 20. वैश्रमणोपपात, 21. वेलन्धरोपपात, 22. देवेन्दोपपात, 23. उत्थानश्रुत, 24. समुत्थानश्रुत, 25. नागपरिज्ञापनिका, 26. निरयावलिका, 27. कल्पिका, 28. कल्लावंतंसिका, 29. पुष्पिता, 30. पुष्पचूलिका, 31. वृष्णिदशा।

(ब) उत्कालिक- 1. दशवैकालिक, 2. कल्पिकाकल्पिक, 3. चुल्लककल्पश्रुत, 4. महाकल्पश्रुत, 5. महानिशीथ, 6. राजप्रश्नीय, 7. जीवाभिगम, 8. प्रज्ञापना, 9. महाप्रज्ञापना, 10. प्रमादाप्रमाद, 11. नन्दी, 12. अनुयोगद्वार, 13. देवेन्द्रस्तव, 14. तन्दुलवैचारिक, 15. चन्द्रवेध्यक, 16. सूर्यप्रज्ञप्ति, 17. पौरुषीमण्डल, 18. मण्डलप्रवेश, 19. विद्याचरण विनिश्चय, 20. गणिविद्या, 21. ध्यानविभक्ति, 22. मरणविभक्ति, 23. आत्मविशोधि, 24. वीतरागश्रुत, 25. संलेखनाश्रुत, 26. विहारकल्प, 27. चरणविधि, 28. आतुरप्रत्याख्यान, 29. महाप्रत्याख्यान।

जहाँ तक श्वेताम्बर-परम्परा में प्रचलित आधुनिक वर्गीकरण का प्रश्न है, उसकी चर्चा के पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि उसकी स्थानकवासी और तेरापंथ की परम्पराएँ मात्र 32 ही आगम मान्य करती हैं। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा में भी दो मान्यताएँ हैं- (1) 45 आगमों की और (2) 84 आगमों की। यहाँ तक यह ज्ञातव्य है कि 84 आगमों की सूची के अंतर्गत 32 और 45 आगमग्रंथ भी सम्मिलित हो जाते हैं। स्थानकवासी एवं तेरापंथी परम्परा 11 अंग, 12 उपांग, 4 छेद, 4 मूल और 1 आवश्यक ऐसे 32 आगम मान्य करती है। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा में भी 11 अंग, 12 उपांग के नाम समान हैं। स्थानकवासी परम्परा द्वारा मान्य 4 मूल में- (1) उत्तराध्ययन और (2) दशवैकालिक दोनों नाम समान हैं। नन्दीसूत्र और अनुयोगद्वार को श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा चूलिका सूत्र में रख देती है। 6 छेद सूत्रों में महानिशीथ और जीतकल्प- ये दो नाम अधिक हैं। चार नाम समान हैं। मूल में नन्दी और अनुयोगद्वार के स्थान पर आवश्यक और पिण्डनिर्युक्ति ये दो नाम आते हैं। 10 प्रकीर्णक स्थानकवासी और तेरापंथी परम्परा को मान्य नहीं हैं। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा द्वारा मान्य 84 आगमों की सूची निम्न है, इसमें बत्तीस और पैंतालीस प्रकार भी समाहित हैं।

84 आगम (श्वेताम्बर सम्मत)

1-11 **ग्यारह अंग-** आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग, व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशांग, अन्तकृद्दशा, अनुत्तरौपपातिक, प्रश्नव्याकरण और विपाक सूत्र।

12-23 **बारह उपांग-** औपपातिक, राजप्रश्नीय, जीवाजीवाभिगम, प्रज्ञापना, सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, कल्पिका, कल्पावंतसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका और वृष्णिदशा। अन्तिम पाँचों का संयुक्तनाम निरयावलिका है।

24-27 चार मूलसूत्र- आवश्यक सूत्र, दशवैकालिक, उत्तराध्ययनानि, पिंड निर्युक्ति (अथवा ओघनिर्युक्ति)

28-29 दो चूलिका सूत्र- नन्दीसूत्र, अनुयोगद्वार।

30-35 छः छेद सूत्र- निशीथ, महानिशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कंध, पंचकल्प (विच्छिन्न)।

36-45 दस प्रकीर्णक-चतुःशरण, आतुरप्रत्याख्यान, भक्तप्ररिज्ञा, तन्दुलवैचारिक, चन्द्रवेध्यक, देवेन्द्रस्तव, गणिविद्या, महाप्रत्याख्यान वीरस्तव संस्तारक। (किसी के मत से 'वीरस्तव' और 'देवेन्द्रस्तव' दोनों का समावेश एक में है और 'संस्तारक' के स्थान में ''मरण समधि'' और 'गच्छाचारपयन्ना'' है।)

46 कल्पसूत्र (पर्युषण कल्प- जिनचरित, स्थविरावलि, सामाचारी)

47 यतिजीतकल्प (सोमप्रभसूरि)

48 श्राद्धजीतकल्प (धर्मघोषसूरि)

49 पाक्षिकसूत्र (आवश्यक सूत्र का अंग है)

50 क्षमापनासूत्र (आवश्यक सूत्र का अंग है)

51 वंदित्तु (आवश्यक सूत्र का अंग है)

52 ऋषिभाषित

53-62 **वीस अन्य पयन्ना (प्रकीर्णक)-** अजीवकल्प, गच्छाचार, मरणसमाधि, सिद्धप्राभृत, तीर्थोद्गारिक, आराधनापताका, द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, ज्योतिषकरण्डक, अंगविद्या, तिथिप्रकीर्णक, पिण्डविशुद्धि, सारावली, पर्यन्ताराधना, जीवविभक्ति, कवच प्रकरण, योनिप्राभृत, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, वृद्धचतुःशरण, जम्बूपयन्ना।

63-83 ग्यारह निर्युक्ति (भद्राबाहुकृत)

आवश्यकनिर्युक्ति, दशवैकालिकनिर्युक्ति, उत्तराध्ययन निर्युक्ति, आचारांग निर्युक्ति, सूत्रकृतांग निर्युक्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति निर्युक्ति (अनुपलब्ध), बृहत्कल्प निर्युक्ति, व्यवहार निर्युक्ति, दशाश्रुतस्कंध निर्युक्ति, ऋषिभाषित निर्युक्ति (अनुपलब्ध), संसक्त निर्युक्ति।

84 विशेषावश्यकभाष्य।

ये 84 आगम ग्रन्थ आज भी उपलब्ध हैं। **(क्रमशः)**

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (मध्यप्रदेश)

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

सहकार	दोष	लाज
अन्य का सहकार यानी स्व का स्व के प्रति उपकार।	पर (दूसरे) पर करना रोष, यानी खाली करना अपने प्रीति (प्रेम) गुण का कोष।	लाज (लज्जा), यह भी है दोषों से बचने का एक एक ईलाज।

-संकलित

शोधालेख

पंच समवाय सिद्धान्त : एक समीक्षा (4)

डॉ. श्वेता जैन

'पंच समवाय' सिद्धान्त की सार्थकता

पंचसमवाय की दार्शनिक व्याख्या का बोध होने के पश्चात् भी जीवन के क्षेत्र में पंचसमवाय की भूमिका को समझना शेष ही रह जाता है। सिद्धान्त ज़ब तक जीवन में प्रायोगिक रूप नहीं लेते तब तक वे मात्र पुस्तकीय ज्ञान या बौद्धिक चर्चा का विषय बनकर रह जाते हैं। "खणं जाणाहि पंडिए" इस आगम वाक्य में काल की कारणता को प्रायोगिक रूप से इस प्रकार समझ सकते हैं- "जो क्षण को जानता है, वह पण्डित है" यहाँ क्षण काल का वाचक है। प्रश्न उपस्थित होता है- कौनसे क्षण को जानता है तो पण्डित होता है? जो हिंसा के क्षण को जानता है, देखता है और हिंसा करने से रुक जाता है, ऐसा व्यक्ति पण्डित कहलाता है। अमृतचन्द्राचार्य 'पुरुषार्थसिद्धयुपाय' में कहते हैं- "अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां अहिंसेति" रागादि का प्रादुर्भाव न होना ही अहिंसा है। सीधा-सीधा अभिप्राय है कि राग-द्वेष का मन में मन उत्पन्न होना ही हिंसा है। वे हिंसा के क्षण कौनसे हैं-

1. कोई बुराई करे तब वह क्षण हिंसा का होता है।
2. कोई बहुत प्रशंसा करे, तब वह क्षण हिंसा का होता है।
3. कोई तिरस्कार करे तो वह क्षण हिंसा का होता है।
4. बीमार होने पर कोई सेवा न करे तब वह क्षण भी हिंसा का होता है।
5. कोई ठगे तब भी वह क्षण हिंसा का होता है।
6. कोई हमारी बात नहीं स्वीकार करे तब भी वह क्षण हिंसा का होता है।

इस तरह के जितने भी क्षण हिंसा के हैं, उन सभी क्षणों में समता भाव रखना ही काल की कारणता को समझते हुए जीना है।

जीवन की समस्याओं में काल की कारणता को व्यक्ति इस प्रकार देखता है कि यह जो समस्या आयी है, यथा- नौकरी नहीं लग रही है, उधारी हो रही है, मेरे मित्र से नहीं बन रही, पत्नी नाराज है, पुत्र मेरे प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करता है- ये सभी काल-परिणमन या परिवर्तन के साथ परिणमित हो जायेंगी अर्थात् बदल जायेंगी। भविष्य में परिवर्तित होने वाली परिस्थितियों के लिए चिन्ता कैसी? यह तो मूर्खता है, मुझे तो सभी के साथ मधुर व्यवहार रखना है। काल की कारणता का इस तरह विचार कर हम अपने व्यवहार को ठीक

रख सकते हैं। सैद्धान्तिक रूप से तो हम मान लेते हैं, सभी द्रव्यों का परिणमन काल से होता है, उसी परिप्रेक्ष्य में हमें यह भी स्वीकार कर लेना चाहिए कि परिस्थितियों में भी परिवर्तन काल से होता है, समय के साथ सब बदलता है। अन्तर इतना ही पड़ता है कि यह परिवर्तन मनोनुकूल हो तो सुख की अनुभूति करवाता है और प्रतिकूल हो तो दुःख का हेतु बनता है।

मन को अनुकूलता और प्रतिकूलता के व्यवहार से निकालकर समता में स्थापित करना पुरुषार्थ है। यह पुरुषार्थ पंचसमवाय में पंचम कारण के रूप में समाहित है। समतामय जीवन के लिए पुरुषार्थ के कई रूप जैनदर्शन में दृष्टिगोचर होते हैं, यथा-संयम, स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग, क्षमाशीलता, अहिंसा-पालन, अपरिग्रह, राग में कमी, द्वेष की न्यूनता आदि। स्वाध्याय पुरुषार्थ की मूलभूत आवश्यकता है। स्वाध्याय का बहुत व्यापक अर्थ है। मात्र पुस्तकें पढ़ना, आगम चितारना आदि ही स्वाध्याय नहीं है। स्व का अध्ययन स्वाध्याय है, इसके लिए स्व का पुनः पुनः निरीक्षण करना होता है- मैं क्या सोचता हूँ, कैसे विचार मेरे भीतर आते हैं और उनका क्या प्रभाव मेरे जीवन पर पड़ता है, विचार कैसे मुझ पर हावी होते हैं। इन सबका अध्ययन स्वाध्याय है। इस आधार पर कृत सभी पुरुषार्थ जीवन को परिवर्तित करने में सहायक होते हैं।

जीवन में परिस्थितियाँ तो दुःख का निमित्त होती हैं, कई बार व्यक्ति का स्वभाव भी कष्ट का कारण होता है। ऐसे में स्वभाव की कारणता पर विचार करना चाहिए। काँटों का स्वभाव चुभना और फूलों का स्वभाव सुगन्ध और कोमलता है। काँटे चुभन देना नहीं छोड़ते, चाहे प्रतिदिन व्यक्ति उनकी पूजा करे या उनसे प्यार करे, दूसरी ओर फूल अपनी सुगन्ध और कोमलता को नहीं त्यागता, चाहे कोई उसे मसले या कीचड़ में फेंक दे। स्वभाव के विपरीत परिस्थितियाँ मिलने पर भी वह नहीं छूटता, ठीक वैसे ही कटु आचरण करने वाले व्यक्ति के प्रति करुणा का भाव लाएँ कि यह इसका स्वभाव है, यह इसे परिवर्तन करने में समर्थ नहीं है और अच्छे स्वभाव वाले व्यक्ति के प्रति प्रमुदित रहें।

व्यक्ति के स्वभाव के पीछे कारणों की खोज करें तो पाते हैं कि पूर्वकृत कर्म-संस्कार से उनका स्वभाव वैसा निर्मित हुआ है। पूर्वकृत कर्म 'पंचसमवाय' का चतुर्थ अंग है। एक ही क्रिया को बार-बार किया जाता है तो उसका अभ्यास बढ़ने लगता है, फलस्वरूप वह आदत बन जाती है। आदत के साथ राग-द्वेष के भाव जुड़कर उसे कर्म-संस्कार में परिवर्तित कर देते हैं। यही संस्कार व्यक्ति के स्वभाव के जनक होते हैं। जैसे- एक व्यक्ति क्रोध करता है, वह बार-बार क्रोध करके अभ्यास बढ़ा लेता है, चाहे कारण कुछ भी रहे हों। पहले क्रोध विशेष कारणों के उपस्थित होने पर आता था, किन्तु अभ्यास से क्रोध की आदत बन जाने से अब क्रोध सामान्य कारणों के होने पर भी प्रकट होने लगता है। कर्म-

संस्कार की दृढ़ता से यह क्रोधी स्वभाव जीव को मृत्यु के पश्चात् नये जन्म में भी प्राप्त होता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति क्रोध की परिस्थितियों में स्वयं को शान्त बनाए रखता है, चाहे वे परिस्थितियाँ स्वदोष से निर्मित हुई हों या निर्दोषता से, शान्ति के अभ्यास से समता के संस्कार नये जन्म में भी उसे विरासत के रूप में मिलते हैं। यही कारण है कि कुछ व्यक्ति स्वभाव से क्रोधी, अहंकारी, लोभी, मायावी, ईर्ष्यालु होते हैं तो कुछ शान्त, विनयी, उदार, सरल एवं प्रेमी होते हैं।

'पंच समवाय' के सिद्धान्त को समझने वाला व्यक्ति इन कारणों की जीवन में अभिव्यक्ति को देखता है तो सम्यक् पुरुषार्थ करने का उसको बल मिलता है। वह चिन्तन करता है- **''कम्मं चिणंति सवसा, तस्सुदयम्मि उ परव्वसा होंति''** अर्थात् कर्म करने में जीव स्वतन्त्र है, किन्तु कर्म के उदयकाल में वह कर्म के अधीन होता है। जीव और कर्म परस्पर अधीन हो सकते हैं। जीव (पुरुष) और कर्म के खेल के बीच काल, स्वभाव और नियति भी अपनी भूमिका अदा करते हैं। काल के परिपक्व होने पर कर्मों का उदय होता है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदना, आयु, मोह आदि स्वभाव वाले कर्म, स्वप्रकृति के अनुरूप जीव के ज्ञान, दर्शन आदि में बाधक होते हैं। कषाय व योग की नियत रूप से उपस्थिति नियति की कारणता की द्योतक है। इस प्रकार जीव काल, स्वभाव और नियति के कारणों को प्राप्त करता हुआ कर्म-बन्ध करता है। बन्धन की इस प्रक्रिया को समझने के बाद यह विचार करना चाहिए कि विश्व की घटनाएँ अपने क्रम से घटित होती रहती हैं। व्यक्ति के नहीं चाहने पर भी जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती हैं। जो व्यक्ति जीवन की अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में इन्हें पुद्गल की परिणति समझकर अप्रभावित, अक्षुभित और अनाहत रहता है, वही साधक चतुर्गति रूप इस संसार से अपनी और दूसरों की रक्षा कर सकता है। संसार की अपनी एक अवस्था और गति है, वह उसी के अनुसार चल रहा है। साधक को उसका ज्ञाता-द्रष्टा तो होना चाहिए, किन्तु उससे प्रभावित नहीं होना चाहिए।

इस तरह द्रष्टा भाव से जीने वाले साधक के लिए पंचसमवाय मुक्ति-प्राप्ति में सहायक होता है। इस सम्बन्ध में मल्लधारी राजशेखरसूरि 'षड्दर्शन समुच्चय' में कहते हैं-

कालस्वभावनियति- चेतनेतरकर्मणाम्।
भवितव्यता पाके, मुक्तिर्भवति नान्यथा।।

काल, स्वभाव, नियति, पुरुषकार और पूर्वकृत शुभाशुभ कर्म-इन पाँच कारणों का योग मिलने पर ही जीव की मुक्ति होती है, इन पाँचों कारणों के बिना मुक्ति नहीं मिलती।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य की सफलता हेतु काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृत कर्म और पुरुषार्थ इन पाँचों का समन्वय अपेक्षित होता है। इनमें से एक के भी कम होने पर कार्य

में सफलता संदिग्ध हो जाती है। व्यक्तिगत जीवन के विकास में भी इन पाँचों कारणों की अपेक्षा रहती है। कोई बालक एम.ए. कक्षा का अध्ययन करना चाहता है तो इसके लिए उसे समुचित आयु की प्राप्ति करना आवश्यक है। चार वर्ष का बालक चाहे तो भी वह एम.ए. की परीक्षा नहीं दे सकता। एम.ए. कक्षा का पाठ्यक्रम दो वर्षो का होता है। अतः उस अध्ययन के लिए काल-कारण की अपेक्षा रहती है। कोई एक क्षण में एम.ए. पाठ्यक्रम का लाख प्रयत्न करने पर भी अध्ययन नहीं कर सकता। इसी प्रकार स्वभाव की कारणता भी वहाँ परिलक्षित होती है। जिस बालक में अध्ययन का स्वभाव होगा अर्थात् अध्ययन के प्रति रुचि होगी, वह ही एम.ए. का अध्ययन करने की योग्यता अर्जित कर सकेगा। अन्यथा वह बी.ए. तक भी नहीं पहुँच सकेगा। नियति की कारणता भी परोक्ष रूप से स्वीकार करनी होगी। क्योंकि अध्ययन की अवधि में या उसके पूर्व कोई ऐसी दुर्घटना हो जाए कि वह अध्ययन के लिए जीवित ही न रहे अथवा अन्य कोई बाधा उत्पन्न हो जाए जिससे उसका अध्ययन पूर्ण न हो सके। इसलिए यह मानना होगा कि भवितव्यता या नियति भी कार्य की सिद्धि में एक कारण है। पूर्वकृत कर्मों के अनुसार फल की प्राप्ति होती है। इसलिए पूर्वकृत कर्म को भी इसमें कारण मानना होगा। यदि प्रगाढ़ ज्ञानावरण कर्म का उदय हुआ तो प्रयत्न करने पर भी वह कुछ सीख नहीं सकेगा तथा ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम उत्तम हुआ तो वह अल्प प्रयत्न से भी विद्याध्ययन करने में सफल हो जाएगा। उपर्युक्त चारों कारणों के होने पर भी यदि छात्र का पुरुषार्थ न हो तो वह सफलता अर्जित नहीं कर सकेगा। वह दत्तचित्त होकर अध्ययन में लगेगा तभी उसे सफलता प्राप्त हो सकेगी। इस प्रकार व्यावहारिक जीवन में अध्ययन का यह उदाहरण पंच समवाय के सिद्धान्त की पुष्टि करता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों में भी इन पाँचों के परस्पर समन्वय से कार्य की सफलता को समझा जा सकता है।

आज अनेक समस्याओं की उत्पत्ति में कलियुग या पंचम आरे को कारण माना जाता है। कभी व्यक्ति के स्वभाव को दोषी ठहराया है, कभी कहा जाता है कि जो होनहार है वह होकर रहती है, कभी अपने पूर्वकृत कर्मों को कोसा जाता है तो कभी दुराचरण रूप पुरुषार्थ या सदाचरण में अपुरुषार्थ को कारण ठहराया जाता है। किन्तु यह भिन्न-भिन्न व्यक्तियों का नय कथन है। सत्यता इनके समन्वय में निहित है।

हरिभद्रसूरि विरचित उपदेशपद पर टीका करते हुए मुनिचन्द्रसूरि बाह्य एवं आभ्यन्तर सभी कार्यों में काल आदि के कलाप अर्थात् समवाय को कारण स्वीकार करते हुए कहते हैं- "ततः सर्वस्मिन्नेव कुम्भाम्भोरुहप्रासादंकुरादौ नारकतिर्यङ्नराम-रभवभाविनि च निःश्रेयसाभ्युदयोपतापहर्षादौ वा बाह्याध्यात्मिकभेदभिन्ने कार्ये न पुनः क्वचिदेव एष कालादिकलापः कारणसमुदायरूपः बुधैः सम्प्रतिप्रवृत्तदुषमातमस्विनीबललब्धोदयकुबोध- तमःपूरापोहदिवाकरा-

कारश्रीसिद्धसेन- दिवाकरप्रभृतिभिः पूर्वसूरिभिः निर्दिष्टो निरूपितो जनकत्वेन जन्महेतुतया यतो वर्तते।''

अर्थात् घट, कमल, प्रासाद, अंकुर आदि बाह्य कार्य हों अथवा नारक, तिर्यक्, मनुष्य या देव भव में होने वाले कार्य हों अथवा निःश्रेयस, अभ्युदय, संताप, हर्ष आदि आभ्यन्तर कार्य हों, सबमें कालादि का कलाप कारण समुदाय के रूप में सिद्धसेन दिवाकर आदि विद्वत्मनीषी पूर्वाचार्यों ने प्रतिपादित किया है। उन्होंने काल आदि कलाप को जनक या हेतु स्वीकार किया है।

इस प्रकार वर्तमान समय में पारिवारिक-समन्वयशीलता, सामाजिक-सुदृढ़ता, पर्यावरण-सुरक्षा, राष्ट्रीयता, साम्प्रदायिक सद्भाव आदि समस्याओं के समाधान में काल का सम्यक् बोध, स्वभाव की पहचान, विवेकपूर्ण पुरुषार्थ, नियम या नियति की मीमांसा, भाग्य के तारतम्य की स्वीकृति- इन पाँचों का समन्वय किया जा सकता है। पंचकारण समवाय का सिद्धान्त व्यक्ति के व्यवहार में सम्यक्त्व का आधान करता है तथा 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' सिद्धान्त को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करता है। यह सिद्धान्त जीवन के प्रति दृष्टिकोणों के नये-नये आयाम प्रकट करता है।

नय और पंच कारण समवाय

सभी कार्य कालजन्य हैं, अन्य किसी कारण की अपेक्षा नहीं है, ऐसा चिन्तन करने वाला व्यक्ति पुरुषार्थहीनता से ग्रसित हो जाता है, जैसे- कोई यह सोच ले कि काल आएगा तो फसल हो जाएगी, अच्छा समय आएगा तो मैं पास हो जाऊँगा, विजयकाल आने पर जीत जायेंगे, पंचम आरा है, अभी तो मोक्ष मिलता ही नहीं तो क्यों मुक्ति के लिए प्रयत्न करें, वैसा काल आएगा तो प्रयास करेंगे- ये सभी विचार जीव को पुरुषार्थ शून्य बना देते हैं। दूसरी ओर यदि काल की कारणता को पूर्णतया नकार दिया जाए तो व्यक्ति अशान्त, व्याकुल एवं पुरुषार्थ में अरुचि वाला हो जाएगा। जैसे कोई यह सोच ले कि काल जैसा कोई कारण नहीं है तो वह बच्चे के पैदा होने के 9 महीने का इंतजार नहीं कर सकता, समय के साथ रुग्णता ठीक होगी, काल के परिपक्व होने पर मुक्ति मिलेगी इसलिए प्रयास करते रहना चाहिए- ऐसा सोचकर धैर्य नहीं रख सकता।

अतः काल की एकान्त कारणता और एकान्त निषेध दोनों ही जीवन में सम्भव नहीं हैं। इसी प्रकार स्वभाव, नियति, पूर्वकृत कर्म और पुरुषार्थ की ऐकान्तिक कारणता और एकान्त निषेध असम्भव है। नय से पाँचों की कारणता को स्वीकार कर जीवन को सुकर एवं संतुलित बनाया जा सकता है। **(क्रमशः)**

-अतिथि व्याख्याता, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज)

कविता

सार्थक जो शिक्षा को कर दे

डॉ. दिलीप धींग

शिक्षा का माहौल ग़ज़ब है, लेकिन न्यून तितिक्षा है।
सार्थक जो शिक्षा को कर दे, उसका आशय दीक्षा है।।

मुनि बनना तो है ही दीक्षा, श्रावक बनना भी दीक्षा है।
असंयम का वर्जन करना, सद्गुण-अर्जन दीक्षा है।
दीक्षा पल-पल विवेक रखना, दीक्षा आत्म-समीक्षा है।
सार्थक जो शिक्षा को कर दे, उसका आशय दीक्षा है।।

जीवन को संस्कारित करना, घट में मैत्री का रस भरना।
प्रेम-अहिंसा के शिखरों से, सहज बहे करुणा का झरना।
करें वही जो हो सर्वोत्तम, जीवन एक परीक्षा है।
सार्थक जो शिक्षा को कर दे, उसका आशय दीक्षा है।।

वेश बदलना वेश छोड़ना, शायद इतना कठिन नहीं है।
इसीलिए दीक्षित होकर भी नज़र व्यर्थ से हटी नहीं है।
रूपान्तरित करे ज़िन्दगी, नाम उसी का दीक्षा है।
सार्थक जो शिक्षा को कर दे, उसका आशय दीक्षा है।।

जो है दीक्षित मुनिजन सज्जन, उनको बारम्बार नमन है।
उन्हें किया नमन फलदायी, वो जीवन गुलजार चमन है।
सघन तिमिर में डूबीं राहें, आलोकित करती दीक्षा है।
सार्थक जो शिक्षा को कर दे, उसका आशय दीक्षा है।।

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहूकारपेट, चेन्नई-600001

शीलं प्रधानं पुरुषे तद् यस्येह प्रणश्यति।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः।। -विदुरनीति

अर्थ- पुरुष में शील ही प्रधान है। जिसका शील नष्ट हो जाता है, इस संसार में उसका जीवन व्यर्थ है तथा धन और बंधुओं से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः84)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा)

जिज्ञासा- मनुष्य के घर में कौन-कौन से जीव आते हैं?

समाधान- मनुष्य के घर में 43 प्रकार के निम्नांकित जीव आते हैं-

1. 1 से 6 नरक तक के	**06 जीव**
2. भवनपति से लेकर सर्वार्थसिद्ध विमान तक के	**27 जीव**
3. पृथ्वी, पानी, वनस्पति के	**03 जीव**
4. विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, संख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के	**05 जीव**
5. असन्नी मनुष्य व संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य के	**02 जीव**
कुल-	**43 जीव**

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जीव के 48 भेदों में से निम्नांकित 5 जीव मनुष्य के घर में नहीं आते हैं- 1. सातवीं नरक के जीव, 2-3. तेऊकाय, वायुकाय के जीव, 4-5. असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंच व असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य अर्थात् तिर्यंच युगलिक व मनुष्य युगलिक। जैसाकि गति-आगति के थोकड़े व प्रज्ञापना सूत्र के छठे पद से स्पष्ट है कि ये पाँचों जीव मरकर मनुष्य में नहीं आ पाते हैं।

जिज्ञासा- मनुष्य के घर में आने वाले जीवों में क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ होती हैं?

समाधान- मनुष्य के घर में आने वाले जीवों में निम्नांकित प्रमुख विशेषताएँ होती हैं-

1. मनुष्य के घर में आने वाला जीव यदि केवली की आगति में से आया हुआ है तो वह उसी भव में भी मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

2. यदि केवली की आगति के भेदों में से नहीं आया है तो वह मनुष्य भव में श्रावक, साधु बन सकता है, उपशम श्रेणि कर सकता है, किन्तु क्षपक श्रेणि करके मोक्ष में नहीं जा सकता।

3. मनुष्य भव में जीव अपर्याप्त अवस्था में विभंगज्ञान, मनःपर्याय ज्ञान, केवल ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, किन्तु पर्याप्त होने के बाद यथावसर प्राप्त कर सकता है।

4. मनुष्य के घर में यदि कोई जीव मनुष्य-तिर्यंच के घरों में से आया है तो अन्तर्मुहूर्त में भी काल कर सकता है। अपर्याप्त अवस्था में भी काल कर सकता है।

5. यदि कोई जीव नारकी-देवता से मनुष्य के घर में आया है तो वह पृथक्त्व मास पूर्ण किये बिना काल नहीं कर सकता। अर्थात् प्रथम नरक तथा भवनपति से दूसरे देवलोक तक के देवों से यदि आया है तो पृथक्त्व मास और यदि दूसरी से छठी नरक, तीसरे देवलोक से सर्वार्थसिद्ध विमान से आया है तो पृथक्त्व वर्ष से पहले वह मनुष्य भव में काल नहीं कर सकता।

6. यदि कोई जीव असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य के रूप में आया है तो वह युगलिक बनेगा तथा कम से कम एक क्रोड़ पूर्व झाझेरी तथा अधिक से अधिक तीन पल्योपम तक की आयु प्राप्त करेगा।

7. क्रोड़ पूर्व झाझेरी से लेकर एक पल्योपम के अन्दर-अन्दर आयुष्य पाने वाले युगलिक नियमा मिथ्यादृष्टि होंगे तथा वे मरकर भवनपति, वाणव्यन्तर तथा ज्योतिषी दोनों में से किसी एक में उत्पन्न होंगे, किन्तु वैमानिक देवों में उत्पन्न नहीं हो सकेंगे।

8. जो एक पल्योपम से लेकर तीन पल्योपम तक की आयु वाले युगलिक मनुष्य के रूप में उत्पन्न होंगे, वे सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि होंगे तथा वे आयु पूर्ण कर भवनपति से लेकर दूसरे देवलोक तक कहीं भी उत्पन्न हो सकेंगे।

9. संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य के रूप में यदि कोई असन्नी जीव आकर उत्पन्न होते हैं, तो वे जघन्य अन्तर्मुहूर्त से लेकर उत्कृष्ट एक क्रोड़ पूर्व तक की आयु प्राप्त कर सकते हैं।

10. युगलिक मनुष्य के रूप में उत्पन्न होने वालों में पहला अथवा

चौथा इन दोनों में से कोई एक गुणस्थान रहेगा, जो जीवन पर्यन्त रहेगा।

11. छप्पन अन्तर्द्वीपज युगलिक मनुष्यों में आने वाले जीव एकान्त मिथ्यादृष्टि ही रहेंगे तथा उनकी आयु भी पल्योपम के असंख्यातवें भाग की रहेगी।

12. संख्यातवर्षायुष्क सन्नी मनुष्य के रूप में उत्पन्न जीवों में किन्हीं-किन्हीं शुक्लपक्षी सम्यग्दृष्टियों में अवधिज्ञान, मनःपर्याय ज्ञान, आहारक लब्धि, वैक्रिय लब्धि, पुलाक लब्धि, यथाख्यात चारित्र, अवेदी, अकषायी, अलेश्यी, अयोगी आदि अति विशिष्ट एवं अति महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ भी प्राप्त हो जाती हैं।

13. यदा-कदा ऐसे ही शुक्लपक्षी जीव संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य के रूप में आकर उत्पन्न होते हैं जो प्रथम बार ही उपशमादि सम्यक्त्व प्राप्त करते हैं तथा वापस मिथ्यात्व में नहीं जाकर क्षयोपशम समकित को प्राप्त कर क्षायिक समकित को प्राप्त कर लेते हैं तथा उसी भव में मोक्ष को प्राप्त कर अपडिवाई सिद्ध बन जाते हैं।

14. संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य के रूप में आकर उत्पन्न होने वाले कोई-कोई जीव लगातार सात भव तक सन्नी मनुष्य बन जाते हैं। अर्थात् वर्तमान भव को मिलाकर कुल आठ बार सन्नी मनुष्य का भव प्राप्त कर लेते हैं। इसी प्रकार असन्नी मनुष्य के रूप में भी लगातार आठ भव प्राप्त कर सकते हैं।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

आयु का क्षण

हमें जो मनुष्य भव प्राप्त हुआ है, वह अत्यन्त मूल्यवान है। उसके एक-एक क्षण का सदुपयोग किया जाए, इसकी प्रेरणा निम्नांकित श्लोक से प्राप्त होती है।

आयुषः क्षणमेकोऽपि, न लभ्यः स्वर्णकोटिभिः।
स वृथा नीयते येन, तस्मै नृपशवे नमः।।

करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं से आयु का एक क्षण भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। अतः जिसके द्वारा वह क्षण व्यर्थ बर्बाद किया जाता है, उस मनुष्य रूपी पशु को नमस्कार है।

परिवार-स्तम्भ

पारिवारिक जीवन की सफलता के सूत्र

प्रो. सुमेरचन्द जैन

वर्तमान जीवन की शैली ने संयुक्त परिवार की प्रथा को तोड़ा है और एकल परिवारों की संस्कृति को जन्म दिया है। जब से गाँवों का शहरों की ओर पलायन शुरू हुआ है, सम्बन्धों का धरातल खिसकता हुआ प्रतीत हो रहा है। पारिवारिक सम्बन्धों में लिज़-लिज़ापन आता जा रहा है। शिक्षा, व्यवसाय, आवास आदि की समस्याओं ने भी बड़े परिवारों के आगे प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया है। एकल परिवारों में संस्कार, संस्कृति और परम्पराओं की विरासत छिन्न-भिन्न हो रही है। वर्तमान युग का ढाँचा उपभोक्ता मूल्यों वाली संस्कृति के आधार पर टिका है। इस युग की जीवनशैली में आवश्यकताओं पर आकांक्षाओं का लबादा डाल दिया है। आवश्यकता और आकांक्षा के बीच कोई भेद रेखा न होने से आम आदमी दिग्भ्रान्त बन रहा है। उसके जीवन में संयम या व्रत की चेतना क्षीण से क्षीणतर हो रही है।

परिवार वह सामाजिक इकाई (संस्था) है जिसका आधार है- प्रेम, सेवा, करुणा और दयालुता। सुन्दर सुखी परिवार समाज में प्रगति, समृद्धि, शान्ति और चैन लाते हैं। परिवार द्वारा जीवन मूल्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है और मनुष्यों को सुसंस्कृत एवं शिष्ट प्राणी का रूप दिया जाता है। विवाह सूत्र में बंधकर ही पुरुष परिवार का निर्माण करते हैं और उनके समागम से एक नये परिवार और एक नई पीढ़ी का जन्म होता है। यह परिवार ही परिजनों की एकसूत्रता का सृजनहार है। परिवार वह संस्था है, जिसके माध्यम से एक पीढ़ी मानव सभ्यता की सेवा के लिए दूसरी पीढ़ी को तैयार करती है। हर पीढ़ी चाहती है कि उसकी अगली पीढ़ी उससे उन्नतर हो।

पारिवारिक जीवन की सफलता के सूत्र

1. सहनशीलता- पारिवारिक जीवन की सफलता का पहला सूत्र है- सहनशीलता। यह परिवार में पारस्परिक सौहार्द और शान्त सहवास का आधार बनता है। समस्या यह है कि आज आदमी एक दूसरे को सहन करना नहीं जानता। उसका दिमाग ही कुछ ऐसा बना हुआ है कि सहन करना बहुत कम जानता है। बड़ों की बात छोड़ दें, दो चार वर्ष का छोटा बच्चा भी सहन करना नहीं जानता। उसके भी मन के प्रतिकूल बात होती है तो वह इतना उबल पड़ता है कि शान्ति भंग हो जाती है। जब तक सहिष्णुता का विकास नहीं होता, तब तक

परिवार में शान्त सहवास की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

आज सहिष्णुता का अर्थ गलत समझ लिया गया है, सहिष्णुता का अर्थ न कायरता है, न कमजोरी और न दब्बूपन। सहिष्णुता महती शक्ति है। बहुत शक्तिशाली व्यक्ति ही सहिष्णु हो सकता है। कमजोर आदमी कभी सहिष्णु नहीं हो सकता। कमजोर सहन नहीं कर सकता। सहन करने का मतलब है शक्ति का विकास, शौर्य और पराक्रम का विकास। किसी ने ठीक कहा है-

काँच कथीर अधीर नर, कस्यां न उपजे प्रेम।
कसनी तो धीरा सहे, के हीरा के हेम।।

एक प्रसिद्ध कहानी है महात्मा कबीर की। वे गृहस्थ वेश में भी संत थे। लोग उनसे पारिवारिक जीवन हेतु परामर्श और मार्गदर्शन लिया करते थे। एक दिन एक युवक कबीर के पास आया और बोला- 'आप बताएँ कि मैं शादी करूँ या न करूँ।"

कबीर ने तत्काल उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। उसे अपने पास बैठाया और उससे घर-परिवार की बातें की। कुछ देर बाद उन्होंने अपनी पत्नी को आवाज देकर कहा- 'लालटेन लाओ।'

कबीर की पत्नी घर के भीतर गयी और लालटेन जलाकर ले आई। कबीर ने उसे सामने रख दिया। फिर कहा- 'यह हमारा अतिथि है, इसे दूध पिलाओ।'

कबीर की पत्नी गयी और दो गिलास दूध लेकर आई। कबीर ने एक गिलास स्वयं लिया और दूसरा उस युवक को दे दिया। गिलास से दूध का पहला घूंट कबीर ने लिया और बोल उठे- 'वाह कितना बढ़िया और मीठा दूध है।" तभी युवक ने गिलास मुँह से लगाया और पहला घूँट मुँह में लेते ही कड़वाहट से थूक दिया। वह एकटक आश्चर्य से कबीर को देखने लगा। कबीर ने पूछा- 'क्या बात है? तुम्हारे चेहरे पर नाराजगी का भाव क्यों?'

युवक ने कहा- 'माफ करना कबीरजी, मैं आपके पास आया था एक जरूरी परामर्श लेने। लोग कहते हैं कि आप बड़े ज्ञानी हैं, लेकिन मुझे तो आप दोनों पति-पत्नी कुछ सिरफिरे से लगते हो। आपकी पत्नी दिन के प्रकाश में लालटेन जला रही है और आप खारे और नमकीन दूध को मीठा बता रहे हैं।'

कबीर ने कहा- 'यह है तुम्हारे लिए मेरा परामर्श, पति-पत्नी एक दूसरे को सहन करने में समर्थ हैं तो विवाह करें। मैंने दिन में लालटेन मंगाई तो पत्नी ने एक शब्द भी नहीं पूछा कि दिन के उजाले में लालटेन का क्या करोगे? पत्नी ने दूध में नमक डालकर दे दिया तो मैंने उसे सहन कर लिया और एक शब्द भी नहीं कहा कि दूध में क्या मिलाकर लाई हो? हम दोनों एक दूसरे को सहते हैं, इसलिए जीवन की गाड़ी पटरी पर चल रही है। तुम भी अगर

स्वयं को इतना सहिष्णु मानते हो तो शादी करो।

स्पष्ट है कि सुखी, सफल और सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक जीवन का बड़ा सूत्र है सहिष्णुता। यदि परिवार के सभी सदस्य शान्ति, समता और सहनशीलता का विकास कर लें तो जीवन शांतिपूर्ण रहेगा अन्यथा जीवन भर परिवार में कलह चलता रहेगा।

2. **स्नेहशीलता**- पारिवारिक जीवन की सफलता का एक और सूत्र है स्नेहशीलता। अंग्रेजी शब्द Family के एक-एक अक्षर का विन्यास इस प्रकार किया जा सकता है-

Father **a**nd **M**other **I** **L**ove **Y**ou

पारिवारिक जीवन सम्बन्धों का जीवन है। यह सम्बन्ध स्नेह के धागे, वात्सल्य के सूत्र और प्रेम के अनुबन्ध से बन्धा है। परिवार में स्नेहशीलता तभी बनी रह सकती है जब मृदुता के भाव का विकास हो। अहंकार नहीं है तो सम्बन्ध अच्छे चलते हैं। अहंकार होते ही सम्बन्धों में कटुता शुरू हो जाती है। परिवार का मुखिया यदि अपने परिवार के सदस्यों की बात को सुनना नहीं चाहता, उनकी उपेक्षा करता है तो सम्बन्धों में बिगाड़ पैदा हो जाता है।

पारिवारिक जीवन में स्नेहशीलता बनाए रखने का एक अहिंसात्मक उपाय है ऋजुता और मृदुता। छोटे से छोटे सदस्य की बात को भी ध्यान से सुनना और उसे समाहित और सन्तुष्ट करना। जहाँ ऐसा होता है वहाँ सम्बन्धों में मिठास रहती है, कड़वाहट नहीं आती, स्नेहशीलता के लिए आवश्यक है- 'संवेदनशीलता, संविभाग, मृदुता और अहंकार-मुक्ति। अहंकार बहुत बड़ी भूमिका निभाता है सम्बन्ध विच्छेद में और विभाजन में। यह आदमी को पूरी तरह उद्विग्न बना देता है। मगर हम चाहते हैं कि हमारे पारिवारिक सम्बन्धों में कभी कटुता न आए, वे मधुर रहें तो विनम्रता का विकास करना जरूरी है।

3. **श्रमशीलता**- पारिवारिक जीवन की सफलता का एक और सूत्र है श्रमशीलता। पसीने से पवित्र क्या होगा? जिस ललाट पर वह झलकता है, उसे समुन्नत बना देता है। जिस भूमि पर गिरता है, वह भूमि मधुवन में बदल जाती है। श्रम सुखद है, शुभ है, श्रेय है। सभी सिद्धियाँ श्रम केन्द्र की परिधि में चक्कर काटती हैं।

श्रम की मनोवृत्ति के साथ-साथ आज श्रम को हेय समझने की मनोवृत्ति का भी इतना विकास हो गया है कि अपने आपको सभ्य मानने वाला मनुष्य जरा सा काम करते हुए भी हिचकिचाता है। ऐसी स्थिति में हमें फिर से मुड़कर देखना होगा। ऐसा नहीं है कि आदमी विज्ञान की उपलब्धियों को अनदेखा कर दे। पर यदि उसे आनन्दपूर्ण जीवन जीना है और दूसरों के आनन्द को नहीं छीनना है तो यह आवश्यक है कि वह स्वयं श्रम से जी न चुराये।

परिवार के सभी सदस्यों को आवश्यकतानुसार एवं अपनी सामर्थ्य के अनुसार श्रम करना आवश्यक है। सबसे बड़ी बात यह है कि परिवार का कोई भी सदस्य श्रम को हेय न

समझे।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पारिवारिक जीवन की सफलता और सम्बन्धों की मधुरता का आधार है- स्नेह, सौजन्य, सहिष्णुता, त्याग, बलिदान और श्रमशीलता। जहाँ व्यक्तिगत सुख-सुविधा और भोगविलास की मनोवृत्ति विकसित होने लगती है, वहाँ स्नेह, सृजनता और आत्मीयता के स्रोत सूख जाते हैं। परस्परता का मूल है ममता और मानवता। लगता है आज इन दोनों का स्थान ले लिया है- सत्ता और महत्ता ने।

यही कारण है कि आज जहाँ कहीं देखो पारस्परिक सम्बन्ध तो सेके हुए पापड़ जैसे हो रहे हैं, जो जरा सी फूँक मारो या हल्की सी टकराहट हो तो चरमरा उठते हैं, चूर-चूर हो जाते हैं। लगता है कि पश्चिम की यह आँधी भारत में और तेज गति से बढ़ रही है। यहाँ भी बुजुर्ग और युवा पीढ़ी के बीच स्नेह और सम्मान के पारस्परिक मूल्य समाप्त हो रहे हैं। वैचारिक दूरियाँ बढ़ रही हैं। व्यवहारों में कटुता पनप रही है। इसको मात्र 'जनरेशन गैप' मानकर उपेक्षित नहीं किया जा सकता। यदि ये सम्बन्ध और बिगड़े तो भारत के लिए महासंकट पैदा हो जायेगा। *-10, इंडस्ट्रियल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर-334001 (राज.)*

जिनेन्द्र दोहे

उपप्रवर्तक जिनेन्द्र मुनि जी 'काव्यतीर्थ'

सारतत्त्व संसार में, क्या है सोच विचार।
पाप तजो प्रभु को भजो, यही जगत् का सार।।
श्रद्धा भक्ति भावना से, कर पर-उपकार।
छल प्रपंच को छोड़ दे, होगा बेड़ा पार।।
धर्म लाभ लेते रहो, करो सदा शुभ काम।
पीड़ित जन जो भी मिले, कर सेवा निष्काम।।
निन्दा, ईर्ष्या, द्वेष है, आत्मा के अवरोध।
आत्म-सिद्धि यदि चाहिये, तो करले निज शोध।।
धर्म ज्ञान संस्कार के, जला दीजिये दीप।
आलोकित जीवन बने, शिव पथ दिखे समीप।।
भला सभी का सोचना, बोले श्रेष्ठ विचार।
स्व-पर हित तन से करे, यही धर्म व्यवहार।।
भव-बन्धन से मुक्ति का, दे दो शुभ वरदान।
'जिनेन्द्र' मंगल प्रार्थना, स्वीकारो भगवान।।

-गणेश विहार, सेक्टर 11, उदयपुर (राज.)

युवा-स्तम्भ

वचनों को संभालो

श्री पारसमल संकलेचा

'वचन' शब्द छोटा है, पर बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसमें दुनियाँ को हिला देने की ताकत है। जिसके पास वाणी का माधुर्य और बुद्धि का चातुर्य है, वह जीवन में निश्चित सफलता प्राप्त करता है। शब्दों पर कार्य की सिद्धि निर्भर होती है। मधुर वचनों से न होने वाले काम भी हो जाते हैं, बिगड़ी बात भी बन जाती है और कटु वचनों के प्रयोग से काम होने से तो रहे, बने बनाए काम भी बिगड़ जाते हैं।

शब्द संभालकर बोलिए, शब्द के हाथ न पाँव।
एक शब्द करे औषधि, एक शब्द करे घाव।।

शब्दों में वह जादू है कि मधुर वचन औषधि का काम करते हैं, मरहम का काम करते हैं और कटु वचन जख्म देने का। लाठी से तो केवल हड्डी-पसली ही टूटती है, पर कठोर वचनों से दिल टूट जाते हैं। दिलों को तोड़ना आसान है, पर दिलों को जोड़ना बड़ा ही मुश्किल है। इस जिह्वा के कारण ही मनमुटाव हो जाता है, स्नेह-संबंधों में दरार आ जाती है, जिंदगी में ज़हर घुल जाता है। शब्दों के कारण ही झगड़े-दंगा-फसाद हो जाते हैं। अनर्थ हो जाता है, शब्द कई बार विध्वंसक बन जाते हैं। कटु वचनों का प्रहार वज्र प्रहार से भी भयंकर होता है। द्रौपदी के एक वाक्य से महाभारत का युद्ध छिड़ गया। इसलिए वचन-व्यवहार में विवेक बहुत आवश्यक है। पुष्पमुनि ने अपने भजन द्वारा समझाया है-

यदि सत्य-मधुर ना बोल सको तो, झूठ-कठोर भी मत बोलो।
मौन रहो सब से अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो।
बोलो तो पहले तुम तोलो, फिर मुख का ताला खोलो।।

भले ही आप दिखने में कितने ही सुंदर हों, पर वाणी में मधुरता नहीं तो सुंदरता का कोई अर्थ नहीं रहता और यदि आप कुरूप हों और वाणी में मिठास है तो आपकी कीमत है। तन की सुंदरता का बखान सीमित क्षेत्र में होता है, पर वचनों की सुंदरता विश्व-वंदनीय बना देती है। हरिकेशी मुनि एवं अष्टावक्र दिखने में भले ही सुंदर नहीं थे, पर वाणी के कारण पूजनीय बन गये। वाणी ही व्यक्तित्व का दर्पण है। वचनों से व्यक्ति की पहचान हो जाती है, स्वभाव-कुल-श्रेष्ठता का परिचय हो जाता है। एक बार का प्रसंग, राजा की सवारी रास्ते से निकल रही थी। रास्ते में एक नेत्रहीन व्यक्ति खड़ा था। राजा की सेना में से एक व्यक्ति ने उस नेत्रहीन व्यक्ति से कहा- "ऐ अंधे! रास्ता छोड़।" उस व्यक्ति ने जवाब में कह दिया-

"हाँ रे पाजी हटता हूँ।" प्राजी अर्थात् सिपाही। हटने में विलंब हुआ तब दूसरे व्यक्ति ने कह दिया- "सूरदासजी! रास्ता छोड़ोगे?" जवाब मिला- "हाँ प्रधान जी!" तब तक स्वयं राजा उस नेत्रहीन के समीप आ गये, और कहा- "प्रज्ञाचक्षु! रास्ता देने की कृपा करोगे?" जवाब आया- "जी, राजन्!" यह कहते हुआ उस व्यक्ति ने रास्ता छोड़ दिया। राजा को आश्चर्य हुआ कि यह व्यक्ति तो देख नहीं सकता, फिर इसने सबको कैसे पहचाना। राजा के पूछने पर उस व्यक्ति ने जवाब दिया- "राजन्! शब्द ही से मैं पहचान गया, मुझे अंधा कहने वाला, पाजी नहीं तो और कौन हो सकता है। और प्रधानजी ने तो मुझे सूरदास कहा और आप की बात ही क्या! आपने मुझे 'प्रज्ञाचक्षु' कहकर सम्मान दिया। मेरे दिल में आप बस गये। आपके मीठे वचनों से मैंने जान लिया कि आप राजा ही हो।"

हमें भी अपने वचनों को संभालना है। आदमी दो बातें हमेशा याद रखता है-"सोरो जिमाएडो ने दोरो बोलोड्यो" अर्थात् किसी ने अच्छा भोजन कराया तो वह याद रहता है और किसी ने कटु वचन बोला तो वह भी याद रहता है। एक बार व्यक्ति किसी की मारी हुई थप्पड़, लाठी की मार भी भूल जाता है, पर शब्दों की मार जिंदगी भर नहीं भूल पाता। इसलिए हर शब्द तौल-नाप कर बोलना चाहिए। बोलने के बाद विचार करने की नौबत न आये इसलिए बोलने से पहले ही विचार करो। कमान से निकला तीर और जिह्वा से निकले वचन लौटते नहीं हैं। कटु वचन सीधे दिल पर प्रहार करते हैं। जिस प्रकार तीर चलाने वाले को तीर से हुए घाव का पता नहीं चलता है, पता तो उसे चलता है जिसके हृदय को वह तीर छेदता है, इसलिए दर्द तो उसे होता है, जिस पर वचनों द्वारा आघात किया गया है।

जिह्वा को संभालना बड़ा मुश्किल है। नासिका, आँखें, कान ये इंद्रियाँ दो-दो हैं, पर इनका काम एक-एक है; आँख का देखना, नासिका का सूँघना, कान का सुनना, पर जिह्वा एक है और काम दो करती है- खाने का और बोलने का। रास्ता 'वन-वे' और ट्राफिक 'टू वे' है, इसलिए हादसे की संभावना अधिक रहती है। यह जबान थोड़ी भी फिसली तो कपाल पर जूती पड़ जाती है, रहीमजी ने भी कहा है-

रहिमन जिह्वा बावरी, कह गयी सरग-पाताल।
आप हु कह भीतर गई, जूती खाय कपाल।।

जिह्वा कोमल है, बत्तीस दाँतों के अंदर अकेली है, दाँत तो कठोर हैं, फिर भी जिह्वा को दाँतों से खतरा नहीं, पर जिह्वा के कारण दाँतों पर कड़ा आघात हो सकता है। दाँत ने जिह्वा से कहा-

जिह्वा संभलकर रहना, लेंगे तुझे चबाय।
देखना हम बत्तीस हैं, तू है अकेली मांय।।

जिह्वा ने दाँतों से कहा-

जानती तुम बत्तीस हो, अकेली बीच मांय।
थोड़ा जो टेढ़ा चलूँ, हाथ बत्तीसी आय।।

अर्थात् जिह्वा को संभालेंगे तो ही जीवन में सुरक्षा बनी रहेगी।

-शिरपुर (महा.)

दें नैतिक शिक्षा और सुसंस्कार

श्रीमती रेनू सिरोया 'कुमुदिनी'

आज के आपाधापी के इस दौर में विश्वास को तोड़ती घटनाएँ हमें अन्दर तक हिला देती हैं। घटती आत्मीयता और बढ़ते अपराधों का आखिर क्या समाधान है। आखिर कोई किसी को कैसे अपना कहे ? जब अपनत्व की भावना ही नहीं रही। रिश्तों में मिठास ही नहीं रही। जो रिश्ते प्यार, विश्वास और समर्पण की नींव पर रखे जाते थे, वे आज दरकने लगे हैं। यदि यही विश्वास छलने लगे तो किस पर विश्वास किया जाए। यह हम सबके सामने सबसे बड़ा सवाल है। हर रोज समाचार पत्रों में, टी.वी. चैनल्स में अपराध के समाचार मन को झकझोर देते हैं। अन्तर्मन को हिला देते हैं। मन के विश्वास की नाव यह सब सुनकर डगमगाने लगती है। अफसोस तो तब होता है जब आपसी खून के रिश्ते ही छलने लग जाते हैं। आत्मीयता खत्म हो जाती है तो आत्मा और मन भी चोटिल हो जाते हैं। आज हर ओर स्वार्थपरता की चादर चढ़ी हुई है। धन और दौलत का नशा आदमी के सिर चढ़कर बोल रहा है। स्वार्थ का संक्रामक रोग रिश्तों की जड़ों तक फैल चुका है।

संसार नश्वर है और सबको खाली हाथ जाना है। यह जानते हुए भी हर कोई बेधड़क अपराध में, गलत कर्मों में संलग्न है। आज वफादारी से रिश्ते निभाना जरूरी है। कर्त्तव्यों के प्रति समर्पण जरूरी है। आपस में आत्मीयता और बंधुत्व की भावना की आवश्यकता है। यदि ऐसा हो तो धरती पर स्वर्ग की कल्पना की जा सकती है। दरअसल हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। व्यक्ति भी सदैव सकारात्मक और नकारात्मक सोच को साथ लिए चलता है। दोनों की मात्राएँ भी घटती-बढ़ती रहती हैं। हमें आज सच्चाई और अच्छाई के मार्ग की जरूरत है। आवश्यकता केवल अच्छे विचार को आत्मसात् करने की है। आज नैतिक शिक्षा और संस्कार बहुत पीछे छूट गए हैं। हमें अपने बच्चों को नैतिक शिक्षा और अच्छे संस्कार देने चाहिए ताकि हम एक बेहतर भविष्य और बेहतर देश का निर्माण कर सकें।

-उदयपुर (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

इलास्टिक डोरी द्वारा रोगों का सरल उपचार

डॉ. चंचलमल चोरडिया

मानव शरीर दुनियां की सर्वश्रेष्ठ मशीन होती है, जिसमें शरीर को स्वयं स्वस्थ रखने की क्षमता होती है। हमें चिन्तन करना होगा कि जो शरीर अपनी कोशिका, रक्त, मांस, मज्जा, हड्डी, चर्बी, वीर्य आदि अवयवों का निर्माण स्वयं करता है, ऐसे स्वचालित, स्वनिर्मित, स्वनियन्त्रित शरीर में स्वयं के रोग को दूर करने की क्षमता न हो, कैसे संभव है?

रोग का शारीरिक लक्षणों पर आधारित निदान अपूर्ण

हमारे शरीर में प्रायः सैकड़ों रोग होते हैं, जिनकी उपस्थिति का हमें आभास तक नहीं होता है। हम तब तक रोग को रोग नहीं मानते, जब तक उनके लक्षण स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं हो जाते या हमें परेशान करने नहीं लग जाते अथवा रोग हमारी सहनशक्ति से परे नहीं होने लगता है। रोग के जो लक्षण बाह्य रूप से प्रकट होते हैं, अथवा पेथालोजिकल टेस्टों एवं यंत्रों की पकड़ में आते हैं, वे लक्षण तो सामान्य ही होते हैं, जिनके आधार पर प्रायः रोगों का नामकरण किया जाता है।

शरीर में जितने रोग अथवा उनके कारण होते हैं उतने हमारे ध्यान में नहीं आते। जितने ध्यान में आते हैं, उतने हम अभिव्यक्त नहीं कर सकते। जितने रोगों को अभिव्यक्त कर पाते हैं, वे सारे के सारे चिकित्सक अथवा अति आधुनिक समझी जाने वाली मशीनों की पकड़ में नहीं आते। जितने लक्षण स्पष्ट रूप से उनकी समझ में आते हैं, उन सभी का वे उपचार नहीं कर पाते। परिणाम स्वरूप जो लक्षण स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं, उनके अनुसार आज रोगों का नामकरण किया जा रहा है, तथा अधिकांश प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों का ध्येय उन लक्षणों को दूर कर रोगों से राहत पहुंचाने मात्र का होता है। विभिन्न चिकित्सा पद्धतियां और उनमें कार्यरत चिकित्सक आज असाध्य एवं संक्रामक रोगों के उपचार के जो बड़े-बड़े दावे और विज्ञापन करते हैं, वे कितने भ्रामक एवं अस्थायी होते हैं, जिन पर पूर्वाग्रह छोड़कर सम्यक् चिंतन करना आवश्यक है। जब निदान ही अधूरा या अपूर्ण हो तब प्रभावशाली उपचार के दावे छलावा नहीं तो क्या हैं? जनतंत्र में सहयोगियों को अलग किये बिना जिस प्रकार नेता को नहीं हटाया जा सकता, सेना को जीते बिना सेनापति को कैद नहीं किया जा सकता, ठीक उसी प्रकार सहयोगी रोगों की उपेक्षा कर शरीर को पूर्ण रूप से रोग मुक्त नहीं रखा जा सकता। यह सनातन सत्य है तथा उसको नकारने एवं उपेक्षा करने

वाली चिकित्सा आंशिक, अधूरी एवं अस्थायी ही होती है।

निदान एवं उपचार के विभिन्न सिद्धान्त

रोग की अवस्था में आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार शरीर में वात, पित्त और कफ का असन्तुलन होने लगता है। आधुनिक चिकित्सक को मल, मूत्र, रक्त आदि के परीक्षणों में रोग के लक्षण और शरीर में रोग के कीटाणु तथा वायरस दृष्टिगत होने लगते हैं। प्राकृतिक चिकित्सक ऐसी स्थिति से शरीर के निर्माण में सहयोगी पंच तत्त्व-पृथ्वी, पानी, हवा, अग्नि और आकाश का असन्तुलन अनुभव करते हैं। चीनी एक्यूपंक्चर एवं एक्यूप्रेशर के विशेषज्ञों के अनुसार शरीर में यिन-यांग का असंतुलन हो जाता है। एक्यूप्रेशर के प्रतिवेदन बिन्दुओं की मान्यता वाले थेरेपिस्टों को व्यक्ति की हथेली और पगथली में विजातीय तत्त्वों का जमाव प्रतीत होने लगता है। सुजोक बायल मेरेडियन सिद्धान्तानुसार रोगी के शरीर में पंच ऊर्जाओं (वायु, गर्मी, ठण्डक, नमी और शुष्कता) का आवश्यक सन्तुलन बिगड़ने लगता है। चुम्बकीय चिकित्सक शरीर में चुम्बकीय ऊर्जा का असन्तुलन अनुभव करते हैं। ज्योतिषशास्त्री ऐसी परिस्थिति का कारण प्रतिकूल ग्रहों का प्रभाव बतलाते हैं। आध्यात्मिक योगी ऐसी अवस्था का कारण पूर्वार्जित अशुभ असाता वेदनीय कर्मों का उदय मानते हैं। होम्योपैथ और बायोकेमिस्ट की मान्यतानुसार शरीर में आवश्यक रासायनिक तत्त्वों का अनुपात बिगड़ने से ऐसी स्थिति उत्पन्न होने लगती है। आहार विशेषज्ञ शरीर में पौष्टिक तत्त्वों का अभाव बतलाते हैं। शरीर में अम्ल-क्षार, ताप-ठण्डक का असन्तुलन बढ़ने लगता है। कहने का आशय यही है कि विभिन्न चिकित्सा पद्धतियाँ अपने-अपने सिद्धान्तों के अनुसार शरीर में इन विकारों की उपस्थिति को रोग अथवा अस्वस्थता का कारण मानते हैं। जो जैसा कारण बतलाता है, उसी के अनुरूप उपचार और परहेज रखने का परामर्श देते हैं। सभी को आंशिक सफलताएँ भी प्राप्त हो रही हैं तथा सफलताओं एवं अच्छे परिणामों के लम्बे-लम्बे दावे अपनी-अपनी चिकित्सा पद्धतियों के सुनने को मिल रहे हैं। विज्ञान के इस युग में किसी पद्धति को बिना सोचे-समझे अवैज्ञानिक मानना, न्याय-संगत नहीं कहा जा सकता।

आज उपचार के नाम पर रोग के कारणों को दूर करने के बजाय अपने-अपने सिद्धान्तों के आधार पर रोग के लक्षण मिटाने का प्रयास हो रहा है। उपचार में समग्र दृष्टिकोण का अभाव होने से तथा रोग का कारण पता लगाये बिना उपचार किया जा रहा है। अर्थात् रोग से राहत ही उपचार का लक्ष्य बनता जा रहा है।

सम्पूर्ण निदान की प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति एक्यूप्रेशर

सुजोक और रिफ्लेक्सोलॉजी एक्यूप्रेशर के सिद्धान्तानुसार हथेली और पगथली में

दबाव देने पर जिन स्थानों पर दर्द होता है, उसका मतलब उन स्थानों पर विकार अथवा अनावश्यक विजातीय तत्त्वों का जमाव हो जाना है। परिणामस्वरूप शरीर में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध हो जाता है। इन प्रतिवेदन बिन्दुओं पर विजातीय तत्त्वों के जमा होने से संबंधित अंग, उपांग, अवयवों आदि में प्राण ऊर्जा के प्रवाह में असंतुलन हो जाने के कारण व्यक्ति रोगी बनने लगता है। अतः यदि किसी भी विधि द्वारा यदि इन विजातीय तत्त्वों को वहाँ से हटा दिया जाए तो प्राण ऊर्जा का प्रवाह संतुलित होने लगता है, जिससे रोग के कारण दूर होने से शरीर के संबंधित अंग-उपांग एवं अवयव रोग मुक्त होने लगते हैं। परन्तु आज एक्यूप्रेशर द्वारा उपचार करने वाले चिकित्सक भी निदान के मूल सिद्धान्तों से हट कर मात्र रोग से प्रत्यक्ष प्रभावित अंगों के प्रतिवेदन बिन्दुओं का उपचार हेतु निर्धारण करते हैं। सीमित प्रतिवेदन बिन्दुओं पर उपचार करने से प्रभावशाली एक्यूप्रेशर का प्रभाव भी सीमित हो जाता है। किसी भी चिकित्सक के पास इतना समय नहीं होता कि रोगी के सभी प्रतिवेदन बिन्दुओं का ढंग से निदान कर सके। वे तो मात्र मुख्य प्रतिवेदन बिन्दुओं तक ही अपना ध्यान केन्द्रित रखते हैं, अतः उपचार आंशिक ही कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि दोनों हथेलियों एवं पगथली के समस्त प्रतिवेदन बिन्दुओं से विजातीय तत्त्वों को किसी विधि द्वारा अलग कर दिया जाए तो न केवल मुख्य रोग, अपितु सभी अप्रत्यक्ष सहयोगी रोग भी दूर हो जाने से पूरा शरीर स्वस्थ हो जाता है।

इलास्टिक डोरी द्वारा पूर्ण शरीर का प्रभावशाली उपचार

उपचार हेतु इलास्टिक डोरी से हथेली और पगथली के अंगूठों एवं अंगुलियों को बारी-बारी से अपनी सहन शक्ति के अनुसार कसकर (टाइट) लपेटकर रखें और उसके बाद खोल दें। जैसे ही डोरी अंगुलियों/अंगूठे से हटाते हैं उस पर दबाव हटने से वहाँ पर प्राण ऊर्जा तीव्र गति से प्रवाहित होने लगती है। परिणामस्वरूप वहाँ पर जमे हुए विजातीय तत्त्व अपना स्थान छोड़ने लगते हैं। डोरी खोलने के पश्चात् उस भाग की हथेली से मसाज कर लें ताकि वहाँ रक्त का संचार भी बराबर होने लगे। जैसे-जैसे विजातीय तत्त्व दूर होते हैं संबंधित अंग एवं उपांगों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह संतुलित होने से वे रोग मुक्त होने लगते हैं। अंगुलियों एवं अंगूठों की भांति हथेली और पगथली के शेष भाग में डोरी द्वारा उपचार करने से पूरे शरीर अर्थात् प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सभी रोगों का उपचार किया जा सकता है।

उपचार में ही निदान एवं रोकथाम शामिल होते हैं। उपचार का प्रभाव डोरी की इलास्टिक एवं व्यक्ति के दबाव की सहन शक्ति पर निर्भर करता है। यदि व्यक्ति की सहनशक्ति बराबर न हो तो उपचार बार-बार सहनीय दबाव देकर किया जा सकता है।

उपचार में रोगी की भागीदारी मुख्य होती है। यदि स्वस्थ व्यक्ति उपर्युक्त उपचार नियमित रूप से करे तो उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जायेगी। शरीर के सभी तन्त्र संतुलित रूप से अपना कार्य करने लगेंगे जिससे रोग उत्पन्न होने की संभावनाएँ कम हो जायेंगी तथा उसकी कार्य क्षमता बढ़ जायेगी।

उपर्युक्त उपचार बाल-वृद्ध, शिक्षित-अशिक्षित, गरीब-अमीर, शरीर विज्ञान की जानकारी न रखने वाला व्यक्ति भी पूर्ण आत्मविश्वास से बिना किसी दूसरे के आश्रित रहते हुए स्वयं कर सकता है। उपचार बहुत ही सरल, सस्ता, स्वावलंबी, प्रभावशाली, दुष्प्रभावों से रहित, अहिंसक एवं वैज्ञानिक, प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों पर आधारित होता है। पूर्ण शरीर का उपचार होने से अर्थात् सहयोगी रोगों की उपेक्षा न होने से चंद दिनों के उपचार से न केवल रोगों में राहत ही, अपितु रोग से स्थायी मुक्ति हो सकती है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621454, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,

Website: www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 जनवरी 2014 तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

1. शरीर अपनी रुग्णता स्वतः ठीक करने में समर्थ है- इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं?
2. रोग-निदान के क्या आधार होने चाहिए?
3. इन चिकित्सा पद्धतियों की उपचार विधियों का आधार बताइये- चीनी पद्धति, आयुर्वेद पद्धति, प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति, चुम्बकीय पद्धति, ज्योतिष विधि, होम्योपैथ पद्धति।
4. लेखक ने एक्यूप्रेशर को प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति क्यों कहा है?
5. इलास्टिक डोरी-उपचार का प्रयोग कर अपने अनुभव लिखें।

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त 2013 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत **'बिना दवा आँखों के रोगों का उपचार'** के प्रश्नों के उत्तर 33 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। प्रतियोगिता में

द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए पाँच विजेता होने से कुल राशि 2000/-रुपये करके प्रत्येक को 400/- रुपये प्रेषित किये जायेंगे।

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**	
प्रथम पुरस्कार (1100/-रु.)	श्री दिपेश दिलीपचन्द जी जैन-जयपुर	(70/68)
द्वितीय पुरस्कार	श्री चन्द्रसिंह जी लोढ़ा-फूलिया कलां-भीलवाड़ा	(70/67)
तृतीय पुरस्कार	श्री रितेश जी जैन-जयपुर	(70/67)
	श्री मन अरुणकुमार जी जैन-बडौत (उत्तरप्रदेश)	(70/67)
	सौ. राखी अमर जी जैन-मुक्ताईनगर (जलगांव)	(70/67)
	श्री अनिलकुमार जी जैन-कोटा	(70/67)

जिनवाणी के सितम्बर 2013 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत **'बिना दवा हृदय रोगों का प्रभावशाली उपचार'** के प्रश्नों के उत्तर 39 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। उनमें से द्वितीय एवं तृतीय प्रतियोगियों के समान अंक होने से 750+500=1250/2=625 रुपये से दोनों को पुरस्कृत किया जा रहा है-

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**	
प्रथम पुरस्कार (1100/-रु.)	श्री चन्दनमल जी पालरेचा-जोधपुर	(50/49)
द्वितीय पुरस्कार	डॉ. (श्रीमती) शर्मिला जी पोखरना-जयपुर	(50/48)
तृतीय पुरस्कार	श्री यश सुमतचन्दजी जैन-जयपुर	(50/48)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें।

जिनवाणी पर अभिमत

श्री रिखबचन्द सुखलेचा

जिनवाणी के अगस्त-2013 अंक में डॉ. धर्मचन्द जी जैन का सम्पादकीय 'आत्म घातक क्रोध' एवं श्री पारसमल जी चण्डालिया का 'तिरोहित होता जैनाचार' बहुत ही सरल भाषा में सारगर्भित लेख है।

समाज की वर्तमान परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए, समाज में बढ़ती हुई कुरीतियों का विरोध करना चाहिये। आडम्बर, प्रदर्शन पर रोक लगनी चाहिये। अहिंसक क्रान्ति एवं विनम्र व्यवहार के साथ ऐसा वातावरण तैयार होना चाहिए, जिससे जैन समाज की गौरवशाली परम्परा सुरक्षित रह सके। प्रस्तुत लेख के लिए साधुवाद।

-3977, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

बाल-स्तम्भ

हीरा-कुणी

कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के व्यक्ति 15 जनवरी 2014 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक बार की बात है एक ग्वालिन का नाम था हीरा तथा उसकी गाय का नाम था कुणी।

हीरा का एक माह का बच्चा था। गाय की भी एक माह की बछिया थी। हीरा रायगढ़ के पहाड़ पर चढ़कर महाराष्ट्र के राजा को दूध देने जाती थी। राजा कुणी गाय का दूध पीकर पुष्ट होता था। बछिया रोती रहती थी। हीरा के दिल में बछिया के लिए किसी भी दिन दया नहीं आती थी। दूध दुहने के समय कुणी गाय रह-रहकर बछिया को पुकारती थी। बछिया दौड़कर दूध पीने के लिए आती, लेकिन हीरा उसे लौटा देती। उसे खूंटे से बाँधे रखती थी। इस तरह बछिया अपनी माँ को नहीं पा सकती थी तथा दूध के लिए तरसती ही रहती थी, बिलखती रहती थी।

हीरा का ध्यान उधर कभी भी जाता ही नहीं था। वह तो सुबह-शाम दूध दुहकर और उसे बेचने के लिए राजा के महल में चली जाती थी। रात्रि होने से पहले ही हीरा किले से लौट आती थी। सर्वप्रथम, अपने बच्चे को दूध पिलाती, थपकियाँ देकर सुला देती, फिर बछिया को पकड़कर कुणी के निकट ले जाती। बछिया लपककर अपनी माँ की गोद में जा पहुँचती, वह जरा-सा दूध पी पाती थी। कुणी अपनी बछिया के शरीर को चाटकर सुला दिया करती थी। बछिया भूखी रह जाती थी और राजा दूध पीकर आनन्द मनाता था। इसी प्रकार दिन बीतते रहे।

एक दिन हीरा दूध बेचने के लिए महल में गयी। वहाँ दूध की कीमत चुकाने में राजा के कोषाध्यक्ष ने देर कर दी। शाम का घंटा बज गया। महल का फाटक बंद कर दिया गया। हीरा बोली, "दरवाजा खोलो।"

पहरेदार बोला- "आज्ञा नहीं है।" हीरा का मन बच्चे के लिए छटपटाने लगा। वह रो-रोकर बोली, "मेरा मुन्ना भूखा है, तुम्हारे पैर पड़ती हूँ, दरवाजा खोल दो।"

राजा के पत्थर-दिल पहरेदार ने दरवाजा नहीं खोला। बालक को दूध पिलाने के लिए माँ की छाती फटने लगी। उसने फाटक की जंजीर पकड़कर हिलाई और फिर प्रार्थना की, "अरे भाई, एक बार के लिए दरवाजा खोल दो।" पहरेदार ने फिर झल्लाकर कहा- "आदेश नहीं है।"

सूरज छिप गया। पक्षी अपने पंख फैलाकर अपने बसेरों की तरफ उड़ चले। किले के बीच भाग में, देवमंदिर के ऊपर शाम का तारा दिखने लगा। हीरा रोकर मन-ही-मन कहने लगी- "काश मुझे पंख लग जाते और मैं अपने लाल के निकट पहुँच जाती। वह दूध पिये बिना रो रहा होगा।"

पर्वत के नीचे तराई में ही हीरा का घर है। कुणी गाय बार-बार अपनी बछिया को पुकार रही है। वहाँ से उसकी पुकार हीरा को सुनाई पड़ी। वह दूध की मटकी पटककर उठ खड़ी हुई। वह किसी रास्ते की तलाश करने लगी।

किले की दीवार पुरानी थी। एक स्थान पर किनारे से पर्वत धंस गया था। एक पीपल का वृक्ष दीवार पर झुका था। उसी स्थान पर आधी रात में चाँदनी पड़ रही थी। हीरा ने चाँद की चाँदनी में देखा कि चट्टानों की नोंकें घड़ियाल के बड़े-बड़े दांतों की तरह चमक रही हैं। हीरा उसी मार्ग में आहिस्ता-आहिस्ता उतरने लगी एक-एक पत्थर पर पैर टिकाकर। उसके पश्चात् एक पगडंडी से हीरा अपने घर जा पहुँची।

उस वक्त रात का तीसरा पहर बीत रहा था, सुबह होने की तैयारी थी। बच्चा रोते-रोते सो गया था। हीरा सोते हुए बच्चे को उठाकर, अपनी छाती से लगाकर दूध पिलाने लगी। उधर रस्सी तोड़कर कुणी की भूखी बछिया भी दूध पीने लगी थी। हीरा ने उस समय उसे बाँधा नहीं।

सुबह हो गयी। दिन चढ़ने लगा। रायगढ़ के राजा ने नींद से जागते ही दूध माँगा। हीरा दूध नहीं लायी थी। सिपाही दौड़ाया, गया हीरा के मकान से दूध लाने के लिए। हीरा बोली- "दूध नहीं है, सूख गया है।"

वह ठहरा राजा का सिपाही। वह भला क्यों कर मानने लगा। हीरा को पकड़कर वह किले में ले आया। राजा ने हीरा से पूरी कहानी सुनी। उसका हृदय पिघला। राजा ने हीरा को एक गाँव जागीर में दे दिया और जिस रास्ते से हीरा अपने जीवन को खतरे में डालकर, अपने बच्चे के पास पहुँची थी, राजा ने उस कठिन मार्ग का नाम रखा- "हीरा-कुणी।"

- 'रवीन्द्रनाथ टैगोर की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ' पुस्तक से संकलित

प्रश्न:-

1. दूध दुहते समय हीरा कुणी को बछिया से क्यों अलग रखती थी?
2. हीरा क्यों वापस समय पर अपने बच्चे के पास नहीं लौट पाई?
3. 'छाती फटना' और 'हृदय पिघलना' का वाक्य प्रयोग कीजिए?
4. हीरा को बछिया का कष्ट कब समझ में आया?
5. अर्थ बताइये- बिलखती, कोषाध्यक्ष, बसेरा, देवमंदिर, तराई, जागीर।
6. राजा ने हीरा को पुरस्कार में क्या दिया?

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2013] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2013 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'क्षमा : आनन्द का द्वार' रचना के प्रश्नों के उत्तर 20 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	डिम्पल चाणोदिया-हैदराबाद (आ.प्र.)	33
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अखिल जैन-जयपुर (राज.)	30
तृतीय पुरस्कार- 200/-	प्रखर गाँधी-चित्तौड़गढ़(राज.)	29.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	आयुषी जैन-जयपुर(राज.)	26.5
	दीप्ति जैन-लाड़पुरा,कोटा (राज.)	24
	अर्पित जैन-जोधपुर (राज.)	23
	दीपेश जैन-जयपुर (राज.)	22
	हनी जैन-सूरत (गुजरात)	21.5

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2013] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2013 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'कर्मफल-भोग' कथा के प्रश्नों के उत्तर 48 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	भूमि सिंघवी-जोधपुर (राज.)	20.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	कनिष्क जैन-बडौत, बागपत (उतरप्रदेश)	19.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	रुचिता जैन-जोधपुर (राज.)	19
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	रुपल जैन-भीलवाड़ा(राज.)	18.5
	कृतिका एस. गाँधी-पीपाड़शहर (राज.)	18.5
	विमलचन्द सुराणा-सेवलीकला (राज.)	18.5
	मुकुल जैन-जयपुर (राज.)	18
	अखिल जैन-जयपुर(राज.)	17.5

अभिव्यक्ति

वीतराग ध्यान-साधना-शिविर से मिले लाभ

पूजा जैन सोमानी

20 से 30 सितम्बर 2013 तक मदनगंज-किशनगढ़ में समायोजित ध्यान-साधना शिविर में 100 से अधिक साधक लाभान्वित हुए। पूजा जैन ने अपने अनुभव प्रेषित किए हैं।

1. मन को वश में करना– हम सबके समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हमारा चित्त एकाग्र नहीं होता है। ध्यान के द्वारा मन वश में आया, उस पर अंकुश लगा तो इन्द्रियों ने स्वतः ही हथियार डाल दिये।

2. समता की साधना– हमने जीने की कला सीखी। अब कुछ-कुछ समझ आने लगा है कि भगवान महावीर ने कानों में कीलें ठोके जाने पर समता कैसे रखी, गजसुकुमाल मुनि सिर पर अंगारों को कैसे सहन कर पाये, मेतार्य मुनि ने सिर पर चमड़ा बंधा होने पर वीतरागता को कैसे बनाये रखा। यह सब करना असंभव नहीं है। यह विश्वास जगा कि निरन्तर प्रयास एवं साधना से मुझमें भी ऐसी सहनशीलता तथा समाधि भाव विकसित हो सकता है।

3. ज्ञाता द्रष्टा भाव– अब तक मैं हर परिस्थिति को भोक्ता बनकर, सुखी-दुःखी होकर भोग रही थी। अब खुद को अनासक्त करना आया। ऐसा लगा मानो अब तक मैं बरसात से भीग रही थी, ठंडी हवाओं से ठिठुर रही थी। पर अब मैं एक काच-गृह (Glass House) में खड़ी हूँ जहाँ मुझे बारिश होती हुई व हवा चलती हुई दिखाई तो दे रही है, पर उसका असर मुझ पर नहीं हो रहा।

4. अनुभूति का सत्य– शरीर अनित्य है, यह क्षणभंगुर है, कुशाग्र पर पड़ी ओस बिन्दु के समान है- यह सुनते-सुनते जीवन बीत गया, परन्तु कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। पहली बार अनुभूति होने पर वाकई शरीर की सच्चाई दिखने लगी। किसी से कितना भी सुन लो कि न्यूजीलैण्ड कैसा है, कितना सुन्दर है आदि तब भी मन वहाँ स्वयं जाकर उसे अनुभव करना चाहता है। इस ध्यान के माध्यम से वह व्यावहारिक शिक्षण मिल पाया मुझे, जो आज तक मात्र सैद्धान्तिक ही था, मस्तिष्कीय स्तर का बोध अनुभव के स्तर का ज्ञान बना। सच्चे धर्म की शुरुआत यहीं से हुई। भेदविज्ञान असल में होता क्या है- समझ में आ सकता है, अगर सतत प्रयास जारी रहा तो।

5. विषयों से विरक्ति– विषयों का सुख छोड़ दो- यह क्षणिक है आदि सुना हमेशा, पर मन कभी उन्हें छोड़ने को राजी ही नहीं हुआ, ये भी छोड़ दूँ तो फिर भला करूँ क्या?

सुखाभास ही सही पर कुछ तो है हाथ में। यह छोड़ दूँ तो क्यों? यहाँ आकर अहसास हुआ कि अगर कुछ बेहतर मिले तो इन विषयों की आसक्ति को छोड़ना नहीं पड़ेगा, यह स्वतः ही छूट जायेंगी।

-कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

आराधक बन जायें

श्रीमती सुनीता नरेन्द्र डागा

जीव और पुद्गल से, सारा यह संसार भरा,
जन्म-जरा-मृत्यु से, पीड़ित यह जग सारा।
और आसक्त मन इनमें, फिरता मारा-मारा,
उद्घोष करती मुदित वाणी, हो राग-द्वेष से किनारा।
बन मुक्त विकारों से अब, नित्य का संग हो जाये,
भावों की विशुद्ध धारा में, शुद्ध वीतराग ध्यान सध जाये।
वीतराग ध्यान कर हम सब आराधक बन जायें।।

आराध्य चरण आराधना से, मुदिता जन-जन में फैलायें
गुरुवर की शिक्षाओं से, अपने जीवन में ज्योति जगायें,
शान्त चित्त, सजग चित्त से, समता रस में रम जायें,
तन्मयता, दृढ़ता, चिन्मयता से, मूर्च्छा भाव विसरायें,
पल-पल सजग रहकर, अनुभूतिमय प्रज्ञा जगायें।
वीतराग ध्यान कर, हम सब आराधक बन जायें।।

अनन्त मैत्री, अनन्त मुदिता, अनन्त करुणा, अनन्त समता,
इन दिव्य तरंगों से मन का, कण-कण भावित हो जाये,
आग्रह-विग्रह तज कर, माध्यस्थ भाव बन जाये,
गुणीजनों को देख हृदय में, प्रमुदित भावना छा जाये,
प्राणिमात्र के हित में, क्षण-प्रतिक्षण मंगल मैत्री भायें,
मुदित मन की भावना, जन-जन में फैलायें
मुदित चरण की शरण में, श्रद्धा के कुसुम चढ़ायें,
वीतराग ध्यान कर, हम सब आराधक बन जायें।।

(मदनगंज-किशनगढ़ में आयोजित अगस्त माह 2013 के ध्यान-शिविर की अभिव्यक्ति)

-बोरिवली, मुम्बई (महा.)

प्रेरक-कविता

करना होगा संरक्षण कन्या धन का

श्री महावीर प्रसाद जैन

करना होगा संरक्षण कन्या धन का,
तभी बढ़ेगा मान पुनः भारत का।
पुरा समय में यह देवी कहलाती थी,
और माता बन अमृतमयी ममता बरसाती थी।
आज इंसान हुआ क्यों इतना स्वार्थी,
भ्रूण हत्या कर मारे उनको अकाल ही।
मानव वध का निकृष्ट कर्म करे नर यह जो
राक्षस बन संहार करे वह कुल गौरव का।
लड़का-लड़की में ना कुछ भेद करें,
बेटी भी बेटा है मन में यह संकल्प करें।
मात पिता पर जब भी आफत आती है,
सबसे पहले बेटी ही दौड़ी आती है।
आज हर क्षेत्र में नारी ने बनाई निज पहचान है,
धरती, पर्वत, अंतरिक्ष तक उसने भरी उड़ान है।
शिक्षा क्षेत्र में तो इनका पलड़ा बहुत ही भारी है,
हर परीक्षा में अव्वल रहकर इन्होंने बाजी मारी है।
घटता कन्या धन भावी विपत्ति का संकेत है,
अतः हमें अब रहना होकर बहुत ही सचेत है।
यदि न चेते समय रहते तो एक दिन ऐसा आयेगा,
जब हमारा कुँवर लाड़ला बिन ब्याहा रह जायेगा।
लें प्रतिज्ञा अब हम भ्रूण हत्या न करेंगे,
बन कुल रक्षक कन्या का संरक्षण करेंगे।

-अध्यापक, 106, मस्जिद रोड़, राजपूत कॉलोनी, केशवपुरा, कोटा-04 (राज)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

ऋषिभाषित का दार्शनिक अध्ययन- साध्वी डॉ. प्रमोद्कुमारी जी, ***प्रकाशक***- (1) प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.), फोन-07364-222218, (2) पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड़, करौंदी, वाराणसी-221005, ***पृष्ठ***- 188, ***मूल्य***-90 रुपये मात्र, सन् 2009

प्राचीन प्राकृत ग्रन्थ 'ऋषिभाषित' अर्धमागधी भाषा में निबद्ध एक आध्यात्मिक एवं दार्शनिक ग्रंथ है। इसमें तत्कालीन जैन, बौद्ध और वैदिक परम्परा के 45 ऋषियों के उपदेशों का संकलन है। इस ग्रंथ का वैशिष्ट्य यह है कि इसमें सभी ऋषियों के विचारों को आदर और सम्मानपूर्वक प्रस्तुत किया गया है और उनकी आलोचना का कहीं भी कोई निर्देश नहीं है। प्रस्तुत ग्रंथ में ऋषिभाषित की ज्ञान-मीमांसा, तत्त्व-मीमांसा, नैतिक दर्शन, मनोविज्ञान, साधना-मार्ग, सामाजिक दर्शन और चिन्तन का सुन्दर प्रतिपादन नव अध्यायों के अन्तर्गत हुआ है। इसमें सर्वज्ञ, विज्ञान, बुद्धि, मति, मेधा आदि ऋषिभाषित के कुछ ज्ञान मीमांसीय शब्दों को व्याख्यायित किया गया है। सृष्टि के मूल तत्त्व, सन्ततिवाद, शून्यवाद, स्कन्धवाद, पंचास्तिकायवाद, कर्मवाद के सिद्धान्तों का भी निरूपण हुआ है। मनोविज्ञान की दृष्टि से भी साध्वी जी ने ऋषिभाषित को देखने का प्रयास किया है, वे एक वाक्यांश को उद्धृत करती हुई लिखती हैं-"दीवार और काष्ठ पर चित्रित चित्र को समझना सरल होता है, किन्तु मनुष्य के हृदय को समझ पाना अति गहन और दुःशक्य है।" इन्द्रिय-निरोध का तात्पर्य इन्द्रियों को अपने विषयों के भोग से वंचित करना नहीं, अपितु इन्द्रिय का अपने विषय से सम्पर्क होने पर चित्त का अनुकूल विषयों के प्रति राग और प्रतिकूल विषयों के प्रति द्वेष से विरक्त रखना है। यह दमन की मनोवैज्ञानिक समस्या का सम्यक् समाधान है। आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि ही ऋषिभाषित का प्रतिपाद्य विषय है। अध्यात्मवाद का तात्पर्य आत्मा अथवा चेतना को बाह्य पदार्थों अथवा घटनाओं की अपेक्षा अधिक महत्त्व देना है। नैतिक मानदण्ड के संदर्भ में ऋषिभाषित केवल बाह्य घटना के आधार पर कर्म का मूल्यांकन न करके उसके आंतरिक भावपक्ष को ही महत्त्वपूर्ण

मानता है। इसमें विभिन्न ऋषियों के अनेक साधना-मार्ग निर्देशित हैं तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, ध्यान आदि को आध्यात्मिक विकास का साधन माना गया है। यह पुस्तक जैन विद्या के मूर्धन्य विद्वान् प्रो. सागरमल जी जैन के निर्देशन में पूर्ण हुए शोध प्रबन्ध का प्रकाशित रूप है।

विपाक सूत्र- स्वाध्याय और सर्जना- साध्वी डॉ. स्नेहप्रभाजी (उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी की परम्परा से), ***प्रकाशक***- आत्मदृष्टि सेवा संस्थान (पते का उल्लेख नहीं) ***पृष्ठ***- 72, ***मूल्य***-100 रुपये, सन् 2013

ग्यारहवें अंग आगम 'विपाक सूत्र' के विषय को साध्वी जी ने कई कोणों से प्रस्तुत कर सूत्र के मर्म को उद्घाटित करने का सराहनीय प्रयत्न किया है। लेखिका ने गणधर सुधर्मा स्वामी के विस्तृत परिचय के साथ धर्मकथानुयोग में विपाकसूत्र के स्थान को रेखांकित किया है। विपाकसूत्र के सर्वेक्षण की एक वर्गाकार तालिका बनाकर उसमें कथानायक, उसके दुष्कृत्य और सुकृत्य, आयुष्य और उनके परिणामों का उल्लेख किया गया है। शाब्दिक मीमांसा, पुण्य-पाप का चिन्तन, पारिभाषिक शब्द, जिज्ञासा-समाधान, सूक्तियाँ आदि शीर्षकों से विपाकसूत्र की विषय-वस्तु को प्रस्तुत किया गया है।

सुखी होने की चाबी- जयेश मोहनलाल शेठ, ***प्रकाशक***- शैलेश पूनमचन्द शाह, 402, पारिजात, स्वामी समर्थ मार्ग, हनुमान क्रॉस रोड नं. 2, विलेपार्ले (पूर्व), मुम्बई-400057, फोन- 022-26133048, ***पृष्ठ***- 54+5, सन् 2013

भाव-प्रतिक्रमण, समाधिमरण, कन्दमूल-निषेध, रात्रिभोजन-त्याग, बारह भावनाएँ एवं नित्य चिन्तन कणिकाएँ विषयक विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

यथार्थ- आचार्य श्री विजयराज जी, ***सम्पादक***- डॉ. ज्ञान जैन ***प्रकाशक***- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शान्तक्रान्ति जैन श्रावक संघ, प्रधान कार्यालय, 279-एच, नवकार भवन, हिरण मगरी सेक्टर 3, उदयपुर-313002 (राज.), फोन-0294-2461588, ***पृष्ठ***- 294+10, ***मूल्य***-30 रुपये, सन् 2013

आचार्य श्री विजयराज जी महाराज के 112 प्रवचनों के सारांश का संकलन है। इस पुस्तक में जीवन के बहुआयामी यथार्थ सत्य उजागर हुए हैं। अन्तःकरण की शुद्धता, यौवन की सुरक्षा, पुण्य का पाथेय, विश्व-शांति, मन सुधरे-जग सुधरे, 'मैत्री' जीवन का वरदान, दिल दर्पण में देखो मुखड़ा, धैर्य-सर्वांगीण सफलता की कुंजी आदि विषयों पर प्रेरक एवं प्रभावकारी विचारों का समन्वय है। यह पुस्तक स्वाध्यायियों के द्वारा पठनीय है।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 405 स्वाध्यायियों द्वारा 155 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत 66 वर्षों से, जैन संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/नगरों में विद्वान्, क्रियावान्, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के लगभग 1200 स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए इस संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं जो व्यावहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएँ संघ को प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड, एल.एल.बी., पी-एच.डी. एवं एल.एल.एम. जैसी विशिष्ट उपाधियों से अलंकृत हैं।

इस वर्ष पर्युषण पर्व दिनाँक 02 से 09 सितम्बर 2013 तक मनाए गए। पर्वाराधन में उत्तरप्रदेश पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात तथा राजस्थान के मेवाड़-मारवाड़, पोरवाल-पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े, दूर व निकट के 155 क्षेत्रों में लगभग 405 स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की।

सभी स्थानों पर सामायिक, दया-संवर, उपवास-पौषध तथा छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ बहुतायत संख्या में सम्पन्न हुई। स्वाध्यायियों द्वारा सभी स्थानों पर ज्ञानवृद्धि हेतु शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गई।

महाराष्ट्र क्षेत्र

01	लासूर स्टेशन	-	श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर
			श्री हस्तीमल जी डोसी-मेड़ता सिटी
			श्री हंसराज जी चौपड़ा-गोटन
02	मुम्बई	-	डॉ.सागरमल जी जैन-शाजापुर
			डॉ. धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर
			श्री राजेन्द्र जी लुंकड़-इरोड
03	बडनेरा	-	श्री प्रकाश चंद जी जैन-जलगांव
			श्री अजय जी राखेचा-जलगांव
			कु. शीतल जी तालेरा-फत्तेपुर
			कु. सुजाता जी तालेरा-फत्तेपुर

04	केलशी	-	श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर
			श्रीमती सरला जी भण्डारी-जोधपुर
05	डोम्बीवली	-	श्री धर्मचंद जी जैन(रजिस्ट्रार)-जोधपुर
			श्री राकेश जी समदड़िया-चिखली
			श्री अविनाश जी सालेचा-हुबली
06	पांढरकवाडा	-	श्री कन्हैयालाल जी जैन- भीलवाड़ा
			श्री पंकज जी ओस्तवाल-जोधपुर
			सौ. चंद्रमाला जी गांधी-जलगांव
07	फत्तेपुर	-	डॉ. जीवराज जी जैन-जमशेदपुर
			श्री अमृत जी मुथा-अमरावती
			सौ. अनीता जी लुंकड़-जलगांव
			सौ. अनुपमा जी छाजेड़-अमलनेर
08	कजगांव	-	सौ. विजया जी मल्हारा-जलगांव
			सौ. छाया जी मल्हारा-जलगांव
			सौ. सुनीता जी बरड़िया-जलगांव
09	वाकोद	-	सौ. ललिता जी कटारिया, जलगांव
			सौ. तारा जी जैन, जलगांव
			सौ. सरोज जी बाफणा, जलगांव
10	होलनांथा	-	सौ. रसीला जी बरडिया-जलगांव
			सौ. संगीता जी छाजेड़-अमलनेर
11	भराड़ी	-	सौ. चंदा जी कांकरिया-जलगांव
			श्रीमती सुशीला जी सांखला-जलगांव
			सौ. सुनंदा जी रांका-जलगांव
12	नसीराबाद	-	श्री अलंकार जी मुणोत, कटंगी
			श्री तुषार जी संकलेचा, जलगांव
			श्री विराग जी कोठारी, जलगांव
13	वरखेड़ी	-	श्रीमती कांताबाई जी लुंकड़-जलगांव
			सौ. सुशीला जी धाडीवाल-जलगांव
			सौ. देवबाला जी कुम्भट-मुम्बई
14	वाकड़ी	-	सौ. किरण जी बोरा, जलगांव
			सौ. मंदा जी बरड़िया, जलगांव
15	इच्छापुर	-	श्रीमती कांता जी जैन-जलगांव
			श्रीमती मंगला बाई जी राखेचा-जलगांव
			कु. आयुषी जी कांकरिया-जलगांव

16	वरणगांव	-	श्रीमती ताराबाई जी डाकलिया-जलगांव
			सौ. उषा जी कटारिया-जलगांव
			सौ. मिनल जी समदड़िया-जलगांव
17	मुक्ताइनगर	-	सौ. कंचन जी चौपड़ा-जलगांव
			सौ. सरला जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. मेघा जी सिंघवी-जलगांव
18	जायखेड़ा	-	सौ. पुष्पा जी बनवट-जलगांव
			सौ. कंचन जी भंसाली-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी कांकरिया-जलगांव
19	सौंदाणे	-	सौ. सुगनबाई जी सांड़-जलगांव
			सौ. हेमलता जी सांखला-मुम्बई
			सौ. पारस जी ओस्तवाल-धुले
20	नागद	-	श्री सुभाष जी सुराणा-वाशीम
			श्री महावीर जी आंचलिया-मुम्बई
21	पिलखोड़	-	सौ. आशा जी कोठारी-जामनेर
			कु. पूनम जी पोरवाल-जामनेर
			श्री नवकार जी छाजेड़-जलगांव
22	वाघली	-	श्रीमती दर्शना जी अजमेरा-जलगांव
			कु. अनीषा जी कोठारी-बोदवड़
			कु. सोनम जी पोरवाल-जामनेर
23	बोरकुण्ड़	-	श्री महावीर जी गुलेच्छा-वाकोद
			सौ. भावना जी पगारिया-जलगांव
			कु. मिनाक्षी जी संचेती-धरणगांव
24	किनगांवराजा	-	मधुबाला जी मनन-जलगांव
25	चांदुर रेलवे	-	सौ. शोभा जी लुणावत-भड़गांव
			सौ. योगिता जी खिंवसरा-मुकटी
			श्रीमती उषाबाई जी धोका-धामणगांव
26	वालूज	-	सौ. चंद्रकला बाई जी सेठिया-होलनाथा
			सौ. पूनम जी वेदमूथा-जलगांव
27	मुकटी	-	सौ. ज्योति जी गादिया-भुसावल
			कु. राखी जी कर्णावट, सौंदाणे
			कु. रीना जी कर्णावट, सौंदाणे
28	फागणा	-	सौ. छाया जी भण्डारी-जलगांव
			सौ. कुसुम जी लूंकड़-जलगांव

			कु. प्रियंका जी संचेती-हीरापुर
			कु. आरती जी छाजेड़-हीरापुर
29	पारसिवनी	-	श्री कंवरलाल जी सिंघवी, जलगांव
			श्री अनिल जी कोठारी, जलगांव
			कु. राखी जी संकलेचा, नरडाणा
			सौ. विजया जी सिंघवी, जलगांव
30	रत्नागिरी	-	श्री मुकेश जी बुरड़-शिरपुर
			श्री राकेश जी संकलेचा-शिरपुर
			डॉ. निहालचंद जी सेठिया-शिरपुर
31	रालेगांव	-	श्री सुभाष जी कोठारी-माजलगांव
			श्री प्रकाश जी बांठिया-पाचोरा
32	अम्बेजोगाई	-	श्री राजमल जी संचेती-अमलनेर
			श्री कांतिलाल जी मूथा-नागद
33	पलासखेड़ा	-	सौ. चंद्रकला जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. मंगला जी वेदमूथा-वाघली
34	लोहारा	-	श्रीमती सरला जी मेहर-जलगांव
			सौ. निर्मला जी छोरिया-जलगांव
			श्रीमती पारस बाई जी बोरा-जलगांव
35	विदिशा	-	श्रीमती उषाबाई जी कोठारी-जलगांव
			कु. स्नेहा जी छाजेड़-नासिक
			कु. नूतन जी चोरड़िया-पारोला
36	खलाणे	-	सौ. माया जी श्रीश्रीमाल-भड़गांव
			कु. मनीषा जी कोचर-फत्तेपुर
			कु. अंकिता जी कोठारी-बोदवड़
37	चिंचाला	-	श्रीमती लीला बाई जी बागरेचा-मुक्ताईनगर
			श्रीमती उषा जी चोरडिया-भड़गांव
38	सिल्लौड़	-	श्री मुकेश जी चोरडिया-पारोला
			श्री निलेश जी चोरडिया-पारोला
			श्री कल्याणमल जी धाडीवाल-कजगांव
			कु. खुशबु जी कोठारी-पारोला
39	शिरूड़	-	सौ. विमला जी कांकरिया-जलगांव
			श्रीमती लीला जी आंचलिया-जलगांव
			श्री महावीर जी कोठारी-नायगांव
40	कामठी	-	सौ. बसंता जी संकलेचा-नरडाणा

			कु. भाग्यश्री जी लुंकड़-जलगांव
			कु. रोशनी जी ओस्तवाल-शेन्दुर्णी
41	सातारा	-	श्री जिनेन्द्र जी जैन-मुम्बई
			श्री चंद्रकांत जी हिरण-कजगांव
			श्री धर्मेन्द्र जी मुणोत-अमरावती
42	मांगलादेवी	-	श्री हीरालाल जी मंडलेचा-जलगांव
			श्री चेनकरण जी कटारिया-जलगांव
43	शेलवड़	-	सौ. शकुंतला जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. सरला जी दुधेडिया-जलगांव
			सौ. मोना जी सिंघवी-जलगांव
44	कासमपुरा	-	श्रीमती सायरबाई जी सुराणा-शिरपुर
			सौ. चन्द्रकला जी बाफना-हीरापुर
45	दूसरबीड़	-	सौ. कंचनबाई जी सांड, जलगांव
			सौ. संतोषबाई जी सिसोदिया, चिखली
46	उंबरखेड़े	-	सौ. निर्मला जी दुधेड़िया-जलगांव
			सौ. शोभा जी संचेती-अमलनेर
47	मांडल	-	सौ. सरला जी बम्ब, भड़गांव
			सौ. मंजुला जी लुणावत, भड़गुांव
			सौ. सरला जी वेदमुथा, नागद
48	चिपलूण	-	डॉ. वर्धमान जी लोढ़ा, मालेगांव
			श्री सचिन जी देडिया, मालेगांव
			श्री मनोज जी बुरड़, मालेगांव
49	कासारे	-	श्री नरेश जी हुंडीवाल, जलगांव
			श्री दिनेश जी सुराणा, जलगांव
50	चिखली	-	श्री दीपचंद जी बोथरा-पाचोरा
			डॉ. बंशीलाल जी दुग्गड़-पाचोरा
51	हीरापुर	-	सौ. निर्मला जी डोसी-जलगांव
			सौ. सुनंदा जी सांखला-जलगांव
52	पिलखोड़	-	सौ. आशा जी कोठारी, जामनेर
			कु. पूनम जी पोरवाल, जामनेर
			श्री नवकार जी छाजेड़, जामनेर
53	गंगाखेड़	-	श्री मंजू जी जैन, उमरी

दक्षिण क्षेत्र

54	गुडियातम	-	श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर
			श्रीमती सरिता जी गांग-जोधपुर
55	वडपलनी	-	श्री लल्लुलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			विरक्त बन्धु श्री ओमप्रकाश जी जैन
			श्री मोहित जी जैन-पीपाड़ सिटी
56	आलन्दूर	-	श्री शांतिलाल जी गांधी-सिंगोली
			श्री सुरेश जी हिंगड़-चेन्नई
			श्री संतोष जी गांधी-सिंगोली
			श्री सौरभ जी गांधी-सिंगोली
57	आरकाट	-	श्री दिलीप जी धींग-चेन्नई
			श्री शुभम जी जैन-जयपुर
			श्री तारादेवी जी बाघमार-चेन्नई
58	चेटपेट, चेन्नई	-	श्रीमती कनकमाला जी कुम्भट
59	चिदम्बरम	-	श्रीमती लाडदेवी जी हीरावत-जयपुर
			श्रीमती उषा जी बोहरा-चेन्नई
60	चुल्लईमेडु	-	श्रीमती युवराज जी मेहता-जयपुर
			श्रीमती अमिता जी कवाड़-चेन्नई
			सुश्री खुशबू जी जैन-पीपाड़ सिटी
61	होसुर	-	श्री नवरतनमल जी चोरडिया-चेन्नई
			श्री जितेश जी जैन-जयपुर
62	कडम्बातुर	-	श्री विनयचन्द जी जैन-आलनपुर
			श्री मानमल जी सुराणा-चेन्नई
63	कालाडीपेठ	-	श्रीमती सुशीला जी गोलेच्छा-जोधपुर
			श्रीमती विमला जी चोरडिया-चेन्नई
64	कावेरीपाकम	-	श्री निर्मल जी बोहरा-चेन्नई
			श्री भंवरलाल जी लोढा-चेन्नई
65	कृष्णागिरी	-	श्री मुन्नालाल जी भण्डारी-जोधपुर
			श्री जगदीशमल जी कुम्भट-जोधपुर
66	मनली	-	श्रीमती कंचन जी मुथा-भोपालगढ
			श्रीमती पुष्पा जी चतुर-चेन्नई
67	मिरसाहिबपेठ	-	श्री सौभागमल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री विरेन्द्र जी ओस्तवाल-चेन्नई
68	नंगनल्लूर	-	श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर

			श्री विरेन्द्र जी कांकरिया-चेन्नई
			श्री निखिल जी कांकरिया-चेन्नई
69	नुगम्बाकम	-	श्री राकेश जी जैन-जयपुर
			श्री रितेश जी जैन-जयपुर
			श्री रिखबचन्द जी बाघमार-चेन्नई
70	पाड़ी	-	श्री शांतिलाल जी चौपड़ा-जोधपुर
			श्री शुभम जी जैन-जयपुर
71	पल्लीपेट	-	श्री रतनलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री अभय जी सुराणा-चेन्नई
72	पेरम्बाकम	-	श्री सोनू जी जैन-जयपुर
			श्री दिनेश जी जैन-चेन्नई
73	पुतुर	-	श्रीमती लाडदेवी जी खारेड-जयपुर
			सुश्री सपना जी कर्णावट-चेन्नई
74	रेणीगुन्टा	-	श्रीमती अकलकंवर जी मोदी-जोधपुर
			श्रीमती सज्जनकंवर जी मेहता-जोधपुर
75	सईदापेट	-	श्री राजेन्द्र जी पटवा-जयपुर
			श्री सागरमल जी सर्राफ-उदयपुर
			श्री गजेन्द्र जी जैन-जयपुर
76	शेनाय नगर	-	श्री राजेन्द्र जी बाघमार-चेन्नई
			श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार-चेन्नई
77	शिवाकासी	-	श्री महावीर जी ओस्तवाल-चेन्नई
			श्री अभयराज जी हींगड़-जयपुर
			श्री विनीत जी जैन-चेन्नई
78	श्रीकालाहस्ती	-	श्री निर्मल जी मुथा-पीपाड़ सिटी
			श्री अशोक जी बाफना-चेन्नई
79	श्रीकृष्णा नगर	-	श्री रमेश जी जांगड़ा-चेन्नई
			श्री मनोज जी सेठिया-चेन्नई
			श्रीमती सज्जनबाई जी बोहरा-चेन्नई
80	तिरुवन्नामियुर	-	श्रीमती सूर्यकला जी बाघमार-चेन्नई
81	तिरुतनी	-	श्री विनोदकुमार जी जैन-चेन्नई
			विरक्त बन्धु श्री रवि जी जैन
			श्री कमल जी ओस्तवाल-चेन्नई
82	तिरुवेल्लुर	-	श्री आशीष जी सुराणा-चेन्नई
			विरक्त बहिन सुश्री माला जी जैन

			सुश्री आरती जी बाघमार-चेन्नई
83	उल्लुन्दुर पेठ	-	श्री रामपाल जी जैन-देई
			श्री पारसमल जी ओस्तवाल-नैनवा
84	उत्तरामेयुर	-	श्री विमलचन्द जी मुथा-पल्लीपेट
			श्री महावीरचन्द जी तातेड़-चेन्नई
85	आवड़ी	-	श्री हेमन्त जी बम्ब

मध्यप्रदेश क्षेत्र

86	कालुखेडा	-	श्री भैरूलाल जी जैन-कुश्तला
			श्री मूलचंद जी जैन-कुश्तला
			श्री नेमीचंद जी जैन-कुश्तला
87	बागली	-	श्री अमृतलाल जी भटेवरा-इन्दौर
			श्री शांतिलाल जी जैन-हातोद
			श्री विमल जी खिवसरा-इन्दौर
88	आकोदिया मण्डी	-	श्रीमती मोहनी बाई जी जैन- आलनपुर
			सुश्री चित्रा जी जैन-सवाईमाधोपुर
			सुश्री निकिता जी जैन-कुण्डेरा
89	जबलपुर	-	श्री राकेश जी जैन-सुमेरगंज मण्डी
			श्री पदमचंद जी जैन 'गोटेवाला'-सवाईमाधोपुर
			श्री अंकित जी जैन 'करेला वाले'-सवाईमाधोपुर
90	सिद्धिकगंज मगरदा	-	श्री रामप्रसाद जी जैन, चौथ का बरवाड़ा
			श्री नंदलाल जी जैन, उनियारा
91	अंजड़	-	श्री धर्मचंद जी जैन-कुश्तला
			श्री रतन जी जैन-कुश्तला
92	बड़वानी	-	श्री रमेश जी भंसाली-फत्तेपुर
			श्री विजय जी रांका-फत्तेपुर
			अनिता जी नाहर-बड़वानी
93	नलखेड़ा	-	श्री महावीर जी जैन-कोटा
			श्री जगदीश जी जैन-कोटा
94	बेरछा	-	श्रीमती लीला जी सालेचा-जलगांव
			श्रीमती शकुन्तला जी तातेड़-बैतुल
			श्रीमती कमला जी गोठी-बैतुल
95	गरोठ	-	श्री बाबूलाल जी जैन-नई मण्डी
			श्री महावीर जी जैन-बजरिया

			सुश्री शानू जी जैन, सवाईमाधोपुर
			सुश्री आयुषी जी जैन, सवाईमाधोपुर
96	रायपुर	-	श्री मोहनलाल जी पीपाड़ा- इन्दौर
			श्री प्रकाश जी कोठारी- इन्दौर
			श्रीमती पदमा जी जैन-धार
97	हातोद	-	श्री सुभाष जी पावेचा, इन्दौर
			श्री मयंक जी भटेवरा-इन्दौर
			श्री राजमल जी कावड़िया-पिपलिया
98	बामनिया	-	श्री लक्ष्मीचंद जी जैन-छोटी कसरावड़
			श्री मयंक जी पावेचा-थादला
			श्री अंकित जी भंसाली-थादला
99	सिवनी मालवा	-	श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन-सवामईमाधोपुर
			सुश्री रिंकी जी जैन-अलीगढ़
			सुश्री समता जी जैन-सवाईमाधोपुर

मेवाड़ क्षेत्र

100	अरनोदा	-	श्री माणकचंद जी जैन-देई
			श्री पुखराज जी नाहर-पाटन
			श्री आशीष जी जैन-जयपुर
			श्री शुभम जी जैन-जयपुर
101	नवाणिया	-	श्री पारसचंद जी जैन-इन्द्रगढ़
			श्री महावीर जी जैन-कोटा
102	सुरपुर	-	श्री पवन जी जैन-अलीगढ़
			सुश्री पूजा जी जैन-अलीगढ़
			श्री चेतन जी जैन-अलीगढ़
103	छोटा भटवाड़ा	-	श्री योगेश जी जैन-हिण्डौन सिटी
			श्री धीरज जी जैन-हिण्डौन सिटी
104	सांवरिया	-	श्री कमलेश जी जैन-देई
			श्री बाबूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर
105	सहाड़ा	-	श्री पदमचंद जी जैन-बजरिया
			श्री कनिष्क जी जैन-बजरिया
106	पारसोली	-	श्री मानमल सा लसोड़-प्रतापगढ़
			श्री अम्बालाल सा चंडालिया-प्रतापगढ़
			श्री विनोद जी लसोड़-प्रतापगढ
107	दरीबा माइन्स	-	श्रीमती रतन बाई जी नाहर-बेगू

			श्री कविश जी जैन-जयपुर
			श्री सावन जी जैन-जयपुर
108	आजाद नगर	-	श्री पंकज जी चौधरी-भीलवाड़ा
109	आदित्यपुरम	-	श्री धर्मचंद जी जैन-खेरली
			श्री सौरभ जी जैन-खेरली
110	बाडी	-	श्रीमती सुजाता जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
			श्रीमती मंजू जी पोखरणा-नवाणिया
			सुश्री रानू जी जैन-सवाईमाधोपुर
111	धनोप	-	श्री मानसिंह जी खारीवाल-सहाड़ा
			श्री महावीर जी रांका-पहुणा
112	चान्दरास	-	श्री कन्नु जी जैन-जयपुर
			श्री आशीष जी जैन- जयपुर
113	भादसोड़ा	-	श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर
			श्री इन्द्रचंद जी कोठारी-भीलवाड़ा
			श्री निखिल जी जैन-जयपुर

मारवाड़ क्षेत्र

114	मेड़ता सिटी	-	श्री कुशलचंद जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर
			श्रीमती सुनीता जी मेहता-जोधपुर
			श्रीमती सायरबाई जी मेहता-जोधपुर
			श्री मुकेश जी जैन-सवाईमाधोपुर
115	बाड़मेर	-	श्री शिखरचंद जी छाजेड़-करही
			श्री विमल जी तातेड़-इन्दौर
116	आगोलाई	-	श्री राजकुमार जी जैन-जयपुर
			श्री यश जी जैन-जयपुर
117	भोपालगढ़	-	श्री पारसमल जी बांठिया-घोड़नदी
			श्रीमती पारस जी बांठिया-घोड़नदी
118	आसोप	-	श्री शांतिलाल जी सिंघवी-आसोप
			श्री कनकराज जी सुराणा-आसोप

उत्तरप्रदेश क्षेत्र

119	कानपुर	-	श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर
			श्रीमती शिल्पा जी मूथा-पाली
			सुश्री प्रियंका जी गांधी-जोधपुर
			श्री अखिल जी लुणावत-पीपाड़ सिटी

120 वाराणसी - श्री जम्बूकुमार जी जैन-जयपुर
श्री अशोक कुमार जी जैन-जयपुर
121 बलरामपुर - श्री विलास जी कोचर-फत्तेपुर
श्री निलेश जी वेदमूथा-नागद

अन्य क्षेत्र

122 मालवीय नगर(जयपुर)- डॉ चंचलमल जी चोरडिया-जोधपुर
श्रीमती रतन बाई जी चोरडिया-जोधपुर
श्री सुनील जी चौपड़ा-जोधपुर
123 कोलकाता - श्री हस्तीमल जी गुलेच्छा-ब्यावर
श्री नीरज जी सुराणा-ब्यावर
124 दूदू - श्री पदमचंद जी मुणोत-जयपुर
श्री पीयूष जी जैन-जयपुर
श्रीमती मधु जी चोरडिया-जयपुर
125 चलथान - श्री पारस जी गिड़िया-जोधपुर
श्री अजय जी हीरावत-मुम्बई
श्रीमती पुष्पा जी मेहता-पीपाड़ सिटी
श्रीमती प्रसन्न जी गांग-मुम्बई
126 डबीरपुरा(हैदराबाद) - श्री मनोज जी संचेती-जलगांव
श्री राजेन्द्र जी कांवडिया-जलगांव
127 बुहारी - श्री कैलाशचंद जी जैन-जयपुर
श्री संयम जी जैन-जयपुर
श्री अक्षय जी जैन-जयपुर

पोरवाल क्षेत्र

128 अलीगढ़ - श्री नेमीचंद जी कर्णावट-भोपालगढ़
श्री हस्तीमल जी बोहरा-पीपाड़ सिटी
श्री धीरज जी जैन-जोधपुर
129 दूनी - श्रीमती इंदिरा जी पारख-जयपुर
श्रीमती राजकुमारी जी मेहता-जयपुर
श्री अरिहंत जी जैन-जयपुर
श्री मुकुल जी जैन-जयपुर
130 श्योरपुर कलां - श्री अखिलेश जी नाहर-इंदौर
श्री विमल जी पोरवाल-इंदौर
131 कुश्तला - श्रीमती विमला बाई जी जैन-सवाईमाधोपुर

			श्री प्रमोद जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
132	पचाला	-	श्री सौभाग्यमल जी जैन-कुश्तला
			श्री रामदयाल जी सर्राफ-सवाईमाधोपुर
133	कुण्डेरा	-	श्री दिलरूपचंद जी भण्डारी-जोधपुर
			श्री अंकुर जी जैन-जयपुर
			श्री अखिल जी जैन-जयपुर
134	इन्द्रगढ़	-	श्री सुरेश जी जैन-खेरली
			श्री महेन्द्र जी जैन-खेरली
135	बाबई	-	श्री हुकमचंद जी जैन-हिण्डौन सिटी
			श्री मगनचंद जी जैन-फाजिलाबाद
136	देवली	-	श्री विरेन्द्र सा झामड़-जयपुर
			श्री पुखराज जी कुचेरिया-जयपुर
			श्री त्रिलोकचंद जी डागा-जयपुर
137	सुमेरगंज मण्डी	-	श्रीमती पुष्पा जी जैन-जयपुर
			श्रीमती रतन जी जैन-जयपुर
			श्रीमती निर्मला जी जैन-जयपुर
138	देई	-	श्री हरकचंद जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री नीरज कुमार जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
139	जरखोदा	-	श्रीमती कृष्णा जी भण्डारी-जोधपुर
			श्रीमती धर्मवती जी जैन-जयपुर
			सुश्री मोनाली जी लूंकड़-जोधपुर
140	चोरू	-	श्रीमती मोहनी देवी जी कच्छवाहा-जोधपुर
			श्रीमती विमला जी चौपड़ा-जोधपुर
			श्री विकास जी जैन-जयपुर

पल्लीवाल क्षेत्र

141	गंगापुर सिटी	-	श्रीमती शांता जी मोदी-जयपुर
			श्रीमती जया जी गोखरू-जयपुर
			श्री विपुल जी जैन-जयपुर
142	हिण्डौन सिटी	-	श्री धर्मेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री प्रेमबाबू जी जैन-सवाईमाधोपुर
143	करौली	-	श्री ज्ञानचंद जी जैन-नदबई
			श्रीमती सुशीला जी जैन-नदबई
144	वर्धमान नगर	-	श्री भागचंद जी सेठ-जयपुर

			श्री पदमचंद जी रांका–जयपुर
			श्री दीपेश जी जैन–जयपुर
			श्री गौरव जी जैन–जयपुर
145	पहरसर	–	श्री प्रसुन्न कुमार जी जैन–खौह
			श्री पदमचंद जी जैन–नदबई
146	खौह	–	श्री सम्पतराज जी बोथरा–जोधपुर
			श्री लक्ष्मीचंद जी छाजेड़–समदड़ी
147	लक्ष्मणगढ़	–	श्री त्रिलोकचंद जी जैन–गंगापुर सिटी
			श्री के.सी. जैन–जयपुर
148	मलपुरा (आगरा)	–	श्रीमती विमला जी जैन–खेरली
			श्रीमती गोमती जी जैन–नदबई
149	हरसाना	–	श्री अभिषेक जी नाहर– इन्दौर
			श्री राहुल जी तातेड़–इन्दौर
			श्री वीतराग जी नाहर–इन्दौर
150	मौजपुर	–	श्री महावीर प्रसाद जी जैन–गंगापुर सिटी
151	नसिया गंगापुर	–	श्री भागचंद जी जैन–नसिया कॉलोनी
			सुश्री ज्योति जी जैन–नसिया कॉलोनी
			सुश्री पूजा जी जैन–नसिया कॉलोनी
152	सहाड़ी	–	श्री महेन्द्र कुमार जी जैन–सहाड़ी
153	रसीदपुर	–	श्री कपूरचंद जी जैन–हिण्डौन सिटी
			श्री शीतल प्रसाद जी जैन–गंगापुर सिटी
154	बरगमा	–	डॉ. विमलचंद जी जैन–वर्धमान नगर
			श्री राजेश जी जैन–हिण्डौन सिटी
			सुश्री शेफाली जी जैन–हिण्डौन सिटी
155	वैर	–	श्री सुरेशचंद जी जैन–वैर

कुशलचंद गोटेवाला
संयोजक

राजेश भण्डारी
सचिव

विशिष्ट स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर जलगांव में

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 21 से 23 दिसम्बर 2013 को जलगांव में ''विशिष्ट स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर'' का आयोजन किया जा रहा है। उक्त शिविर में विशिष्ट प्रतिभावान एवं कुशल प्रशिक्षक तैयार करने हेतु चयनित स्वाध्यायियों को ही आमंत्रित किया गया है। इस शिविर में अंतगड़ सूत्र का शुद्ध वाचन तथा रोचक विवेचन का अभ्यास विद्वान् प्रशिक्षकों द्वारा कराया जायेगा। –संयोजक

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर के सवाईमाधोपुर चातुर्मास से धन्य हुआ सम्पूर्ण पोरवाल क्षेत्र

जन-जन के वल्लभकारी, परोपकारी, परमाराध्य, अनन्त करुणासागर, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पोरवाल क्षेत्र पर सदैव असीम कृपादृष्टि बरसती रही है। स्वयं पूज्य गुरुदेव यद्यपि चातुर्मास का लाभ पच्चीस वर्ष पश्चात् प्रदान कर पाये हैं, किन्तु क्षेत्र में चातुर्मास प्रदान करने का सदैव बराबर ध्यान रखा है। आपकी इस उपकारिता वाली भावना से यह क्षेत्र हमेशा ऋणी है, व सदा रहेगा। पूज्यश्री का चातुर्मास मिला, पर ऐसे लगा, पलक झपकते ही बीत गया। इसी पर कुछ पंक्तियाँ-

प्रवेश हुआ, पर्युषण आया, माधोनगरी में उल्लास छाया।
उपवास-दया-एकाशन-तेले, अठाई आदि तप हुआ सवाया।।
मासक्षपण जैसे तप को धारा, कोमल, कृश थी जिनकी काया।
वर्षावास में चली कड़ी बराबर, धर्म-ध्यान का ठाट लगाया।।
अन्तिम दिन में आ दी दस्तक, आखिर गुरुवर ने चरण बढ़ाया।
सोम अमावस जैसा दृश्य, सोम प्रतिपदा का दिन लाया।।
जयघोष का उद्घोषित स्वर, हाउसिंग बोर्ड तक नज़र आया।
चरवैति-चरवैति पालनार्थ, दृढ़व्रती गुरुवर्य ने वचन निभाया।।

पोरवाल क्षेत्र को जो चातुर्मास पिछले वर्षों में मिल जाना चाहिये था, वह विक्रम सम्वत् 2070 में ही क्यों प्रदान किया गया? इसमें इस क्षेत्र की पुण्यशालिता रही कि दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में चातुर्मास का योग बना एवं गुरु भगवन्त के 50 वें संयम-आराधना वर्ष के पावन प्रसंग को यहाँ पंचदिवसीय तप-त्याग, सिद्धि तप (एकाशन), वर्षीतप की आराधना कर भव्यता के साथ मनाया जा सका। श्रद्धा-भक्ति वाले इस क्षेत्र पर जो आपकी उदारता वाली महर रही है, उसके लिये यह क्षेत्र सदा उपकृत रहेगा।

दोनों महापुरुषों के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में साधना की विशेष आराधना हो, इस आशय वाली भावना महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने सभी संत-सतीवृंद की सेवा में निवेदन की। फलस्वरूप इस अवधि में समस्त चारित्रात्माओं ने आगम आराधना में श्रमसाध्य प्रयास करते हुए तपाराधना में भी विशेष पुरुषार्थ किया तथा

श्रावक-श्राविकाओं में भी विशेष प्रभावी प्रेरणा कर इस प्रसंग को अद्वितीय बना दिया। इस वर्ष में व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. द्वारा बेले-बेले की तपाराधना करना, लगभग चार वर्ष से अधिक समय तक श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. द्वारा बेले-बेले की तपस्या करना, अनेक संत-सतियों द्वारा 51-51 बेले, कई तेले, एकान्तर तप, नीवी तप, सिद्धि तप, आयंबिल तप आदि की आराधना करते हुए आगम आराधना के अन्तर्गत 29 आगमों तक का स्वाध्याय कर अर्पित अर्ध्य की श्रेणी में पराकाष्ठा का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। बारह व्रती श्रावक बनाने, तप की प्रेरणा से एकान्तर तप, एकाशन एकान्तर, सिद्धितप (एकाशन), दया, आयंबिल, संवर, उपवास आदि विविध तपस्या में गुणात्मक वृद्धि आयी है। पाली में 41 एकान्तर तप की आराधना का होना विशेष उल्लेखनीय है। शीलव्रतियों की शृंखला में सैकड़ों शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए। व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. ने इस वर्ष में 125 शीलव्रती बनाकर जो धर्म प्रभावना की है वह अनुमोदनीय है। पूज्य आचार्य भगवंत के पावन मुखारविन्द से इस वर्ष में 168 शीलव्रत के खंध हुए। एकाशन के सिद्धितप शिखर दिवस तक चलें, ऐसी प्रेरणा से 191 एकाशन के सिद्धि तप का होना, शिखर दिवस पर 3250 एकाशन व्रत का एवं 5-5 सामायिक की साधना लगभग 4000 व्यक्तियों द्वारा होना, अपने आपमें ऐतिहासिक एवं अनुपम उपलब्धि है।

विविध कार्यक्रम : एक दृष्टि में

30 सितम्बर एवं 1 अक्टूबर को जैन विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ। 1 अक्टूबर, 2013 को श्रीमती पिंकी मनीष जी जैन, जवाहरनगर, बजरिया के मासक्षपण (31 दिवसीय) तप के प्रत्याख्यान हुए। 2 से 6 अक्टूबर को स्वाध्यायी गुणवत्ता शिविर का आयोजन। उसमें 198 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। 6 अक्टूबर को श्रीमती सोनू जी व श्रीमती राजुलजी, प्रतापनगर, जयपुर ने पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविंद से 27 में 3 मिलाकर 30-30 की तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। 17 अक्टूबर को श्रीमती दर्शना राजेन्द्र जी चौधरी, हाउसिंग बोर्ड के मासक्षपण (31 दिवसीय) के प्रत्याख्यान हुए। 18 अक्टूबर को व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी व महासती श्री सुमनलता जी म.सा. की सन्निधि में 234 बहिनों ने रात्रि जागरण करते हुए 15-15 सामायिक की साधना एक साथ एक आसन में की। 27 अक्टूबर को पूज्य गुरुदेव ने प्रवचन में फरमाया कि यहाँ हर रविवार को संवत्सरी के समान भक्तों की उपस्थिति रहती है। 3 नवम्बर को भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर सैकड़ों उपवास व कई तेले की तपस्याएँ हुईं। 4 नवम्बर को गौतम प्रतिपदा के प्रसंग पर पूज्य गुरु भगवन्त ने गणधर गौतम की महिमा का गुणगान करते हुए व्याख्यान फरमाया।

5 नवम्बर को श्रीमती रजनी पदम जी गोटावाले, सवाईमाधोपुर के मासक्षपण (31 दिवसीय) के प्रत्याख्यान हुए।

8 नवम्बर को आचार्यश्री की दीक्षा अर्द्धशती की सम्पूर्ति (कार्तिक शुक्ला 6) के उपलक्ष्य में संघ-स्तर पर एकाशन व्रत के 2500 प्रत्याख्यान के लक्ष्य से अधिक 3250 एकाशन व्रत की साधना हुई, 5-5 सामायिक करने का सभी उपस्थित भक्तों का लक्ष्य रहा। इसी दिन सम्मान समारोह में गुणीजनों का अभिनन्दन के साथ बहुमान किया गया। **'गुण सौरभ गणि हीरा'** पुस्तक एवं जिनवाणी विशेषांक **'आगमादर्श आचार्य श्री हीरा'** का विमोचन हुआ।

9 नवम्बर को दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में एकान्तर तप की साधना करने वालों के पारणे का कार्यक्रम रखा गया। इस प्रसंग पर 139 तपस्वी साधक-साधिकाओं ने भाग लिया। संघ के पदाधिकारियों ने उनका पारणा करवाया एवं बहुमान भी किया। दोपहर में साधारण सभा की बैठक हुई, जिसमें जिज्ञासाओं का समाधान कर प्रस्ताव पारित हुए।

10 नवम्बर को स्वप्निका की दोपहर में मुख्य परीक्षा हुई। महावीर भवन में 800 से अधिक परीक्षार्थी बैठे। 16 नवम्बर को श्रीमती मंजू-कुशल जी गोटेवाले, सवाईमाधोपुर के मासक्षपण (31 दिवसीय) तप के प्रत्याख्यान पूर्ण हुए।

17 नवम्बर को वर्षावास का आखिरी दिवस- पूज्य गुरु भगवन्त के चातुर्मास हेतु आभार की अभिव्यक्ति एवं उनके मंगल स्वास्थ्य की कामना की गई। चातुर्मासी चौमासी के अनुसार तप-त्याग एवं धर्माराधना सम्पन्न हुई। सुश्री समता जी सुपुत्री स्व. श्री दानमल जी हाड़ोत्या, सवाईमाधोपुर के मासक्षपण (31 दिवसीय) तप के प्रत्याख्यान।

18 नवम्बर को प्रातः 7.30 पर व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. का रामद्वारा की ओर विहार हुआ। प्रातः 10.30 पर पूज्यवर्य शनैः-शनैः श्री चरण बढ़ाते विशाल जनमेदिनी (लगभग 4000 से अधिक) के जयघोष के साथ हाउसिंग बोर्ड की धरा पर पधारे। स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से हाउसिंग बोर्ड विराज कर वीतराग वाणी का अमृतमय पान करवा रहे हैं।

दर्शन-वन्दन हेतु उपस्थित कतिपय संघ एवं श्रद्धालु-

1. वीर परिवार से- श्री शांतिलाल जी, कांतिलाल जी आंचलिया-सोरापुर, श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन-बड़ौदाकान, श्री मदनसिंह जी भाटी-वारणी, श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल-जलगांव, श्री शिवदयाल जी जैन-हरसाना, श्री उम्मेदराज जी लोढ़ा-जोधपुर, श्री राजेश जी बोहरा-चेन्नई, श्री अमरचन्द जी लोढ़ा, श्री इन्दरचन्द जी गाँधी, श्री भोपाल

चन्द जी सेठिया-जोधपुर,

2. **संघ समूह में-** हैदराबाद, नीमच, दूदू, मैसूर, बैंगलोर, खेड़ली, चेन्नई, सोजत, जरखोदा, सुमेरगंजमण्डी, प्रतापनगर-जयपुर, अलीगढ़-रामपुरा, सोरापुर, अहमदाबाद, लासूर, नदबई, बंगारपेट, के.जी.एफ., गंगापुर, मण्डावर, भरतपुर, जोबनेर, मूंदी, चांगोटोला, बालाघाट, वेल्लूर, पाली, मदनगंज, ब्यावर, देई, कोटा, होलनांथा, रतलाम, जलगांव, पालनपुर, भावी, हिण्डौन, अहमदनगर आदि।

3. **श्रद्धालुजन-** श्री केशरीमल जी बुरड़-बैंगलोर, श्री गुलाबचन्द जी कटारिया, प्रतिपक्ष नेता भा.ज.पा-जयपुर, श्री किशनलाल जी कोठारी, श्री छगनलाल जी लुणावत-बैंगलोर, श्री लोकेश जी जैन-आई.आर.एस., सुश्री मोना जी जैन-आई.ए.एस., श्रीमती दीया कुमारी-भा.ज.पा. उम्मीदवार, श्री दानिश अबरार-कांग्रेस उम्मीदवार, डॉ. श्री किरोड़ी लाल जी मीणा-सांसद, श्री अमृतलाल जी सुराणा-हुबली। सवाईमाधोपुर से पूर्व विधायक श्री हंसराज जी शर्मा, श्री सूरज जी चौधरी, श्री हीरालाल जी चौधरी, श्री राजमल जी चौधरी ने पूरे चातुर्मास काल का सुलाभ लिया।

जन-जन के लिए कल्याणकारी रहा उपाध्यायप्रवर का कोसाना चातुर्मास

इस वर्ष अहिंसा नगरी कोसाना के निवासी बहुत ही भाग्यशाली रहे कि उन्हें चौथे आरे की बानगी, सरलमना पूज्य उपाध्याय भगवन्त **श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. प्रभृति सन्त भगवन्तों का चातुमार्सिक सुखद सान्निध्य प्राप्त हुआ। सन्तों की निर्दोष संयमचर्या, निर्मल-साधना, ज्ञान-प्रभा एवं प्रवचन-प्रभावना से सभी ग्रामवासी एवं बाहर से आने वाले दर्शनार्थीजन प्रफुल्लित एवं प्रमुदित थे। एक छोटे से गाँव में उनके वर्षावास से ग्रामवासियों के वर्षों के संजोए सपने साकार हो गये।

वर्षावास में प्रारम्भ से अन्त तक धार्मिक गतिविधियाँ एवं साधनाएँ सम्पन्न हुईं। सन्त भगवन्तों का यह अतिशय था कि दुर्बल काया वाले, जिन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की कि वे भी कभी अट्ठाई या मासक्षपण कर सकेंगे, उन्होंने भी अपनी दीर्घ तपस्याएँ सानन्द सम्पन्न की। वस्तुतः यह साधु-संतों के संयमित जीवन का अचिंत्य प्रभाव था।

कोसाना में यूं तो स्थायी रूप से दो ही घर जैनों के हैं, परन्तु चातुर्मास का लाभ लेने के लिये बाहर रहने वाले कोसाना मूल निवासी चार महीने का प्रवास करने यहाँ आ गये। बच्चों से लगाकर युवा और वृद्ध, संतों के सान्निध्य में अपनी क्षमतानुसार साधना में रत रहने लगे। यहाँ धर्म-ध्यान का अपूर्व ठाट लग गया। बाहर से आने वाले दर्शनार्थी जब यहाँ की

प्रवचन सभा में जैन-अजैनों की भारी उपस्थिति देखते, अनेकों की त्याग-तपस्या का क्रम देखते, लोगों में ज्ञानार्जन का उत्साह देखते, लोगों की नित्य नये व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण करने की भावनाएँ देखते तो उन्हें प्रत्येक दिन पर्व सा लगता। संतों के संयमित जीवन और केश-लोच की प्रक्रिया देखकर लोगों में सहज ही यह भावना जगी कि हमें भी इस परीषह के अनुभव से गुजर कर देखना चाहिए। देखते-देखते 33 लोगों ने केश-लोच करवाये। पूज्य उपाध्याय भगवन्त ने श्रावकों द्वारा लोच करने पर अपनी स्वाभाविक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उनको उद्बोधना देते हुए कहा-"भाई! लोच जैसा कठिन कार्य आपने कर लिया। अब तो मोह-मुंडन शेष रहा है, जिसके लिए स्वयं को तैयार कर लो।"

गाँव भले ही छोटा हो, परन्तु धर्माराधना में यह उत्साह से भरा रहा। क्या बालक, क्या युवा, क्या वृद्ध और क्या महिलाएँ, सभी तपस्या में एक-दूसरे से आगे रहने का प्रयास कर रहे थे। कई जनों ने आठ से लगाकर मासक्षपण तक की तपस्या करके अपनी कर्म-निर्जरा कर जिनशासन की महती प्रभावना की। जैनेतर लोगों ने भी उपवास, तेला और अट्ठाई करके जिनशासन में अपनी आस्था व्यक्त की। ज्ञानार्जन के क्षेत्र में अनेकों ने प्रतिक्रमण अर्थ सहित सीखा और याद किया एवं आगमज्ञान की अपनी जिज्ञासाओं को तृप्त किया। ज्ञानार्जन का वातावरण दूसरों के लिये प्रेरणादायी रहा। प्रवचन सभा में संतों की वैराग्योत्पादक भगवद्वाणी का श्रवणकर श्रोता भाव विभोर हो जाते थे। प्रवचन में कभी जितेन्द्रमुनिजी तो कभी सन्त लोकचन्द्र जी पधारते। नित्य-प्रति सदाबहार वाणी बरसाने वाले गौतममुनि जी के प्रवचन श्रोताओं के अन्तर्मन को छू जाते। पूज्य उपाध्याय भगवन्त भी अपने नपे तुले अल्प शब्दों में यदा-कदा प्रवचन सभा में पधारकर अपना अमृतमय उद्बोधन प्रदान करते रहते थे। मध्याह्न में आगम वाचना का क्रम निरन्तर चलता था, जिसमें जिज्ञासुजनों को आगम के गूढ रहस्यों का समाधान भी दिया जाता था। आगम वाचनी के पश्चात् श्रद्धेय दर्शनमुनिजी के पास ज्ञान सीखने वालों का क्रम बना रहता था। उन्होंने प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल, नित्य नियम करवाकर बच्चों एवं युवाओं को सुंस्कारों से समृद्ध किया।

बाहर से आये दर्शनार्थियों के लिए, स्थानीय लोगों ने उनके आतिथ्य में पलक-पाँवड़े बिछा दिये। दर्शनार्थियों के निरन्तर आवागमन को देखकर सारे गाँव में एक ही बात की चर्चा होती थी कि कितने त्यागी-वैरागी महान् संत हैं कि उनके दर्शन के लिये दूर-दूर से लोग बड़ी संख्या में लगातार आते रहते हैं। संक्षेप में, उपाध्याय भगवन्त का कोसाना में यह चातुर्मास सबके लिये तप, ज्ञान, सेवा आदि के लिए अविस्मरणीय बना रहेगा। पूज्य उपाध्यायप्रवर एवं संतवृन्द का कोसाना से 26 नवम्बर को पीपाड़ की ओर विहार हुआ है।

महासती मण्डल के सान्निध्य में सम्पन्न चातुर्मासों में धर्म-ध्यान की रिपोर्ट

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका **महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में पर्युषण पर्व की साधना दो स्थानों पर सम्पन्न हुई। शक्तिनगर में साध्वीप्रमुखा जी आदि ठाणा 5 का तथा नेहरू पार्क के सामायिक-स्वाध्याय भवन में व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 का सान्निध्य प्राप्त हुआ। भाई-बहिनों में नवरंगी की साधना हुई। पौषध, दया, प्रतिक्रमण, उपवास, बेला-तेला आदि के साथ अनेक तपस्याएँ हुई। 11 सितम्बर को सामूहिक क्षमापना दिवस मनाया गया। सितम्बर माह में चेन्नई, बैंगलोर, कानपुर, जलगांव, पाली, सवाईमाधोपुर आदि स्थानों के संघों ने दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। 11 से 18 अक्टूबर तक आयंबिल ओली की आराधना हुई, जिसमें 14 अक्टूबर को 151 नीवीं तप सम्पन्न हुए। शरद् पूर्णिमा की रात्रि में 50 श्रावकों तथा 100 श्राविकाओं ने 15-15 सामायिके कीं। भूधर जी म.सा. का पुण्य-दिवस तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। दीपावली के अवसर पर 1 से 5 नवम्बर तक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। 1 नवम्बर को सामूहिक रूप से 5-5 सामायिक 90 व्यक्ति ने करके, धनतेरस को धर्मतेरस बना दिया। दीपावली के दिन 8 तेले तथा अनेक उपवास हुए। 7 नवम्बर को ज्ञान पंचमी पर धर्मचक्र की आराधना हुई। 8 नवम्बर को पूज्य गुरुदेव **आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती के प्रसंग पर सामूहिक एकाशन तप किये गये।** 9 नवम्बर को 25 सिद्धि तप करने वाले साधकों का सामूहिक पारणा हुआ। 17 नवम्बर को लोकाशाह जयन्ती एवं चौमासी पर्व मनाया गया। 18 नवम्बर को शक्तिनगर से महासती मण्डल ने दाधीच नगर की ओर विहार किया।

खेरली- विदुषी **महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में वर्षावास में धर्मध्यान का ठाट लगा रहा। महासती वर्या की प्रेरणा से चार आजीवन शीलव्रती बने- 1.श्रीमती लीलावती- श्री दुलीचन्द जी जैन-केसरा वाले, 2. श्रीमती गंगाबाई-श्री सतीश जी खण्डेलवाल-खेरली, 3. श्रीमती गीतादेवी-श्री सिद्ध किशोर जी जैन-मौजपुर वाले, 4. श्रीमती निर्मला-श्री रमेशचन्द जी जैन-शेरपुर वाले। आयम्बिल, एकाशन एवं तेले की लड़ी बराबर चलती रही। चातुर्मास में 750 एकाशन, 190 आयंबिल, 150 उपवास, 25 बेला, 150 तेला और 5,7 की तपस्या के साथ 20 अठाई तथा 9, 11 एवं 21 की तपस्याएँ भी हुई। सिद्धि तप की आराधना हुई। श्री अमरचन्द जैन ने चातुर्मास के प्रारम्भ से ही एकाशन तप किये। श्री धर्मचन्द जी जैन ने 25 एकाशन तप किये। श्रीमती मधु जैन धर्मसहायिका श्री महेशचन्द जी जैन ने 31 दिवसीय मासक्षपण तप तथा

श्रीमती उषा जैन धर्मसहायिका श्री श्रीचंद जी जैन-कालवाड़ी ने 21 दिवसीय तप सम्पन्न किया। इनके अतिरिक्त 4 एकाशन मासक्षपण के तप सम्पन्न हुए। कई बालक-बालिकाओं ने महासती जी की प्रेरणा से पटाखे नहीं चलाने का नियम लिया। महासती मण्डल का विहार नदबई की ओर हुआ है।

भरतपुर- विदुषी **महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा 5 के चातुर्मास का लाभ गोपालगढ़ एवं बासनगेट वासियों को प्राप्त हुआ। प्रथम एवं तृतीय माह में महासती मण्डल गोपालगढ़ स्थानक में विराजे तथा द्वितीय एवं चतुर्थ माह में वासनगेट स्थित स्थानक में विराजे। चातुर्मास के प्रारम्भ में धर्म चक्र से धर्म का माहौल बना। श्रावण माह में श्रावक-श्राविकाओं ने भिक्षु दया, एकाशन, नीवी, उपवास आदि के साथ पाँच दिन साधना की। श्री अशोक जी जैन ने 17, श्रीमती कुसुमलता जी जैन ने 15, राजकुमारी जी ने 11, पाँच बहिनों ने 9, पन्द्रह भाई-बहिनों ने 8 की तपस्याएँ की। पचौला, चौला, बेला उपवास के साथ 35 तेले की तपस्याएँ हुई। शरद पूर्णिमा पर लगभग 50 श्राविकाओं एवं बालिकाओं ने रात्रि में 15 सामायिकें कर धर्म जागरणा की। 27 से 29 अक्टूबर तक महिला संस्कार जागृति शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 25 बोल, 67 बोल, सुपच्चक्खाण, दुपच्चक्खाण, सवणे नाणे, सामायिक-प्रतिक्रमण आदि का ज्ञान कराया गया। शिविर में विभिन्न रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुई। प्रत्येक रविवार को बालक-बालिकाओं का बाल-संस्कार शिविर आयोजित हुआ, जिसमें बालकों ने उत्साह से भाग लिया। कई बच्चों ने सामायिक सीखी एवं प्रतिक्रमण सीखा। दीपावली पर पटाखा नहीं चलाने हेतु प्रत्याख्यान किए। **दीक्षा-अर्द्धशती के अवसर पर 73 श्रावक-श्राविकाओं ने स्वप्निका के नियमों को अंगीकार किया।** 10 नवम्बर को 55 व्यक्तियों ने परीक्षा दी। श्रीमती उषा जी जैन एवं श्रीमती पुष्पा जी जैन ने वर्षीतप किए तथा 13 एकाशन सिद्धि तप सम्पन्न हुए। महासती मण्डल ने **6 से 8 नवम्बर तक तेले की तपस्या कर दीक्षा-अर्द्धशती के समापन अवसर पर श्रद्धा अर्पित की। सामूहिक रूप से भी 12 तेले की तपस्या हुई तथा सिद्धि तप, एकाशन आदि अनेक तप हुए।** तीनों दिन पौषध संवर की साधना हुई। 8 नवम्बर को पाँचों महासतियाँ जी ने पूज्य गुरुदेव का गुणगान कर सुदीर्घ संयम-जीवन की मंगल कामना की। सामूहिक भोजन में जूठा नहीं डालने का संकल्प कराया गया। **6 दम्पतियों ने** आजीवन शीलव्रत अंगीकार किए- 1. श्रीमती उषा-धूपचंद जी जैन (संजय नगर), 2. श्रीमती वीना-ओमप्रकाश जी (गोपालगढ़), 3. श्रीमती स्नेहलता-अमरचन्दजी जैन (गोपालगढ़), 4. श्रीमती आशा-बाबूलालजी (गोपालगढ़), 5. श्री सतीशचन्द जी जैन (वासनगेट), 6. श्री निर्मलकुमार जी

जैन (राजेन्द्र नगर)। -*धर्मेन्द्र जैन*

गुलाबपुरा- व्याख्यात्री **महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा के सान्निध्य में चातुर्मास का शुभारम्भ तेले की तपस्या के साथ हुआ। महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3 पर्युषण पर्व पर हुरड़ा पधारे। दोनों स्थानों पर धर्माराधना संतोषप्रद रही। पचरंगी तथा 125 तेलों के साथ 9,8,6,5 आदि की अनेक तपस्याएँ हुई। उपवास, दया, संवर, पौषध का ठाट रहा। प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। ओली पर्व में आयंबिल नीवीं की अच्छी आराधना हुई। आचार्यप्रवर के **दीक्षा अर्द्धशती दिवस को जागृति दिवस के रूप में मनाया गया।** इस दिन 51 तेले तथा 300 एकाशन तप सम्पन्न हुए। लगभग 125 व्यक्तियों ने स्वप्निका पुस्तिका की प्रतियोगिता में भाग लिया। महिला मण्डल का धार्मिक शिविर आयोजित किया गया जिसमें 50 बहिनों ने ज्ञानार्जन किया। चातुर्मास के समापन पर अनेक भाई-बहिनों ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए महासती मण्डल के प्रति आभार ज्ञापित किया। महासती मण्डल का विहार जयपुर की ओर चल रहा है। जयपुर में महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. के शल्य चिकित्सा की संभावना है।

मानसरोवर, जयपुर- व्याख्यात्री **महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा.** आदि ठाणा के सान्निध्य में चातुर्मास उपलब्धि पूर्ण रहा। धर्माराधना एवं तपाराधना के साथ ज्ञानाराधना के भी कार्यक्रम सम्पन्न हुए। चातुर्मास में निरन्तर उपवास, एकाशन एवं संवर की आराधना होती रही। श्री रघुवीर प्रसाद जी जैन-महारानी फार्म एवं श्री जितेन्द्रकुमार जी शाह-मानसरोवर ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। चातुर्मास में 60 तेले की तपस्या सम्पन्न हुई। 8 अठाई, 9 दिवसीय एवं 10 दिवसीय तप भी सम्पन्न हुए। जैन धर्म का मौलिक इतिहास, अंतगडसूत्र आदि पर पयुर्षण पर्व में 8 दिन परीक्षाएँ आयोजित की गई। कई बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया। सुश्री निधि बिरानी ने चार दिनों में ही प्रतिक्रमण याद कर लिया। गोरी विहार सिद्धार्थ मार्ग के जैन-जैनेतर बच्चों ने दीपावली पर पटाखे नहीं चलाने का व्रत स्वीकार किया। **पूज्य आचार्यप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती के त्रिदिवसीय कार्यक्रम में उपवास, तेला, संवर, सामूहिक एकाशन, युवकों ने उपवास एवं 5-5 सामायिक की।** पोस्टकार्ड पर 'जय गुरु हीरा-युग-युग जीओ जय गुरु हीरा' लिखने की प्रतियोगिता में 583 बार सुन्दर एवं स्वच्छ अक्षरों में लिखकर सुश्री आभा जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 18 नवम्बर को महासती मण्डल का विहार श्री बुद्धिप्रकाश जी लोढ़ा के यहाँ हुआ। इसके अनन्तर मानसरोवर, महारानी फार्म, महावीर नगर को फरसते हुए महासती मण्डल मालवीय नगर स्थानक पधार गये हैं।

पीपाड़ शहर- व्याख्यात्री **महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा.** आदि ठाणा 5 के सान्निध्य

में तपस्याओं का क्रम चातुर्मास के प्रारम्भ से ही चालु रहा। श्रीमती लीलाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी कटारिया, श्रीमती किस्तुर जी बाघमार, श्रीमती रेखा जी धर्मपत्नी श्री पदम जी लुणावत ने मासक्षपण तप पूर्ण किया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने 25, 15,11,9, अठाई एवं तेले की तपस्यायें की। युवारत्न श्री महेन्द्र जी सुपुत्र श्री धनेन्द्र जी चौधरी ने उपवास का सिद्धि तप किया। **दीक्षा-अर्द्धशती के अन्तर्गत 61 एकाशन सिद्धि तप एवं 15 चन्द्रकला तप सम्पन्न हुए।** श्री सुमतिचन्द जी मेहता, श्रीमती सुमित्रा जी चौधरी धर्मपत्नी श्री धनेन्द्र जी चौधरी एवं श्रीमती अनिता जी भण्डारी धर्मपत्नी श्री प्रेमराज जी भण्डारी ने एकान्तर वर्षीतप किया। शरद पूर्णिमा पर लगभग 130 श्रावक-श्राविकाओं ने धर्मचर्चा, अंताक्षरी एवं भजन के साथ सामूहिक सामायिकें की। उपाध्यायप्रवर का चातुर्मास निकट होने से यहाँ विभिन्न ग्राम-नगरों के श्रावकों एवं संघों का आवागमन बना रहा। संघ ने आवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था की। महासती मण्डल का 18 नवम्बर को कोसाना की ओर विहार हुआ है।

अयनावरम्- व्याख्यात्री **महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि महासतीवृन्द के सान्निध्य में चातुर्मास काल में तप-त्याग एवं ज्ञानाराधना की अद्भुत प्रभावना हुई। तप-त्याग की लड़ी लग गई। महासती जी के मुखारविन्द से बड़ी-बड़ी तपस्याएँ भी सहज सम्पन्न हुई। पूज्य महासती जी के प्रवचनों की चर्चा महानगर के उपनगरों में भी होती रहती है। आपके प्रवचन मार्मिक एवं धार्मिक होते हैं। महासती श्री भाग्यप्रभा जी की कक्षा 'एक कदम धर्म की ओर' से युवावर्ग में एक नई जागृति का संचार हुआ। इन्द्रप्रस्थ विला में युवाओं की उपस्थिति से सभागार खचाखच भरा रहा। इस कक्षा ने अनेक युवकों को धर्म से जोड़ा है। उनके जीवन में विनय-विवेक, सरलता-सहजता, स्नेह, सहयोग जैसे सद्गुणों का विकास हुआ है। महासती श्री निष्ठा जी की मधुर आवाज ने भक्तों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रत्येक माह के अंतिम दो दिन 'कर्मग्रंथ शाला' की कक्षा लगती रही, जिसमें करीब 100 भाई-बहिनों की उपस्थिति रहती थी। मधुकर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. का जन्मदिवस, पूज्यप्रवर श्री पन्नालाल जी म.सा. का जन्मदिवस महासती मण्डल के सान्निध्य में तप-त्याग के साथ मनाया गया। यहाँ पर आयंबिल, तेले एवं बीयासना की लड़ी लगभग 2 माह तक चली। पयुर्षण पर्व के 8 दिन हजारों गुरु भक्तों से इन्द्रप्रस्थ का सभागार खचाखच भरा रहा। संवत्सरी के दिन लगभग 700 भाइयों ने एवं 1000 बहिनों ने प्रतिक्रमण किया। विरक्ता बहन शिल्पा जी सुराणा ने 31 दिवसीय उपवास का मासक्षपण तप किया। लगभग **500 बहिनों ने आत्मविशुद्धि आराधना के अन्तर्गत अपने पापों की आलोचना की।** शरद् पूर्णिमा की रात्रि में 15 सामायिक की साधना हुई। प्रत्येक

रविवार को बालकों का शिविर आयोजित हुआ। यहाँ पर 71 तेलों की तपस्या, 88 अठाई की तपस्या, दो 31 दिवसीय, एक 33 दिवसीय, दो 34 दिवसीय मासक्षपण तप हुए। 29,22, 17,16,15,11,9 आदि दिनों की भी अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुई।

आवड़ी (चेन्नई)- व्याख्यात्री **महासती श्री चारित्रलता जी म.सा.** आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में चातुर्मास के प्रारम्भ से 8 दिन नवकार मंत्र का जाप हुआ। 04 से 11 अगस्त तक अष्ट पद आराधना हुई, जिसमें 55 श्राविकाओं ने एवं 13 श्रावकों ने भाग लिया। पर्युषण पर्व में 1 नवरंगी हुई तथा 8 दिन अखण्ड जाप चला। पूरे चातुर्मास में तेले एवं आयंबिल की लड़ी चली। नवपद की ओली में 43 भाई-बहिनों ने भाग लिया। **आचार्यप्रवर की दीक्षा-अर्द्धशती के उपलक्ष्य में 45 तेले एवं 145 एकाशन एवं बियासन हुए।** श्रीमती सुवाबाई बोथरा ने 52 दिवसीय तथा श्री मदनलाल जी बोहरा एवं मैनाबाई जी बोहरा ने 35 दिवसीय तथा श्री हीराचन्द्र जी रांका ने 33 दिवसीय तप किया। बालकों ने प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल कण्ठस्थ किये तथा महिलाओं ने थोकड़े सीखे। 5 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया तथा अन्य कई छोटे-बड़े नियम अंगीकार किये।

निफाड़ (नाशिक)- व्याख्यात्री **महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.** आदि ठाणा 5 के पावन सान्निध्य में तपस्या का क्रम निरन्तर बना रहा। एक मासक्षपण तप, दो 15 की तपस्या, 9 अठाई के साथ 60 तेले की तपस्याएँ हुई। चातुर्मास प्रारम्भ से चातुर्मास समापन तक नियमित रूप से आयंबिल की लड़ी, तेले की लड़ी, एक घण्टे नवकार मंत्र का जाप, प्रत्येक रविवार को बच्चों का शिविर तथा दोपहर में बहनों के ज्ञानाराधन का क्रम चलता रहा। पर्युषण पर्व में 13 घण्टे नवकार मंत्र का जाप हुआ। विविध विषयों पर प्रवचन हुए। कई प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई। 12 से 17 अक्टूबर तक आयोजित महिला शिविर में 67 श्राविकाओं और बड़ी बालिकाओं ने भाग लिया। 1 नवरंगी और 4 पचरंगी सम्पन्न हुई। 13 महिलाओं ने 1 शास्त्र, 1 थोकड़ा तथा विधि सहित प्रतिक्रमण पूर्ण किया। ज्ञानाराधना में सुख-विपाक सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, भक्तामर स्तोत्र, प्रतिक्रमण, 25 बोल, नवतत्त्व, लघुदण्डक, पुच्छिसु णं, गमा का थोकड़ा आदि सिखाए गए। शरद पूर्णिमा पर 15 सामायिक तथा संवर-पौषध सम्पन्न हुए। शीलव्रत के प्रत्याख्यान भी हुए। 27 अक्टूबर से 5 नवम्बर तक बालकों का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 130 बच्चों ने भाग लिया। **आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. और उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष में निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 57 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता में 19 तथा भजन प्रतियोगिता में 36 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।** प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता भी

आयोजित हुई। निफाड़ के निकटवर्ती क्षेत्र के बहुत से श्रावक-श्राविकाओं ने निफाड़ में आकर धर्मध्यान का लाभ लिया। निफाड़ के श्रावकों का मानना है कि महाराष्ट्र के क्षेत्र में विगत 10 वर्षों में रत्नसंघ के साधु-साध्वियों का विचरण बहुत ही कम हुआ है। इस चातुर्मास से सेवा, स्नेह, संगठन, सौहार्द आदि के साथ अच्छी धर्मप्रभावना हुई है।

नदबई- व्याख्यात्री **महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.** का आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में धर्मध्यान का ठाट रहा। एकाशन, बियासन, आयंबिल, उपवास, तेला, अठाई, संवर एवं सामायिक की लड़ी पूरे चार माह चली। शरद् पूर्णिमा को 65 महिलाओं ने संवर साधना की। महासती मण्डल का भरतपुर की ओर विहार हुआ है।

मण्डावर महुआ रोड- विदुषी **महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा 5 की सन्निधि में ज्ञानाराधन एवं तपराधन का क्रम बराबर बना रहा। एक मासक्षपण तप, 10 अठाई तथा 9,10 के कई तप हुए। चातुर्मास के प्रारम्भ से तेले की लड़ी चलती रही। कुल 70 तेले हुए, 10 आजीवन शीलव्रती बने। बेला, उपवास, आयंबिल, दया-संवर अच्छी संख्या में हुए। चातुर्मास से मण्डावर संघ अत्यधिक प्रसन्न रहा।

प्रतापनगर-जयपुर- व्याख्यात्री **महासती श्री रुचिता श्रीजी म.सा.** आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में यह चातुर्मास क्षेत्र के लिए जागरण का चातुर्मास रहा। नवदीक्षिता महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा. एवं महासती श्री संवेगश्री जी म.सा. के मासक्षमण तप सम्पन्न हुए। प्रतापनगर क्षेत्र की ही दो श्राविकाओं श्रीमती राजुल जी जैन धर्मसहायिका श्री सुनील जी जैन, खेरली एवं श्रीमती सोनु जी जैन धर्मसहायिका श्री मुकेश जी जैन, खेरली ने 34 दिवसीय तप पूर्ण किया। 31 तक के प्रत्याख्यान आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से ग्रहण किए। दोनों श्राविकाएँ महासती श्री शशिप्रभा जी की सांसारिक पक्ष की भाभी हैं। 13 अक्टूबर को आयोजित पूर की प्रवचन सभा में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमल जी दुग्गड़, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर के मंत्री श्री विमलचन्द जी डागा, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन, पोरवाल संघ के अध्यक्ष श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन-कोटा, वीर भ्राता श्री जिनेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री प्रमोद जी मोहनोत-जयपुर, प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव, श्री प्रकाश जी सालेचा-जोधपुर ने तप-अभिनन्दन समारोह में विचाराभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान जयपुर के विद्यार्थियों द्वारा तप-विषयक संवाद प्रस्तुत किया गया। तपस्विनी श्राविकाओं का श्री श्वेताम्बर जैन संस्था, सांगानेर प्रतापनगर द्वारा स्वागत अभिनन्दन किया गया। 13 अक्टूबर उपवास दिवस के रूप

में तथा 23 अक्टूबर **एकाशन दिवस** के रूप में मनाया गया तथा श्री विमलचन्द जी डागा, श्री जिनेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री पारसचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

पाली- व्याख्यात्री **महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में अष्टमी, चतुर्दशी आदि बड़ी तिथियों पर उपवास, पौषध एवं दया संवर की आराधना बराबर चलती रही। शरद पूर्णिमा की रात्रि में 90 बहिनों ने जागरण किया तथा 70 बहिनों ने 15-15 सामायिकें की। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की **दीक्षा-अर्द्धशताब्दी के उपलक्ष्य में 6 आजीवन शीलव्रत, 15 एकवर्षीय शीलव्रती, 20 आजीवन रात्रि-भोजन त्यागी, 70 एकवर्षीय रात्रि-भोजन त्यागी, 100 एकवर्षीय अचित्त जल त्यागी, 10 आजीवन जमीकंद त्यागी, 30 एक वर्ष तक जमीकंद त्यागी बने।** प्रतिदिन एक घण्टा मौन रखने हेतु 20 व्यक्तियों ने, प्रतिदिन 1 सामायिक करने हेतु 40 व्यक्तियों ने, गुटखा सेवन त्याग हेतु 20 व्यक्तियों ने तथा सुपारी सेवन त्याग हेतु लगभग 40 व्यक्तियों ने संकल्प ग्रहण किया। त्रिदिवसीय कार्यक्रम में 6 नवम्बर को 50 उपवास एवं 50 एकाशन तथा दया-संवर की साधना हुई। 7 नवम्बर को 3-3 सामायिकों की आराधना हुई। आचार्यप्रवर के दीक्षा-दिवस के दिन 8 नवम्बर को 5 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। 5-5 सामायिक एवं दया-संवर की भी आराधना हुई। चातुर्मास के अंतिम 5 दिनों में पचरंगी सम्पन्न हुई। चातुर्मास के चार माह में लगभग 1500 रात्रि संवर हुए। महासती मण्डल का यहाँ से विहार सोजत रोड़ की ओर हुआ है।

आगमादर्श आचार्य श्री हीरा की दीक्षा अर्द्धशती के अवसर पर साधना-आराधना के भव्य कार्यक्रम

देशभर में उपवास, एकाशन, सामायिक का आराधन

अर्द्धशती वर्ष में 500 आजीवन शीलव्रती एवं 1000 व्रतधारी बने

200 से अधिक एकान्तर वर्षीतप

सवाईमाधोपुर में 3250 एकाशन व्रत एवं सामूहिक सामायिक साधना

जिनशासन गौरव, संघनायक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 51 वां दीक्षा दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी, 08 नवम्बर, 2013** को गाँव-गाँव, नगर-नगर और महानगरों सहित **पूरे भारतवर्ष में अपूर्व उल्लास एवं त्याग-तप की आराधना के साथ मनाया गया।** मुख्य कार्यक्रम धर्मनगरी-सवाईमाधोपुर में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री

महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि सन्त-मुनिराजों तथा व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में त्याग-तप के साथ मनाया गया। देश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे भक्तों ने त्याग-तप के साथ अपने आराध्य गुरुदेव के श्रीचरणों में श्रद्धा की अभिव्यक्ति की। दीक्षा अर्द्धशती के मंगलमय प्रसंग पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के द्वारा आह्वान किया गया था कि सभी श्रद्धालु इस अवसर पर कम से कम पाँच-पाँच सामायिक व्रत की आराधना एवं उस दिन एकासन, आयंबिल, उपवास, दया आदि में से कोई भी एक तप की आराधना करें। संघ के आह्वान पर पूरे भारतवर्ष में पाँच-पाँच सामायिक व तपस्या की आराधना अच्छी संख्या में हुई। सवाईमाधोपुर के लिए संघ ने 2500 व्यक्तियों द्वारा सामूहिक सामायिक व्रत की आराधना एवं 2500 एकासन का लक्ष्य निर्धारित किया था। संघ के आह्वान एवं गुरु के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति का उत्साह चरम पर था। अपने आराध्य के प्रति सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति करते हुए सवाईमाधोपुर में लक्ष्य से अधिक सामूहिक सामायिक व्रत की आराधना एवं लगभग 3250 व्यक्तियों ने एकासन व्रत की तपाराधना की।

08 नवम्बर, 2013 को इस मंगलमय प्रसंग पर सवाईमाधोपुर महावीर भवन के पास रामकुई मैदान प्रांगण में प्रवचन सभा रखी गई। प्रवचन सभा में प्रात:काल से ही हजारों भक्तों की सामायिक गणवेश में उपस्थिति का भव्य नजारा देखने को मिला। ठीक 9 बजे प्रवचन सभा में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल का पदार्पण हुआ।

सर्वप्रथम **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.** के मंगलाचरण से प्रवचन सभा का शुभारम्भ हुआ। मंगलाचरण के बोल थे- तेरे बिना गुरुवर हमारा नहीं कोई रे।

श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. ने प्रवचन फरमाते हुए कहा कि- आज के दिन का सभी को इन्तजार था। निस्पृहता गुरु के प्रति समर्पण, कर्मबन्धन से मुक्ति, संवर क्रिया हेतु बल, समाधान की प्रवीणता, सरलता की प्रतिमूर्ति जैसे अनेक गुणों से युक्त गुरुदेव का जीवन आप-हम-सबके लिए प्रेरणादायी है।

व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा., महासती श्री चेतनप्रभा जी म.सा., महासती श्री मैत्रीप्रभा जी म.सा. ने अपने आराध्य गुरुदेव के संयमी जीवन के अनेक गुणों की झांकी प्रस्तुत करते हुए गुरुदेव के श्री चरणों में श्रद्धा की अभिव्यक्ति करने के साथ कहा कि गुरु हमारे जीवन को प्रकाश देते हैं। गुरु के बिना हमारा अज्ञान अंधकार कभी नहीं मिट सकता। किसी कवि ने भी कहा है -

सौ सौ सूरज उगवे चन्दा उगिया हजार।
इतणो चांदणो होत भी गुरु बिन घोर अन्धार।।

सुश्राविका **श्रीमती नीलमजी सिंघवी-दिल्ली** ने गुरुदेव की गुण-स्तुति करते हुए काव्यमय प्रस्तुति दी जिसके बोल थे-

आचार्य गुरुवर वन्दन, आचार्य हीरामुनि वन्दन।
अन्तरमन से भक्ति भाव से बार-बार अभिनन्दन।।

युवारत्न श्री इन्द्रजी जैन ने गुरुदेव के उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए गुरु स्तुति में एक भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे-

गुरुदेव मेरे हीरा, भव पार लगा देना।
अब तक तो निभाया आगे भी निभा देना।।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने गुरुदेव की साधनामय झांकी प्रस्तुत करते हुए गुरुदेव के जीवन में विचार व आचार का समन्वय बताया साथ ही कहा कि शुद्ध आचार-विचार के साथ विनय, विवेक, विश्वास का विस्तार गुरुदेव के जीवन में परिलक्षित होता है।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने गुरुदेव के अनेक गुणों को प्रकट करने के साथ अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति करते हुए कहा कि हाथ की एक चीज छूटे बिना, दूसरी चीज हाथ में नहीं आ सकती है। सद्गुरु में तीन विशेषताएँ होती हैं -

(1) जिनके समीप बैठने पर उक्ताएँ नहीं उदासी दूर हो जाये।
(2) वाणी पर नियन्त्रण रखते है गुरु।
(3) जिसमें मोह और द्रोह नहीं हो वह गुरु होता है। गुरु संघ के नायक, ज्ञान के दायक तथा शास्त्र, संस्कृति व साधकों के रक्षक होते है।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने सारगर्भित प्रवचन फरमाते हुए कहा कि- बन्धुओं! मैं प्रवचन करने नहीं, शिष्य का दायित्व निर्वहन करने आया हूँ। दशाश्रुत स्कन्ध में शिष्य का क्या कर्त्तव्य होता है, यह बताते हुए कहा है कि- जो गुरु व संघ के यथार्थ गुणों का वर्णन करें वह शिष्य होता है। अर्द्धशती के चरमोत्सव पर दो बातें कहनी हैं- 38 साल से देख रहा हूँ, सुन रहा हूँ, जान रहा हूँ, समझ रहा हूँ। आचार्य श्री का आचरण आचारांग के अनुरूप है, सिद्धान्त रक्षण की निष्ठा समवायांग से गृहीत है। शुद्ध आचार-विचारों से युक्त वचन-प्रवचन प्रश्न-व्याकरण की प्रभा है। आप यतना के यन्त्र है, सरलता से युक्त सन्त है। उदारता, सरलता, निस्पृहता आदि गुणों के कारण आप ज्येष्ठ

व श्रेष्ठ आचार्य हैं। आपके जीवन में समर्पणता की सुवास है। गुरुदेव के साधनामय जीवन के अनेक गुणों में से कुछ न कुछ गुण हम और आप ग्रहण करेंगे तो ही गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति होगी।

गुरुदेव की दीक्षा अर्द्धशती के अवसर पर शासन में हर सन्त-सती ने जो अर्घ्य अर्पित किया है उसकी संक्षिप्त झांकी आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। **मेरे छोटे से निवेदन को ध्यान में लेकर ज्ञान के क्षेत्र में सन्त-सतीवृन्द ने 32 आगम की स्वाध्याय की है। एक वर्ष में पाँच-पाँच आगम याद करने वाली सतियें भी संघ में मौजूद हैं। वृद्धावस्था में भी तीन हजार की स्वाध्याय एवं लोगस्स की माला फेरने वाली महासतियाँ हैं।** दर्शन के क्षेत्र में जिनशासन की प्रभावना करते हुए अपने दर्शन गुण को परिपुष्ट किया है। चारित्र आराधन के क्षेत्र में निरतिचार संयम का पालन करते हुए अनेक व्रत-नियम अंगीकार किये हैं। **तप के क्षेत्र में लगभग 40 सन्त-सतीवृन्द ने पूरे वर्ष एकान्तर तप की आराधना की है। महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. ने बेले-बेले की तपश्चर्या की है। अनेक संत-सतियों ने सिद्धितप, गुणरत्नतप एवं एकासन व्रत की निरन्तर आराधना की है।** सभी संत-सतीवृन्द ने स्वयं तप किया है तथा अपने सम्पर्क में आने वाले श्रावक-श्राविकाओं को तप की प्रेरणा प्रदान की है। **दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में गुरुदेव के मुखारविन्द से 175 शीलव्रत के खंद हुए हैं। आज भी 11 खंद होने चाहिये, ऐसी बात रखी है।** यह लक्ष्य भी गुरुदेव की कृपा से पूरा होने जा रहा है। **महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. ने 125 खंद करवाये हैं और भी अनेक संत-सतीवृन्द की पावन प्रेरणा से अनेक शीलव्रती बने हैं। बिना प्रचार के लगभग सभी स्थानों से मिलाकर 500 शीलव्रत के खंद हो गये हैं।** बारह व्रत की प्रेरणा से लगभग **1000 भाई-बहिन व्रती बने हैं।** लगभग 200 भाई-बहिन एकान्तर कर रहे हैं। जोधपुर से 50, पाली से 40-45, पोरवाल क्षेत्र से 30 के लगभग एकान्तर चल रहे हैं।

सवाईमाधोपुर चातुर्मास में 6 मासखमण पूरे हुए हैं। इस सब साधना के पीछे गुरुदेव का आशीर्वाद है। चतुर्विध संघ की उज्ज्वलता, समुज्ज्वलता की बात रखी है। गुरुदेव की मुझ पर कितनी कृपा है, कैसा स्नेह है, कैसा उपकार है, हस्ती की मस्ती इस किश्ती में है। गुरुदेव का वरदहस्त आप हम-सब पर निरन्तर बना रहे, ऐसी मंगलकामना करता हूँ।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति करते हुए कहा- गुरुदेव का साधनामय जीवन हम-सब के लिए प्रेरणादायी है। आचार्य पद जैसे चुनौतीपूर्ण दायित्व के निर्वहन पर खरा उतरना

आचार्यकाल में दृढ़ता से चतुर्विध संघ का कुशल नेतृत्व करना गर्व का विषय है। आपकी सटीक व्याख्यान शैली की चर्चा अजैन समाज में भी है। हम-सब ऐसे गुरु को पाकर धन्य-धन्य हैं।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा- आप-हम-सब जिनशासन की प्रभावना में सन्नद्ध आचार्य की अष्ट सम्पदा से युक्त निरतिचार संयम पालन करने वाले गुरुदेव को पाकर धन्य-धन्य हैं। दीक्षा अर्द्धशती के अवसर पर सब भक्तों ने अनेक त्याग-प्रत्याख्यान की आराधना कर गुरुदेव के प्रति श्रद्धा की सच्ची अभिव्यक्ति की है। आपके पावन प्रशस्त कुशल निर्देशन में रत्नसंघ सदैव आगे बढ़ता रहे, ऐसी मंगलकामना करता हूँ। आप अपनी साधना-आराधना करते हुए हम जैसे अबोध प्राणियों का निरन्तर मार्गदर्शन करते रहें। आपका वरदहस्त निरन्तर हम पर बना रहे। ऐसी मंगल भावना करता हूँ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर हीराचन्द्र जी म.सा. ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि साधनाशील भक्तों के लिए आज का दिन श्रद्धा व्यक्त करने का दिन है। साधक बने हुए मेरे लिए अतीत के चिन्तन के साथ भविष्य की दूरबीन लगाने का समय है। स्मरण करने जाऊँ, इस माटी में जो कुछ कलाकारी हुई, उसमें **पहला बड़ा उपकार माता-पिता का** है। उन्होंने खेलने की बजाय ज्ञान सीखने की प्रेरणा दी। वर्ष 2009 के नागौर चातुर्मास में मुझे पूज्य गुरुदेव श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. से सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल सीखने का मौका मिला। **संस्कारों को पल्लवित किया पूज्य श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा.** ने एवं स्थायित्व दिया बहन के आकस्मिक निधन ने। महाव्रत स्वीकार करने के साथ जीवन घड़ने का, संयम को सुरक्षित रखते हुए हर कला का ज्ञान पूज्य श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. से प्राप्त हुआ।

आचार्य भगवन्त की महती कृपा से जीवन बनाने का रूप गुरुदेव से प्राप्त हुआ। **ठोकर खाने वाले पत्थर को इस जगह पर लाने का उपकार आचार्य भगवन्त का है।** संयम जीवन में समता रखते हुए सौहार्द कैसे रखा जाता है, इस शिक्षा के संयोजन का काम आचार्य भगवन्त ने किया। दृढ़ संकल्पी बनकर चतुर्विध संघ को आगे बढ़ाने में हर सदस्य मंगल भावना करे कि मैं दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ूँ। अगर आप जिनशासन के भक्त हैं तो अपनी ओर से कोई ऐसा काम न करें, जिससे जिनशासन का अहित हो। आप संघ में केशर लगा सकें तो सुन्दर, पर दाग नहीं लगे, संघ में कोई अहित न हो, इतना ही करेंगे तो जिनशासन की महिमा बढ़ेगी।

सभा के अन्त में कार्यक्रम संचालक एवं स्थानीय **संघ मंत्री श्री पारसचन्दजी जैन** ने

गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति करते हुए कहा कि- सवाईमाधोपुर संघ गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है। गुरुदेव ने सवाईमाधोपुर संघ को चातुर्मास प्रदान कर हमारी भावना को साकार किया। हम-सब आपके उपकारों से उपकृत हैं, सम्पूर्ण पोरवाल क्षेत्र में आपने धर्म जागृति का जो सन्देश फरमाया, वह हम सबके लिए प्रेरणा पाथेय बना।

मंत्री महोदय ने प्रत्याख्यान करने हेतु आह्वान किया। उपस्थित जनसमुदाय ने गुरुदेव से त्याग-प्रत्याख्यान अंगीकार किये। मंत्री महोदय ने बाहर गांव से पधारने वाले एवं स्थानीय सभी भाई-बहिनों का स्वागत किया तथा भोजन व्यवस्था की सूचना प्रसारित की तथा कार्यक्रम सम्पन्न होने की घोषणा के साथ उपस्थित जनसमुदाय ने गुरुदेव से मांगलिक पाठ श्रवण किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन संघमंत्री श्री पारसचन्दजी जैन ने किया। आवास-निवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था के साथ सामूहिक एकाशन हेतु 3250 व्यक्तियों की बैठकर भोजन करने की सुन्दर व्यवस्था देखने योग्य थी। समाज के शताधिक व्यक्तियों ने भोजन परोसकर गुरुत्तर दायित्व का सुन्दर ढंग से निर्वाह किया, उसके लिए संघ का हार्दिक अभिनन्दन।

विशेष- सवाईमाधोपुर की भांति कोसाणा, जोधपुर, जयपुर, खेरली, भरतपुर आदि विभिन्न स्थानों पर भी पूज्य आचार्यप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती की सम्पूर्ति एवं 51 वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में सामायिक, एकाशन, उपवास आदि की साधना हुई तथा पूज्य आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया गया। कुछ स्थलों का विवरण चातुर्मास-स्थलों की रिपोर्ट में समाहित है।

9 नवम्बर को सामूहिक पारणक सम्पन्न

आचार्य हीरा दीक्षा अर्द्धशती वर्ष की सम्पूर्ति के मंगलमय अवसर पर पूरे वर्ष एकान्तर तप की आराधना करने वाले भाई-बहिनों का सामूहिक पारणक का कार्यक्रम 9 नवम्बर 2013 को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ सवाईमाधोपुर के संयुक्त तत्वावधान में श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराजजी मुणोत अतिथि भवन, सवाईमाधोपुर में रखा गया, **जिसमें लगभग 139 तप-साधकों ने भाग लिया।** सवाईमाधोपुर संघ द्वारा अतिथि भवन के ऊपर वाले हॉल में बाहर गाँव से पधारने वाले तथा नीचे के हॉल में स्थानीय एवं पोरवाल क्षेत्र से पधारे हुए तप-साधकों के लिए पारणक हेतु बैठने की सुन्दर एवं समुचित व्यवस्था की गई। सभी तपस्वी भाई-बहिन अपने-अपने नियत स्थान पर विराजे।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना-जोधपुर, उपाध्यक्ष श्री अमिताभजी हीरावत-जयपुर, संघ महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा-जयपुर तथा संयुक्त महामंत्री श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल-जोधपुर, सवाईमाधोपुर चातुर्मास समिति के संयोजक श्री राधेश्यामजी जैन गोटेवाला-सवाईमाधोपुर, स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री बाबूलालजी जैन-सवाईमाधोपुर, स्थानीय संघमंत्री श्री पारसचन्दजी जैन-सवाईमाधोपुर आदि स्थानीय संघ के पदाधिकारियों ने तप-साधकों की सुख-शांति की पृच्छा करते हुए पारणक करवाया और संघ की ओर से तपस्वियों को सम्मान स्वरूप स्मृति चिह्न भेंट कर उनका अभिनन्दन किया।

संघ तथा संघ की सहयोगी संस्था के पदाधिकारियों तथा संघ-सेवी श्रावक-श्राविकाओं ने भी तप-साधकों को पारणक कराने के साथ तप की अनुमोदना में भेंट स्वरूप स्मृति चिह्न प्रदान किये। तप-साधकों के पारिवारिक-परिजनों ने हर्षित एवं उल्लसित मन से तप की अनुमोदना में तपस्वियों का स्वागत-सत्कार एवं बहुमान किया। पारणक के पश्चात् सभी तपस्वी भाई-बहिन अपने पारिवारिकजनों के साथ प्रवचन सभा में पधारे। प्रवचन सभा में आचार्यप्रवर, मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल से तप की महिमा सुनते हुए पूज्य गुरुदेव से नवीन त्याग-प्रत्याख्यान अंगीकार किये।

प्रवचन, पारणा, भोजन आदि व्यवस्थाएँ समीप ही थीं। सवाईमाधोपुर नगरपरिषद् क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं, युवक तथा युवतियों सभी ने व्यवस्था में उत्साह से योगदान किया।

सवाईमाधोपुर में गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एंव संघ की सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्मान समारोह एवं गुणी-अभिनन्दन का कार्यक्रम 8 नवम्बर, 2013 को महावीर भवन के पास, रामकुई मैदान, सवाईमाधोपुर के प्रांगण में दोपहर 1.30 बजे प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे- संघ-संरक्षक संघरत्न प्राणिमित्र माननीय श्री डी. आर. मेहता साहब, जयपुर। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने की। मंच पर अनेक महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियों में माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत, श्री रतनलालजी बाफना, श्री जसराजजी चौपड़ा, श्री आनंदजी चौपड़ा, श्री कैलाशमलजी दुगड़, श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, श्री जितेन्द्रजी डागा, श्री बाबूलालजी जैन, श्री मुकेशजी जैन भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री पदमचन्दजी जैन-बजरिया, सवाईमाधोपुर द्वारा प्रस्तुत

मंगलाचरण से हुआ। संकल्प पाठ की प्रस्तुति स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री कुशलजी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर ने की। दिल्ली की श्राविकारत्न श्रीमती नीलमजी सिंघवी ने तीर्थंकर भगवन्तों की स्तुति करते हुए मधुर शब्दों में काव्यमय प्रस्तुति दी।

मुख्य अतिथि पद्मभूषण माननीय श्री डी. आर. मेहता साहब का चातुर्मास समिति के संयोजक श्री राधेश्यामजी गोटेवाला ने माला द्वारा एवं संघ के कोषाध्यक्ष श्री चौथमलजी जैन ने शॉल द्वारा बहुमान किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना का स्थानीय संघाध्यक्ष माननीय श्री बाबूलालजी जैन ने माला द्वारा तथा स्थानीय मंत्री श्री पारसचन्दजी जैन ने शॉल द्वारा बहुमान किया।

गुणी-अभिनन्दन चयन समिति के अध्यक्ष **माननीय श्री जसराजजी चौपड़ा** ने सभी अतिथियों का स्वागत किया व गुणी-अभिनन्दन समारोह की पृष्ठभूमि पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस समाज में गुणों की ग्राह्यता न हो, सम्मान का भाव न हो, वह समाज आगे नहीं बढ़ सकता।

सम्मानित व्यक्तित्व

1. संघ-गौरव स्तम्भ सुश्रावकगण स्मृति बहुमान- अनन्य गुरुभक्त संघ समर्पित श्राविकारत्न स्व. श्रीमती सुन्दरबाईजी (अम्मा) धर्मपत्नी स्व. श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ चेन्नई एवं उनके समूचे परिवार द्वारा प्रदत्त संघ-सेवा, समर्पण व निष्ठा का समादर करते हुए उनके सुपुत्र श्री दलीचन्दजी कवाड एवं पौत्र श्री हरीशजी कवाड़ का माल्यार्पण से स्वागत तथा शॉल ओढ़ाकर रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र के साथ यह बहुमान मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किया गया।

2. आचार्य श्री हस्ती स्मृति-सम्मान- डॉ. (श्रीमती) ताराजी डागा-जयपुर को प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार एवं विशिष्ट साहित्य सृजन के लिए प्रदत्त इस सम्मान में डॉ. ताराजी डागा का श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा द्वारा माल्यार्पण से स्वागत तथा चून्दड़ी ओढ़ाकर बहुमान कर 51 हजार की राशि के साथ रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया।

3. युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा-सम्मान- प्रतिभा सम्पन्न शासननिष्ठ, संघ-सेवी श्री प्रशान्तजी बम्ब-लासूर स्टेशन का संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अमिताभ जी हीरावत द्वारा माल्यार्पण से स्वागत तथा शॉल ओढ़ाकर रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना के कर-कमलों से प्रदान कर सम्मानित किया गया।

4. न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा स्मृति युवा-शिक्षा प्रतिभा-सम्मान- प्रखर

प्रतिभा की धनी सुश्री मोनाजी जैन (आई.ए.एस.) परवेणी का श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती बीना जी मेहता द्वारा माल्यार्पण से स्वागत तथा चून्दड़ी ओढ़ाकर बहुमान करते हुए रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कांतिलाल जी चौधरी-धुलिया के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

तपाराधन आदि में सम्मान-

1. गुणी-अभिनन्दन सम्मान के अन्तर्गत तपस्या के क्षेत्र में उत्कृष्ट तपाराधन एवं चतुर्विध संघ-सेवा में उल्लेखनीय योगदान के लिए अनन्य गुरुभक्त, संघनिष्ठ श्रावकरत्न **श्री चेतनप्रकाशजी डुंगरवाल-बैंगलोर** एवं संघ समर्पित, साधनाशील श्राविकारत्न **श्रीमती कंचनदेवीजी डुंगरवाल-बैंगलोर** का अभिनन्दन किया गया। तपस्वी दम्पती का सम्मान लघुभ्राता श्री शांतिलालजी डूंगरवाल ने स्वीकार किया। श्री शांतिलालजी डूंगरवाल का संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रूपकुमार जी चौपड़ा द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा बहुमान किया गया तथा रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना-जलगांव द्वारा प्रदान किया गया।

2. श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा. एवं पूज्या महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा. के सांसारिक सुपुत्र तथा पूज्या महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के सांसारिक भ्राता अनन्य गुरुभक्त, संघनिष्ठ, **युवारत्न श्री अमितजी डागा-जयपुर** का उनके द्वारा प्रदत्त संघ समर्पित सेवाओं एवं युवावस्था में आजीवन शीलव्रत ग्रहण के अनुमोदनार्थ अभिनन्दन किया गया। आपका अभिनन्दन संघ के वरिष्ठ श्रावकरत्न श्री विमलचन्दजी डागा-जयपुर ने स्वीकार किया। श्री विमलचन्दजी डागा का संघ के संयुक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल-जोधपुर द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा बहुमान किया गया तथा रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन पत्र मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमल जी दुगड़-चेन्नई के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

3. पूज्या महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा., महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा. एवं महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा. के सांसारिक पिता संघनिष्ठ, अनन्य गुरुभक्त **श्रावकरत्न वीरपिता श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन-सवाईमाधोपुर** का चतुर्विध संघ-सेवा में आप एवं आपके परिवार द्वारा प्रदत्त सेवाओं के लिए बहुमान किया गया। वीरपिता श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन का संघ-सेवी सुश्रावक श्री पदमचन्द जी कोठारी-अहमदाबाद द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा बहुमान किया गया तथा रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र गुणी अभिनन्दन चयन समिति के अध्यक्ष श्री जसराज जी चौपड़ा के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

4. खेरली स्थानक में सेवारत सरलमना, संघ-सेवी सुश्रावक **श्री रिखबचन्दजी जैन-**

खेरली का उनके द्वारा प्रदत्त समर्पित सेवाओं, संतोषवृत्ति व अनूठी उदारता के लिए सम्मान किया गया। आपका मारवाड़ संभाग के क्षेत्रीय प्रधान श्री पारसमल जी गिड़िया-जोधपुर द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा बहुमान किया गया तथा रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान-

प्रबुद्ध विद्वान् स्वाध्यायी सुश्रावक **श्री फूलचन्दजी मेहता-उदयपुर को विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान** से सम्मानित किया गया। आपका पूर्वी भारत के क्षेत्रीय प्रधान श्री लूणकरण जी लोढ़ा द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा बहुमान किया गया तथा 21 हज़ार की राशि व रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन पत्र वरिष्ठ सुश्रावक व संघ के पूर्व राष्ट्रीय संघ महामंत्री श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना-जोधपुर के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

संघ समर्पित श्राविकारत्न **श्रीमती रतनजी चोरड़िया-जोधपुर को विशिष्ट महिला स्वाध्यायी सम्मान** से सम्मानित किया गया। आपका सम्मान आपके ज्येष्ठ वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री पी. एम. चोरड़िया-चेन्नई ने स्वीकार किया। श्री पी. एम. चोरड़िया का सवाईमाधोपुर के अध्यक्ष श्री बाबूलाल जी जैन द्वारा माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा बहुमान किया गया तथा 21 हजार की राशि सहित रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन-पत्र युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी डागा-जयपुर के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

प्रबुद्ध **स्वाध्यायी श्री जम्बूकुमारजी जैन-जयपुर का विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान** के अन्तर्गत माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना द्वारा बहुमान किया गया तथा 21 हजार की राशि सहित रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन पत्र समारोह के मुख्य अतिथि श्री डी. आर. मेहता-जयपुर के कर-कमलों से प्रदान किया गया।

सम्मानित गुणीजनों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सर्वप्रथम आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान से सम्मानित डॉ. (श्रीमती) ताराजी डागा ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्मान के लिए संघ पदाधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश कराने वाले डॉ. कमलचन्दजी सोगानी, श्री प्रेमचन्दजी जैन, प्राकृत भारती के निदेशक आदरणीय श्री डी. आर. मेहता साहब का भी आभार व्यक्त करती हूँ। युवा प्रतिभा शोध साधना सेवा सम्मान से सम्मानित श्री प्रशान्तजी बम्ब ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि संघ ने मुझे सम्मान योग्य समझा, इसके लिए मैं संघ का आभार मानता हूँ। आज जैनियों का समूह 60 लाख तक सीमित हो गया। हीरा कभी अपने स्वरूप को नहीं खोता, ऐसे गुरु हमें प्राप्त हुए हैं। हम सब एकरूप रहें, जिनशासन की सेवा में सन्नद्ध रहें।

विशिष्ट युवा स्वाध्यायी श्री जम्बूकुमारजी जैन ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि संघ प्रतिवर्ष गुणी-अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित करता है। यह बहुत प्रसन्नता की बात है। मुझे गुरुदेव के सान्निध्य में तथा सिद्धान्तशाला में अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्राकृत व्याकरण पढ़कर हम आगम का सही अर्थ जान सकते हैं, अतः प्राकृत सीखने का अभियान संघ की ओर से चलाया जाना चाहिये।

शासन सेवा समिति के संयोजक संघरत्न सुश्रावक माननीय श्री रतनलालजी बाफना ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि तपस्या करने वाला भगवान बनने की नींव रखता है। हम अपने जीवन में कुछ ऐसा कार्य करें कि हमारे जाने के बाद भी लोग हमें याद करें।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का प्रेरक जीवन-वृत्त **'गुणसौरभ गणिहीरा'** (लेखक-श्री नौरतनजी मेहता) पुस्तक का विमोचन मुख्य अतिथि माननीय श्री डी. आर. मेहता, राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना एवं मंचासीन अतिथियों ने किया। इस पुस्तक में परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 15 अध्ययनों में जीवन-चरित्र प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के लेखक श्री नौरतनजी मेहता ने जीवन-वृत्त में प्रकाशित आचार्य श्री की मौलिक विशेषताओं की सारगर्भित जानकारी प्रदान की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित **जिनवाणी विशेषांक 'आगमादर्श आचार्य श्री हीरा'** का लोकार्पण मुख्य अतिथि माननीय श्री डी. आर. मेहता, राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना एवं मंचासीन अतिथियों ने किया।

कार्यक्रम के **मुख्य अतिथि माननीय श्री डी. आर. मेहता** साहब ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अपने गुरु आचार्य श्री हस्ती की खूब सेवा की। स्वयं आचार्य बने। संघ में शुद्धता व पवित्रता बनाए रखी। आचार्यश्री शान्त हैं, द्रष्टा भाव वाले हैं, लोकेषणाओं से दूर हैं। हम सब का सौभाग्य है कि हमें ऐसे आचार्यप्रवर मिले। हम रत्नसंघ के सदस्य हैं। इस संघ में शुद्ध ध्यान, वीतराग ध्यान केन्द्र का होना भी शुभ संकेत है। ध्यान को संवर एवं सामायिक के साथ जोड़ा गया है। संघ में सहिष्णुता है, उदारता है, यह इसकी विशेषता है। इस संघ में सेवा गुण प्रधान है। दान, दया, परोपकार जिस संघ में नहीं, वह संघ आधा-अधूरा है।

संघ के **राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने अध्यक्षीय उद्बोधन एवं अपने हृद्‌योद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि संघ सौभाग्यशाली है, गुणियों का अभिनन्दन करके। गुण-दर्शन, गुणवर्धन और गुण-ग्रहण साधना के पाथेय हैं। जिन-जिन का

अभिनन्दन किया गया उन सब के प्रति मैं नतमस्तक हूँ। संघ में गुणों का अभिवर्धन हो, गुणियों की सौरभ बढ़ती रहे, यही मंगल मनीषा है।

कार्यक्रम के अन्त में मुख्य अतिथि माननीय श्री डी. आर. मेहता साहब को संघनिष्ठ सुश्रावक श्री सुबाहुकुमारजी जैन ने स्मृति चिह्न प्रदान किया।

संघ महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा ने सम्मान समारोह में पधारने वाले सभी अतिथि महानुभावों का, गुणीजनों का हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा गुणी अभिनन्दन समारोह के भव्य आयोजन के लिए सवाईमाधोपुर संघ को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा ने किया।

संघ की कार्यकारिणी, संचालन समिति तथा साधारण सभा की बैठक सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की कार्यकारिणी की बैठक शनिवार 12 अक्टूबर, 2013 को सुबोध कॉलेज, एम.बी.ए. हॉल, रामबाग सर्किल, टोंक रोड़, जयपुर में, संघ की संचालन समिति की बैठक दिनांक 8 नवम्बर, 2013 को सायं 7.30 बजे श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत अतिथि भवन, सवाईमाधोपुर में तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं उसकी सहयोगी संस्था, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा शनिवार 9 नवम्बर, 2013 मध्याह्न 12.30 बजे महावीर भवन के पास, रामकुई मैदान, सवाईमाधोपुर में सम्पन्न हुई। सभी बैठकों की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने की। इन बैठकों में संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं की वर्ष समाप्ति 31.03.2013 के अंकेक्षित लेखों को अनुमोदित किया गया तथा वर्ष 2013-2014 के आय-व्यय के अनुमान स्वीकृत किए गए।

इन बैठकों में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के विधान में संशोधन, संघ शाखा नियमावली तथा श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ नियमावली को स्वीकृत व अनुमोदित किया गया। अन्य वैधानिक कार्यों के अतिरिक्त संघ-सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर विचार-विमर्श किया गया एवं संघोन्नति हेतु अनेक निर्णय लिए गए।

-आनंद चौपड़ा, महामंत्री

'स्वप्निका' की मुख्य लिखित परीक्षा का 10 नवम्बर 2013, रविवार को देश भर में आयोजन

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन प्रभावक आचार्य भगवंत श्री 1008 श्री

हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी के उपलक्ष्य में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका संघ एवं युवक परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित 'स्वप्निका' की मुख्य लिखित परीक्षा का 10 नवम्बर 2013, रविवार को देश-विदेश के 140 केन्द्रों पर हजारों की संख्या में निर्धारित समय पर आयोजन हुआ। सभी केन्द्र प्रतिनिधियों के भरपूर सहयोग से इस परीक्षा की पूर्णाहुति हुई। सभी परीक्षार्थियों ने अपनी मेहनत का रंग दिखाया एवं स्वप्निका प्रतियोगिता समिति द्वारा सभी परीक्षार्थियों का पुरस्कार से प्रोत्साहन किया गया। 'स्वप्निका प्रतियोगिता समिति' की ओर से सभी को साभार एवं सधन्यवाद।

विशेष- जिन महानुभावों ने 'स्वप्निका' पुस्तिका भरी हो अथवा नहीं भरी हो, परीक्षा दी हो अथवा नहीं दी हो, वे भी निम्न पते पर अपनी 'स्वप्निका' तुरन्त पहुँचाकर अभिलेखित होने का उत्साहवर्धन प्राप्त कर सकते हैं- (1) श्री चन्द्रकान्त जैन, जय आयरन एण्ड टिम्बर्स स्टोर, लिंक रोड़, आलनपुर-322021, सवाईमाधोपुर (राज.), मोबाइल नं.-+91-9414203454, (2) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 0141-2575997, 2571163, फैक्स नं. 0141-2570753

22 दिसम्बर को पल्लीवाल क्षेत्रीय सम्मेलन खोह में

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी के समापन के उपलक्ष्य में श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी श्रावक संघ, खोह द्वारा विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में पल्लीवाल श्रावक-श्राविका क्षेत्रीय सम्मेलन 22 दिसम्बर 2013 को खोह ग्राम में आयोजित किया जा रहा है। उक्त आयोजन में पधारकर संघ को कृतार्थ करें। **सम्पर्क सूत्र**- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः-0291-2636763 (2) श्री आनन्द चौपड़ा, संघ महामंत्री-75686-20000, (3) श्रीमती बीना मेहता, महासचिव-अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल,-97727-93625 (4) श्री प्रदीपकुमार जैन, अध्यक्ष- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, खोह-95490-06934, श्री नवीन कुमार जैन-मंत्री-99839-53655, श्री विमल जैन-कोषाध्यक्ष-96604-05050, श्री प्रसून जैन-97838-96601

नोटः- खोह ग्राम रेलवे स्टेशन मण्डावर से 12 किमी दूरी पर स्थित है। मण्डावर से लक्ष्मणगढ़ जाने वाली सभी बसें खोह ग्राम से गुजरती है।

स्वाध्याय-संगोष्ठियों का आयोजन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा आचार्य भगवन्त पूज्य 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 104वें जन्म-दिवस 14 जनवरी 2014 पर स्वाध्याय-संगोष्ठी का आयोजन करने का आह्वान किया गया है। आप अपने ग्राम-नगर में व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण कर पूज्य गुरुदेव के गुणों का स्मरण करें तथा **"पाप से बचें एवं संवर महिमा" विषय पर संगोष्ठी आयोजित करें।** संगोष्ठी प्रातः 8.30 से 10.30 बजे तक अथवा अपनी सुविधानुसार आयोजित कर इसकी सूचना कार्यालय को अवश्य प्रेषित करें। सम्पर्क सूत्र- *श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2624891, मो. 9460081112, 9461013878*

सवाईमाधोपुर में केन्द्रीय स्वाध्यायी गुणवत्ता अभिवर्द्धन शिविर एवं राष्ट्रीय स्वाध्यायी सम्मेलन

स्वाध्यायियों के ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु स्वाध्याय संघ द्वारा आचार्यप्रवर के सान्निध्य में प्रतिवर्ष स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाता है, जिससे आचार्यप्रवर के साथ-साथ मुनिवृन्दों का मार्गदर्शन स्वाध्यायियों को प्राप्त हो जाता है। इस वर्ष **केन्द्रीय स्वाध्यायी गुणवत्ता अभिवर्द्धन शिविर** का आयोजन 02 अक्टूबर से 06 अक्टूबर तक किया गया। इस शिविर में मारवाड़, मेवाड़, पोरवाल, पल्लीवाल, महाराष्ट्र क्षेत्र के कुल 198 शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रत्येक स्वाध्याय शिविर में कुछ न कुछ नया करने का प्रयास रहता है। इस बार भी इस शिविर में हमने नया प्रयोग करने का प्रयास किया। प्रत्येक स्वाध्यायी की गुणवत्ता में अभिवर्द्धन हेतु इस शिविर में सामूहिक विभिन्न कालांशों में पर्युषण पर्व में पठित अंतगड़ सूत्र को किस तरह रोचक बनाएं इसकी जानकारी देते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन करवाकर अभ्यास करवाया गया। पर्युषण के अष्ट दिवसों में विभिन्न विषयों पर प्रभावी प्रवचन प्रस्तुत करने हेतु वक्तृत्व कला के नये-नये गुर सिखाये गये। साथ ही रात्रिकालीन कक्षा में वक्तृत्व कला का अभ्यास भी शिविरार्थियों से करवाया गया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के ओजस्वी, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. के आगमिक एवं श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. के सत्प्रेरक प्रवचन को श्रवण कर सभी स्वाध्यायियों को अपना आत्म-निरीक्षण करने का अवसर प्राप्त हुआ। श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी तथा महासती श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा. ने प्रतिदिन स्वाध्यायियों को अपनी विशेष कक्षा से विभिन्न विषयों पर प्रभावी सामग्री प्रदान की। शिविर में आदरणीय श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर, श्री आनन्द जी चौपड़ा-जयपुर, डॉ. धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री पदमचन्द जी गांधी-जयपुर ने अपना विशेष उद्बोधन प्रदान किया।

केन्द्रीय स्वाध्यायी गुणवत्ता अभिवर्द्धन शिविर के अन्तिम दिन 06 अक्टूबर 2013 को **राष्ट्रीय स्वाध्यायी सम्मेलन** का आयोजन किया गया । सम्मेलन में शिविरार्थियों के अतिरिक्त कई गांव-शहरों से पधारे स्वाध्यायी भाई-बहनों ने भाग लिया। सम्मेलन में पधारे हुए स्वाध्यायियों ने स्वाध्याय संघ की गति-प्रगति बाबत अपने विचार तथा सुझाव रखे। संयोजक महोदय ने सभी सुझावों पर विचार कर उन्हें क्रियान्वित करने का आश्वासन दिया। सम्मेलन में स्वाध्याय संघ की सभी शाखाओं से तीन-तीन वरिष्ठ प्रतिभावान स्वाध्यायियों का सम्मान किया गया। विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिदिन स्वाध्याय कराने वाले विशिष्ट श्रावकों तथा नवोदित स्वाध्यायियों का भी सम्मान किया गया।

"जैन आगम-साहित्य में ज्ञान-मीमांसा" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी सवाईमाधोपुर में सम्पन्न

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सवाईमाधोपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में जिनशासन गौरव **पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** एवं महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि संत-प्रवरों तथा व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि महासतीवृन्द के पावन सान्निध्य में सवाईमाधोपुर में 30 सितम्बर और 01 अक्टूबर 2013 को चतुर्थ राष्ट्रीय संगोष्ठी **"जैन आगम-साहित्य में ज्ञान-मीमांसा"** विषय पर आयोजित की गई। संगोष्ठी में 21 विद्वानों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। उद्घाटन सत्र में प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर सागरमल जी जैन-शाजापुर ने आधार वक्तव्य प्रदान करते हुए ज्ञान-मीमांसा के विविध आयामों पर प्रकाश डाला। सारस्वत अतिथि डॉ. सत्यप्रकाश दुबे ने सांसारिक जीवन में ज्ञान की महत्ता को प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि श्री ललित माहेश्वरी, पुलिस अधीक्षक, सवाईमाधोपुर ने संगोष्ठी के आयोजन पर प्रसन्नता प्रकट की। संगोष्ठी में कुल 6 सत्र हुए, जिनमें व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, विशेषावश्यक भाष्य, स्थानांग सूत्र, आवश्यक मलगिरि वृत्ति, सर्वार्थसिद्धि, तत्त्वार्थ-वार्तिक, मूलाचार, सन्मति तर्क, अनुयोगद्वार सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, नन्दीसूत्र, प्रज्ञापना सूत्र आदि जैन आगमों के आधार पर सम्यग्ज्ञान, ज्ञान के भेदों तथा उनके स्वरूप का विवेचन किया गया। संगोष्ठी में श्री कन्हैयालाल लोढ़ा-जयपुर, डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'-दिल्ली, डॉ. अशोक कुमार जैन-वाराणसी, डॉ. वीरसागर जैन-दिल्ली, श्री रणजीत सिंह कूमट-मुम्बई, डॉ. श्रीयांस सिंघई-जयपुर, डॉ. राजकुमारी जैन-अजमेर, श्री प्रकाशचन्द जैन-जलगांव, श्री धर्मचन्द जैन-जोधपुर, डॉ. श्वेता जैन-जोधपुर, डॉ. हेमलता जैन-जोधपुर, डॉ. तारा डागा-जयपुर, श्री सौभाग्यमल जैन-अलीगढ़, डॉ. धर्मचन्द जैन-जोधपुर ने शोधालेख प्रस्तुत किये। प्रवचन सभा में विद्वानों के वक्तव्यों की पूज्य आचार्यप्रवर ने समीक्षा करते हुए केवल

ज्ञान की विशेष विवेचना की। संगोष्ठी के अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमल जी दुग्गड़-चेन्नई, कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज जी चौधरी-दिल्ली, संघ महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा-जयपुर, मण्डल मंत्री श्री विनयचन्द जी डागा-जयपुर आदि महानुभावों की भी उपस्थिति रही। संगोष्ठी का संयोजन जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने किया। संगोष्ठी के माध्यम से आगमों में निहित मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्याय ज्ञान, केवल ज्ञान के विभिन्न पक्षों की विवेचना के साथ प्रमाण, नय आदि पर भी प्रकाश डाला गया। दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों के प्रमुख ग्रंथों के माध्यम से ज्ञान की विवेचना की गई। सवाईमाधोपुर संघ समुचित व्यवस्था में तत्पर रहा।

अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 104वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध का विषय "**पाप से बचें एवं संवर महिमा**" रखा गया है। इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के बालक, बालिका, श्रावक एवं श्राविकाएं भाग ले सकते हैं। स्वाध्यायी इस प्रतियोगिता में अवश्य भाग लें।

निबन्ध मौलिक एवं तथ्यात्मक हो एवं 1000 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को क्रमशः 1100/-, 500/- एवं 250/- का नकद पुरस्कार तथा 100/- के 10 सान्त्वना पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। निबन्ध भिजवाने की अन्तिम तिथि 28 फरवरी 2014 निर्धारित है। अपने निबन्ध कार्यालय के पते पर भिजवाएं- ***श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2624891, मो. 9460081112, 9461013878***

राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 75वें जन्म-दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता (**विषय**-व्यसनमुक्ति, फैशन निवारण एवं रात्रि भोजन त्याग : सुखी जीवन का आधार) में लगभग 38 निबन्ध प्राप्त हुए। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है- **प्रथम स्थान**- अंकिता मांडोत-मुम्बई, **द्वितीय स्थान**-पारसमल चण्डालिया-ब्यावर, **तृतीय स्थान**-लक्ष्मीचन्द छाजेड़-समदड़ी, **सान्त्वना पुरस्कार**- विजयचन्द वैद्य-जोधपुर, हर्ष कोठारी-जयपुर, ऋतु जैन-जोधपुर, अनुपमा गुलेच्छा-पाली, कमलेश जैन-बड़ौदा, निर्मला लुणावत-पूना, पवन जैन-जोधपुर, आरती मुथा-

अमरावती, अनिल जैन-कोटा, दिलीप गांधी-चित्तौड़।

स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत संचालित स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार जैन धर्म-दर्शन, इतिहास, कला एवं संस्कृति; जैन साहित्य काव्य, कथा, निबन्ध, नाटक, संस्मरण एवं जीवनी आदि के संबंध में लिखित मौलिक ग्रंथ पर प्रदान किया जाता है। पुरस्कार के रूप में 51 हजार रुपये की राशि, शॉल, श्रीफल व प्रशस्ति पत्र अर्पित किया जाता है। प्रतियोगिता के लिये निर्धारित नियम निम्न प्रकार हैं-

1. अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व से पुरस्कृत कृति पर यह पुरस्कार नहीं दिया जायेगा।
2. पुरस्कार हेतु प्रकाशित/अप्रकाशित (पाण्डुलिपि) दोनों प्रकार की कृतियाँ निर्धारित आवेदन-पत्र के साथ प्रस्तुत की जा सकती हैं। **आवेदन-पत्र समता भवन, बीकानेर से प्राप्त कर सकते हैं।**
3. प्रकाशित कृति का प्रकाशन पुरस्कार हेतु घोषित अवधि में एवं संबंधित वर्ष हेतु घोषित विषय परिधि में ही होना चाहिये।
4. पुरस्कार मूल्यांकन के लिये कृति की मुद्रित 4 एवं पाण्डुलिपि की चार प्रतियाँ निःशुल्क भेजनी होंगी। पाण्डुलिपि की 3 प्रतियाँ आवेदक को पुनः लौटा दी जायेगी। मुद्रित कृतियाँ नहीं लौटाई जाएगी।
5. अप्रकाशित कृति (पाण्डुलिपि) की प्रतियाँ स्पष्ट रूप से टंकित अथवा हस्तलिखित सुवाच्य एवं जिल्द बंधी होनी चाहिये।
6. प्रतिभागी विद्वानों के लिये यह आवश्यक होगा कि वे कृति के संबंध में स्वयं की कृति होने एवं इसके मौलिक होने का प्रमाण-पत्र कृति के साथ भेजें।
7. आवेदन की अंतिम तिथि 28 फरवरी, 2014 है।

सम्पर्क सूत्र- समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-3292177, 2270261, फैक्सः 0151-2270359, Email :absjsbkn@yahoo.in, Website:shriabsjainsangh.com

-चम्पालाल डागा, संयोजक

जिणधम्मो पर खुली किताब प्रतियोगिता

समताविभूति आचार्य श्री नानेश की अनुपम कृति 'जिणधम्मो' पर खुली किताब प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। उत्तर-पुस्तिका जमा कराने की अंतिम तिथि

11 फरवरी, 2014 है तथा परिणामों की घोषणा 2 मई 2014 को होगी। पुरस्कार निम्नानुसार देय होंगे- प्रथम-1,00,000/- रुपये, द्वितीय-50,000/-रुपये, तृतीय-30,000 रुपये, चतुर्थ- 20,000/- रुपये, पंचम-15,000/- रुपये, षष्ठ-10,000/- रुपये, सप्तम-5,000/- रुपये, अष्टम-3,000/- रुपये, प्रतिभा पुरस्कार- 10 (प्रत्येक-2000/-रुपये), ज्ञान-चेतना पुरस्कार-20 (प्रत्येक-1000/-), जिणधम्मो अनुरागी पुरस्कार-50 (प्रत्येक 500/-रुपये) एवं प्रोत्साहन पुरस्कार 500 चाँदी के सिक्के। प्रश्न पुस्तिका एवं उत्तर पुस्तिका का मूल्य 30/- रुपये तथा जिणधम्मो पुस्तक का मूल्य 150/- रुपये है। **सम्पर्क सूत्र-** श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-3292177, 2270261, फैक्स: 0151-2270359

-महेश नाहटा-संयोजक, मो. 09406201351

सापेक्ष अर्थशास्त्र पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

लाडनूँ- आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में जैन विश्वभारती (विश्वविद्यालय) तथा अंतरराष्ट्रीय सापेक्ष आर्थिकी शोध संस्थान की ओर से 21-22 सितम्बर 2013 को सापेक्ष अर्थशास्त्र पर आठवें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन उत्तरप्रदेश के राज्यपाल बी.एल.जोशी ने किया। सम्मेलन में अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, अर्थशास्त्रियों, शिक्षाविदों और विषय-विशेषज्ञों ने अर्थशास्त्र के साथ अहिंसा और संयम जैसे मूल्य गुंफित करने पर चर्चा की। आचार्य हस्ती सम्मान से सम्मानित मनीषी डॉ. दयानन्द भार्गव ने 'पुरुषार्थ चतुष्टय व अर्थशास्त्र' एवं साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने 'शाकाहार और अर्थशास्त्र' विषय पर अपने विचार रखे। *-एस. कृष्णचंद चोरड़िया, महासचिव*

संक्षिप्त-समाचार

जयपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 14 सितम्बर, 2013 को 'बहना, तुमसे कुछ कहना' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध कवि एवं सहृदय श्री युगराज जी ने अनेक कविताओं और उदाहरणों के माध्यम से नवयुवतियों को वर्तमान परिस्थितियों में सम्भल कर जीवन जीने की शिक्षा दी। टी.वी., इण्टरनेट और मोबाइल के इस युग में अनेक बार युवतियाँ दिग्भ्रमित होकर अपने परिवार और धर्म के संस्कारों को भूलकर अनजान व्यक्तियों से दोस्ती कर लेती हैं। जिसका अंजाम बहुत खतरनाक होता है। ऐसे में आवश्यक है कि उन्हें उम्र के इस नाजुक मोड़ पर सही मार्गदर्शन दिया जाये ताकि वे उस

राह पर बढ़ने से पूर्व ही सम्भल जाएँ, इस हेतु श्री जैन ने प्रेरणात्मक उद्बोधन दिया। लगभग 700 युवतियों ने कार्यक्रम में भाग लेकर जीवन के लिये महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस अवसर पर अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विनयचन्द जी डागा तथा अनेक वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाएँ भी उपस्थित थे।

जोधपुर- स्व. श्री पुखराज जी अबानी की 51 वीं पुण्यस्मृति में श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी जोधपुर के तत्त्वावधान में निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर 26 दिसम्बर, 2013 को आयोजित किया जायेगा। शिविर में अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल, एम.एस. तथा डॉ. गोपालचन्द गाँधी, एम.एस. द्वारा हर्निया, हाईड्रोसिल, एपेन्डिक्स, मस्सा, भगन्दर आदि के ऑपरेशन किये जायेंगे। दिनाँक 25 दिसम्बर, 2013 को प्रातः 8.30 से 12.30 बजे ऑपरेशन कराने वाले मरीजों की जाँच की जायेगी। उसके पश्चात् निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर शुक्रवार, 28 फरवरी, 2014 को आयोजित किया जायेगा। *-पूरणराज अबानी, अध्यक्ष*

वैशालीनगर- उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी 'वागीश' आदि संतों के सान्निध्य में राजस्थान केसरी उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म. की 104 वीं जयंती आयंबिल तप के रूप में मनाई गयी। *-प्रकाशमल कूमट*

चेन्नई- श्री साधुमार्गी जैन महिला संघ चेन्नई द्वारा 29 सितम्बर, 2013 को आयोजित "समीक्षण ध्यान योग शिविर" का समापन-समारोह सुश्रावक श्रीमान् पी.शिखरमल सुराणा, चेन्नई के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। श्री सुराणा जी के प्रेरणादायक उद्बोधन से शिविरार्थी गद्गद् हो गए। *-कुमुद गेलड़ा, अध्यक्ष*

लातूर- पूज्य श्री जीवराज जी म.सा. का जन्म शताब्दी वर्ष 2013-14 का शुभारम्भ महाराष्ट्र उपप्रवर्तिनी साध्वी प्रतिभा जी म.सा. के सान्निध्य में 22 सितम्बर 2013 को भव्य कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर विभिन्न प्रकार के आयोजन सम्भावित हैं।

बैंगलोर- जैन समाज को एक सूत्र में पिरोने के लक्ष्य को लेकर जैन युवा संगठन, बैंगलोर द्वारा 'जैन एकता क्यों है जरूरी' विषयक अभियान चलाया जा रहा है। एतदर्थ गुरु भगवंतों एवं सकल जैन समाज से विचार-विमर्श कर उनसे प्राप्त सुझावों और आलेखों को पुस्तिका के रूप में लाने के लिए प्रयत्न चल रहा है।

किशनगढ़- दिगम्बर जैन आचार्य ज्ञानसागर महाराज पर 5 रुपये का स्मारक डाक जारी किया गया, जिसका लोकार्पण 10 सितम्बर 2013 को राज्यमंत्री सचिन पायलट द्वारा

किया गया। सन् 1973 में समाधिमरण को प्राप्त आचार्य ज्ञानसागर जी प्रथम दिगम्बर जैन सन्त हैं, जिनकी स्मृति में डाक-टिकट जारी हुआ है।

उदयपुर- श्रमणसंघीय सलाहकार दिनेश मुनि जी, महाश्रमणी पुष्यवती जी की पावन प्रेरणा से महासती सोहनकुंवर जैन महिला मंडल की सदस्याओं के प्रयत्न से उदयपुर जिले के पई, उंदरी, दमाना, जगन्नाथपुरा जैसे कई गाँवों में विभिन्न दिवसों पर बलि बन्द हो गई तथा भोपाओं ने कभी भी बलि नहीं चढ़ाने का संकल्प लिया।

इन्दौर- जैन तीर्थों की यात्रा करने के इच्छुक व्यक्ति ऑनलाइन कमरों की बुकिंग, भोजन आदि की व्यवस्था हेतु वेबसाइट www.jaintirthyatra.com पर सम्पर्क कर सकते हैं तथा तीर्थ धर्मशालाएँ अपना रजिस्ट्रेशन भी करवा सकती हैं।

मैसूर- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से सुश्री कविता बोहरा की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। साध्वी जी का नया नाम कृतज्ञाश्री जी रखा गया।

कुशालपुरा- काश्मीर प्रचारिका महासती उमरावकंवरजी म.सा. की सुशिष्या श्री कंचन कंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में 24 नवम्बर, 2013 को युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी म.सा. 'मधुकर' का 30 वां पुण्य-स्मृति दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। यह उनका जन्म शताब्दी वर्ष चल रहा है।

बधाई

उदयपुर- वरिष्ठ स्वाध्यायी प्रो. चाँदमल जी कर्णावट का लाडनूं में विराजित आचार्य श्री

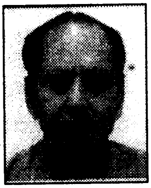

महाश्रमण के सान्निध्य में जैन विश्व भारती परिसर में श्री भँवरलाल कर्णावट फाउण्डेशन राजसमंद की ओर से बोधि-सम्मान किया गया। इस सम्मान के साथ मान-पत्र, स्मृति चिह्न भी प्रदान किया गया। दी गई धन राशि कर्णावट साहब ने तेरापंथ पारमार्थिक शिक्षण संस्था को भेंट कर दी।

कोयम्बतूर- प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर के संस्थापक निदेशक डॉ. सागरमल जैन को 'आगम रत्नाकर', जैनविद्या शोध प्रतिष्ठान, चेन्नई के संस्थापक महासचिव तमिलविद् एस. कृष्णचन्द चोरड़िया को 'जैनविद्या-रत्न' एवं अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक कवि डॉ. दिलीप धींग को 'साहित्य-मनीषी' अलंकरण से श्री कोयम्बतूर स्थानकवासी जैन संघ द्वारा सम्मानित किया गया। यह अलंकरण उन्हें 19 अक्टूबर 2013 को आयोजित आचार्य आनन्दऋषिजी की विदुषी शिष्या महासती कुशलकुँवरजी के अमृत महोत्सव में प्रदान किया गया।

अहमदाबाद- तीर्थंकर वाणी के मानद् सम्पादक डॉ. शेखरचन्द्र जैन को गुना में विराजित

दिगम्बर मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी के सान्निध्य में 14 अक्टूबर 2013 को आचार्य ज्ञान सागर-24 वां पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार आचार्य ज्ञानसागर वागर्थ विमर्श की ओर से प्रदान किया जाता है। डॉ. जैन को पुरस्कार के रूप में 51 हजार रुपये की राशि, सम्मान-पत्र, 5 हजार के वस्त्राभूषण प्रदान किये गए।

अलीगढ़-रामपुरा- श्री हिमांशु सुपुत्र श्रीमती उर्मिला-सोहनलाल जैन इफ्को, सीकर का बिट्स पिलानी से कम्प्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग करते हुए अग्रिम पदस्थापन बैंगलोर की ebay-inc Company में साफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में हो गया है।

जयपुर- श्री दीपक जी टाटिया को भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के स्वायत्त निकाय वी.वी.गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान की परिषद् में सदस्य मनोनीत किया गया है।

चेन्नई- श्री पीयूष ओस्तवाल सुपुत्र श्री कमल ओस्तवाल (भोपालगढ़) ने सी.ए. उत्तीर्ण की है। वर्ष 2005 के आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. के चातुर्मास में आपने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया।

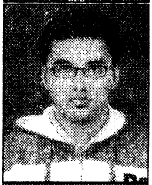

जोधपुर- श्री सावन चौपड़ा सुपुत्र श्रीमती संगीता-उत्तमजी चौपड़ा ने सी.एस. एक्जिक्यूटिव (इण्टर) की परीक्षा प्रथम प्रयास में AIR-22 रेंक से उत्तीर्ण की।

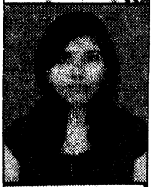

जोधपुर- सुश्री निशा मेहता सुपुत्री श्रीमती स्नेहलता-श्री रमेशजी मेहता (सुपौत्री श्रीमती कानकंवरजी-श्री विजयमल जी कोचर मेहता) ने सी.ए. एवं सी.एस. परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

जोधपुर- श्री उदित कुमार जैन सुपुत्र श्रीमती सुनीता-पारसमल जी जैन (खेड़लीगंज वाले) का IOCL में Officer पद पर चयन हुआ है। आपने RGIPT रायबरेली से इसी वर्ष (2013) B.Tech. में 92 प्रतिशत के साथ द्वितीय रेंक प्राप्त की एवं Gate-2013 में केमिकल ब्रांच में आल इण्डिया में 168 वीं रेंक प्राप्त की।

जोधपुर- श्री अंशुल मेहता (सी.ए. एवं सी.एस.) सुपुत्र श्रीमती मंजु-विरेन्द्रराज जी मेहता (सुपौत्र स्व. श्रीमती अंजनकंवर एवं स्व. श्री नरसिंहराज जी मेहता) की दुबई में पी.आर.एस. ग्रुप में डिप्टी मैनेजर के पद पर नियुक्ति हुई है।

श्रद्धाञ्जलि

उदयपुर- श्रमण संघीय उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी व विदुषी महासाध्वी श्री सज्जनकुंवरजी म. की सुशिष्या 75 वर्ष की वय में महासाध्वी उपप्रवर्तिनी कौशल्याकुंवरजी म. का 19 अक्टूबर 2013 को संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। आप पुष्कर परम्परा की ज्येष्ठ साध्वी थीं एवं उपाध्याय श्री पुष्कर मुनिजी म. के सांसारिक जीवन में भाणजी थीं। आपने 66 वर्षों तक संयम जीवन का पालन किया।

चेन्नई- जैन धर्म-दर्शन के विख्यात विद्वान् डॉ. छगनलालजी शास्त्री का 93 वर्ष की वय में 17 अक्टूबर 2013 को सरदारशहर में निधन हो गया। युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी के संयोजन में प्रकाशित कुछ आगमों का अनुवाद व विवेचन आपने किया था। आपके द्वारा लिखित, सम्पादित, अनूदित और विवेचित लगभग पाँच दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हुई। हिन्दी, प्राकृत व संस्कृत में विश्वविद्यालयीय स्वर्णपदक प्राप्त अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. शास्त्री को आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार, महाराणा कुम्भा सम्मान, निम्बार्क भूषण सम्मान सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। डॉ. शास्त्री 1983 से 1990 तक जैन विद्या शोध प्रतिष्ठान, चेन्नई से जुड़े रहे। आप यहाँ जैन विद्या विभाग में विजिटिंग प्रोफेसर भी थे। जैन विद्या शोध प्रतिष्ठान, चेन्नई में उनको श्रद्धासुमन अर्पित किये गए।

-एस. कृष्णचन्द चोरड़िया, महासचिव

मुम्बई- संघरत्न, दृढ़धर्मी सुश्रावक श्री नवरत्नमलजी मुणोत का स्वर्गवास 21 अगस्त 2013 को हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक, स्वाध्याय करते थे। आचार्यप्रवर के मुम्बई चातुर्मास के समय श्री मुणोत साहब सेवा और धर्माराधन में नित्य रत रहे। धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रहते थे। आप रत्नसंघ के प्रमुख श्रावकों में से एक थे। संघ को पल्लवित एवं पुष्पित करने में आपने हमेशा उदार भावना का परिचय दिया था। आपश्री ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के उपाध्यक्ष व महाराष्ट्र क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रधान पद के दायित्व का बखूबी निर्वहन किया था।

पीपाड़शहर- शांत स्वभावी, धर्मपरायणा, वात्सल्यमूर्ति सुश्राविका श्रीमती मोहनकंवरजी

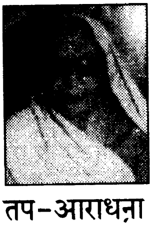

धर्मपत्नी स्व. श्री उगमराजजी भण्डारी का 82 वर्ष की अवस्था में 19 अगस्त, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आप शालीन, गुणानुरागी, सदा प्रसन्नचित्त, मिलनसार एवं उदार हृदया श्राविका थीं। आप नित्य प्रति सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आपने अपने जीवन में अठाई आदि की तप-आराधना की। आप अपने पीछे सुपुत्र महावीरराज जी आदि का धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं।

जयपुर- धर्मपरायणा, व्यवहार-कुशल सुश्राविका श्रीमती सूरज मेहता धर्मपत्नी श्री केसरी मल जी मेहता का 84 वर्ष की आयु में 14 अक्टूबर 2013 को स्वर्गवास हो गया। आपने अपने जीवनकाल में ग्यारह दिवसीय तप, कई अठाइयाँ एवं अनेक तेलों की तपस्या के साथ-साथ एक वर्षीतप पूर्ण किया। संघ एवं समाज की गतिविधियों में आपका अमूल्य योगदान रहा है।

नासिक- तपाराधिका सुश्राविका श्रीमती सीताबाई धर्मपत्नी श्री जवरीलाल जी मोदी का

87 वर्ष की वय में 9 नवम्बर 2013 को 51 दिवसीय सुदीर्घ संथारे के साथ देवलोकगमन हो गया। आपने 18 सितम्बर को तत्र विराजित महासती श्री चंद्रयशाजी से संथारा व्रत ग्रहण किया था। आपका संथारा-काल स्तवन, भजन, आगम पठन के साथ व्यतीत हुआ।

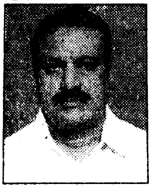

तिन्डीवनम्- सुश्रावक श्री कमलचन्द जी सकलेचा सुपुत्र श्री पारसमल जी सकलेचा का 1 जुलाई, 2013 को स्वर्गगमन हो गया। आप विगत चार-पाँच वर्षों से सामायिक, आयंबिल, उपवास की धर्म आराधना में संलग्न थे।

पहुँना- दृढ़निश्चयी सुश्राविका श्रीमती पतास बाई जी चौधरी का 23 अक्टूबर 2013 को 80 वर्ष की वय में स्वर्गारोहण हो गया।

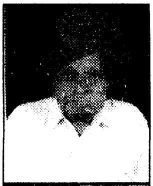

किशनगढ़- सुश्रावक श्री मोहनलाल जी भण्डारी का 16 सितम्बर, 2013 को 80 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। आपने आचार्य सुदर्शनलाल जी म.सा. से शीलव्रत के नियम लिए।

उदयपुर- दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी, दानवीर सुश्रावक श्री सूरजमलजी कांकरिया सुपुत्र स्व. श्री भैरूदान जी कांकरिया (गांगलाव वाले) का 17 नवम्बर, 2013 को समाधि भावों में परलोकगमन हो गया। आप प्रतिदिन तप-त्याग करते रहते थे और 14-15 सामायिक करते थे। आपके 20 वर्षों से स्नान करने का पूर्ण त्याग था।

इचलकरंजी- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री माणिकचन्दजी मुणोत का 68 वर्ष की वय में 15 नवम्बर 2013 को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। नित्य सामायिक एवं प्रतिक्रमण आपकी दिनचर्या थी। इचलकरंजी श्रावक संघ के आप ट्रस्टी थे।

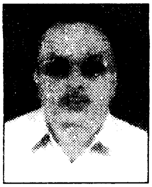

निझर- सुश्रावक श्री गौतमचंद जी भंवरलाल जी कांकरिया का 47 वर्ष की उम्र में 04 सितम्बर, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित सामायिक करते थे एवं रत्नसंघ के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आपके नेत्र दान किए गए।

यवतमाल- सुश्राविका श्रीमती धन्नीबाई लोढ़ा का 85 वर्ष की उम्र में 03 अक्टूबर, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक करती थीं। आपके कई त्याग-नियम थे। आप सरल, विनम्र, धर्मनिष्ठ श्राविका थीं।

गुलाबपुरा- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती लाडकंवर बाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री भीमसिंह जी संचेती का 80 वर्ष की अवस्था में 17 सितम्बर, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आपने अठाई, मासक्षपण और वर्षीतप किए। आप अनुशासनशील एवं ममता की मूर्ति थीं। आपके जीवन में सहजता व सात्त्विकता थी।

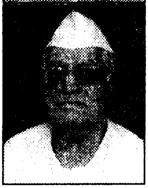

लासलगाँव- समाजभूषण सुश्रावक श्री बाबुलाल जी चुन्नीलाल जी ब्रम्हेचा का 04 सितम्बर, 2013 को 93 वर्ष की वय में समाधिमरण हो गया। आपने कई जैन संस्थाओं से जुड़कर समाज के लिए प्रेरक कार्य किए।

चेन्नई- श्रद्धाशील, मौन आराधिका सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी धर्मसहायिका श्री पूनमचंद जी डोसी (मसूदा-ब्यावर) का 19 अगस्त, 2013 को समाधि भावों के साथ 65 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन 5 सामायिक एवं विगत 35 वर्षों से प्रतिदिन 8 घंटे मौन रखती थीं। आपने अठाई, तेले, बेले, उपवास आदि की तपस्याएँ कीं।

बालोतरा- संघ-सेवी सुश्रावक श्री पुखराज जी सालेचा का 01 सितम्बर, 2013 को देहावसान हो गया। उनकी रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। साम्प्रदायिक भावना से परे रहकर धर्माराधना-तपाराधना एवं संघ सेवा में आप सदैव तत्पर रहते थे। आचार्य भगवन्त के इन्दौर पधारने पर आपने अपूर्व धर्म-ध्यान का लाभ प्राप्त किया।

बालोतरा- सुश्रावक श्री मांगीलाल जी वेदमूथा का 31 अगस्त, 2013 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सद्गुणों से ओत-प्रोत था। आप सामाजिक कार्यों में अग्रणी रहते थे। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

बालोतरा- संत-सेवी सुश्रावक श्री खीमराज जी गोलेच्छा का 19 सितम्बर, 2013 को परलोकगमन हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्रावक का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। त्याग-तप से युक्त आपका जीवन हम-सबके लिए प्रेरणादायी है। बालोतरा में सम्पन्न धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रहे।

बालोतरा- धर्मशीला सुश्राविका श्रीमती शोभादेवीजी धर्मपत्नी श्री उत्तमचन्द जी लालन मेहता का 21 सितम्बर, 2013 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करती थीं तथा संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहती थीं। लालन मेहता परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहता है।

अहमदाबाद- दृढ़धर्मी, सुश्राविका श्रीमती उमरावकंवर जी धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी भण्डारी का प्रत्याख्यान सहित 80 वर्ष की वय में 11 सितम्बर 2013 को स्वर्गारोहण हो गया। सुश्राविका का गृहस्थ जीवन आदर्श एवं प्रेरणादायी था। आप अपने जीवन में समाज सेवा और संत-सतियों की सेवा में तत्पर रहती थीं। नियमित स्वाध्याय, 8-10 सामायिक, दान-पुण्य, कुष्ठरोगी सेवा, गो-सेवा आदि आपकी दिनचर्या में समाहित था। सुज्ञ श्राविका प्रत्याख्यानों के प्रति पूर्णतया सजग थीं। सुश्राविका बाईजी के नाम से प्रसिद्ध थी। पूरा भण्डारी परिवार संघ एवं समाज की सेवा में अग्रणी रहा है।

किशनगढ़- धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री तेजमल जी मोदी का 69 वर्ष की आयु में 24 नवम्बर,

2013 को देहावसान हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-साधना करते थे। आप पुष्कर सेवा समिति अस्पताल, भारत विकास परिषद् तथा अन्य कई संस्थाओं में सक्रिय थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

खेरली- सुश्राविका श्रीमती मधु जी धर्मपत्नी श्री महेशचन्द जैन पल्लीवाल (खेड़ी वाले)

हाल निवासी खेरली जिला-अलवर का अल्प आयु में 25 नवम्बर, 2013 को असामयिक निधन हो गया। उन्होंने मासक्षपण की तपस्या पूर्ण की। आप धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी एवं मिलनसार श्राविका थीं। सम्पूर्ण खेड़ी परिवार का रत्नसंघ से वर्षों से जुड़ाव रहा है।

जयपुर- सुश्रावक श्री पूनमचन्द जी बैद का 25 नवम्बर, 2013 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ थे तथा अनेक सद्गुणों से सम्पन्न थे। बचपन से ही आपकी माताजी द्वारा प्राप्त सुसंस्कारों के कारण आप निरन्तर धर्म-ध्यान में लगे रहते थे।

पाली- सुश्रावक श्री सज्जनराज जी मूथा का 26 अगस्त 2013 को स्वर्गवास हो गया।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

बनें आगम अध्येता (2) उपासकदशांग सूत्र

श्रावक-श्राविकाएँ सुज्ञ और तत्त्वज्ञ बनें, इस हेतु **आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.** एवं सन्त-सती मण्डल का उपदेशों के माध्यम से पुरजोर प्रयास रहता है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आगम स्वाध्याय का अनुष्ठान **बनें आगम अध्येता (2) उपासकदशांग सूत्र** प्रारम्भ किया जा रहा है, जिसमें श्रावक-श्राविका दोनों ही वर्ग भाग ले सकते हैं। स्वाध्याय हेतु साधु-साध्वी भी भाग ले सकते हैं। बनें आगम अध्येता (1) दशवैकालिक सूत्र के माध्यम से अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने स्वाध्याय किया, जिसकी समापक परीक्षा 15 दिसम्बर 2013 को सम्पन्न होने जा रही है। अब श्रावकों के साधनाशील जीवन की झलक प्रस्तुत करने वाले आगम उपासकदशांग सूत्र को अध्ययन का विषय बनाया गया है। आगामी काल में उत्तराध्ययन सूत्र, अन्तगडदशा सूत्र एवं नन्दी सूत्र आगमों की परीक्षा प्रस्तावित है। पाँच आगमों की परीक्षा के बाद, इनके अध्येताओं में से पंचागम अध्येता प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया जायेगा, जिसमें से श्रेष्ठ पंचागम अध्येता का चयन करके विशेष रूप सम्मानित किया जायेगा।

1. सर्वप्रथम **बनें आगम अध्येता (2) उपासकदशांग सूत्र** प्रतियोगिता का फार्म **15 जनवरी 2014 तक भरकर भिजवाएं।** फार्म की छायाप्रतिलिपि भी मान्य है।
2. सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित उपासकदशांग सूत्र को मंगवाकर उसका स्वाध्याय प्रारम्भ करें।
3. फार्म प्राप्त होने पर आपके पोस्टल पते या मेल पते पर 100 अंकों का एक मूल्यांकन प्रश्नपत्र 25 जनवरी 2014 तक पहुंच जायेगा। आपको मूल्यांकन प्रश्नपत्र के प्रश्नों के उत्तर **31 मार्च 2014** तक घर से ही लिखकर हमको प्रेषित करने हैं।
4. उपासकदशांग सूत्र की समापक परीक्षा **25 मई 2014** को आपके स्थानीय स्थानकों में परीक्षकों की उपस्थिति में आयोजित होगी, जो कि 90 अंक की होगी व इस परीक्षा में आप उपासकदशांग सूत्र की पुस्तक भी साथ रख सकते हैं।
5. मूल्यांकन प्रश्नपत्र के उत्तर फुल स्केप साइज कागजों पर नीले रंग की स्याही के बालपेन से लिखकर भेजने हैं।
6. मूल्यांकन उत्तर पुस्तिका को जांचकर उनमें प्राप्त अंकों को 10% करके उन अंकों को समापक परीक्षा में प्राप्त अंकों में जोड़कर परीक्षार्थी के कुल प्राप्तांक होंगे और कुल प्राप्तांक अंकों के आधार पर प्रथम तीन श्रावक-श्राविकाओं को **उपासकदशांग**

आगम अध्येता की उपाधि से अलंकृत करने के साथ ही क्रमशः 31,000/-प्रथम विजेता को, 21,000/- द्वितीय विजेता को और 11,000/- तृतीय विजेता को पुरस्कार स्वरूप राशि प्रदान की जायेगी। परीक्षा में 70 या अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागियों को 500 रूपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये जायेंगे।

7. इस **बनें आगम अध्येता** प्रतियोगिता से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी अपेक्षित हो तो आप सुज्ञ श्राविका डॉ. मंजुला बम्ब-09314292229, श्रीमती बीना मेहता महासचिव, जोधपुर-09772793625, श्रीमती तृप्ति सिंघवी-09828341834, श्रीमती चन्द्रा हीरावत-09610357011, सौ. संगीता बोहरा, चैन्नई-09444322714, सौ. विजया मल्हारा, जलगाँव-0257-2223223 से सम्पर्क कर सकते हैं।

आप सभी श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि आगम ज्ञान-अभिवर्धन के इस कार्यक्रम में फार्म भरकर अपनी स्वीकृति प्रदान करावें, स्वीकृति प्राप्त करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ ही परीक्षा देने के अधिकारी रहेंगे। **पत्राचार का पता:-** श्रीमती पूर्णिमा लोढा, अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, ए-7, महावीर नगर, जयपुर(राजस्थान) फोन नं. 9829019396

आवेदन-पत्र

बनें आगम अध्येता (2) उपासकदशांग सूत्र परीक्षा स्वीकृति पत्र

1. परीक्षार्थी का नाम..
2. पिता/पति का नाम..
3. घर का पता..

   ....

   ....
4. फोन नं. व मोबाइल नं. ....
5. ई-मेल पता ....
6. आप किस सेंटर पर समापक परीक्षा देना चाहते हैं?..............................
7. क्या आपने बनें आगम अध्येता (1) दशवैकालिक सूत्र में भाग लिया है?.........

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर मय दिनाँक

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/- जिनवाणी पत्रिका की 20 वर्षीय आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15109 से 15194 तक 86 सदस्य बने।

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्त

11000/- डॉ. जबरचन्दजी, शीतल कुमारजी, विमलकुमारजी, हरीश कुमारजी खींवसरा, आवड़ी-चेन्नई, उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के कोसाणा चातुर्मास स्थल पर दर्शन-लाभ प्राप्त होने की खुशी में।

11000/- श्री मोहनलालजी, पारसमलजी, सुशील कुमारजी, आनन्द कुमारजी एवं बोहरा परिवार (ब्यावर वाले), तिरूवन्नैमलाई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं संत-सतीवृन्द के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में सपरिवार दर्शन-लाभ प्राप्त करने की खुशी में।

11000/- श्री रतनराजजी, नेमीचन्दजी, दिलीपजी, रविजी, अदितजी भण्डारी, कांदिवली वेस्ट-मुम्बई, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती के पावन प्रसंग पर भेंट।

7200/- श्री राजमलजी जैन, मुम्बई, श्रीमती प्रसन्नकँवरजी जैन के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में जिनवाणी को 2100/- एवं कबूतर चुग्गे हेतु 5100/- का अर्थसहयोग।

7100/- श्री सज्जनराज जी सुपुत्र श्री छोटमल जी धारीवाल, पाली, सुपुत्र श्री सौरभ का शुभ विवाह प्रियंका के संग 21 मई 2013 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

6100/- श्री भँवरलालजी, जौहरीलालजी, कस्तूरचन्दजी, प्रकाशचन्दजी डोसी, हैदराबाद, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शनलाभ प्राप्त करने की खुशी में।

5151/- श्री सुबाहुकुमारजी, मनोज कुमारजी, मनीष कुमारजी जैन (सर्राफ), सवाईमाधोपुर, श्रीमती संतोषदेवीजी धर्मसहायिका श्री सुबाहुकुमारजी जैन द्वारा परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 31 दिवसीय मासखमण करने एवं श्रीमती संगीताजी धर्मपत्नी श्री मनोजजी जैन के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

5100/- श्री भंवरलालजी, श्यामचन्दजी, संदीपजी बोथरा, चेन्नई, नेहाजी बोथरा सुपौत्री श्री भंवरलालजी बोथरा, पुत्री श्री सुगनचन्दजी बोथरा के 8 उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री प्रवीण कुमारजी, नितिन कुमारजी, दीपक कुमारजी एवं समस्त रूणवाल, बीजापुर, आचार्य भगवन्त के दर्शन लाभ प्राप्त होने की खुशी में।

5100/- श्री मदनलालजी, विजय कुमारजी, अभयजी, दर्शनजी बोहरा, आवड़ी-चेन्नई, व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास आवड़ी में होने एवं पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से दीक्षा अर्द्धशती पर श्री मदनलालजी व श्रीमती मैनाबाईजी बोहरा द्वारा 33 की तपस्या के प्रत्याख्यान लेने के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री दलीचन्दजी, किशनलालजी नाहटा, बंगारपेट, दोहिती सौ.कां. डिम्पल का शुभ-विवाह चि. मितेशजी डोसी के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में।

5100/- श्रीमती आयचुकिजी 'नाडसर वाले' धर्मसहायिका स्व. श्री माणकचन्दजी लोढ़ा एवं उनके

सुपुत्र, बैंगलोर, श्री शांतिलालजी की पुत्रवधू श्रीमती अलकाजी धर्मपत्नी श्री सुनीलजी लोढ़ा के 9 की तपस्या पूज्य गुरुदेव के कृपा प्रसाद से सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

5100/- श्री पुखराजजी, प्रकाशचन्दजी बाघमार (कोसाणा वाले), चेन्नई, सुपुत्री सौ. कां. आरतीजी का शुभविवाह श्री प्रफुल कुमारजी सुराणा के संग सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

5000/- श्रीभायंदर श्रीसंघ, मुम्बई, हस्ते श्री नरेन्द्रभाईजी गाँधी, श्री रतनराजजी, दीपकजी वाडीवाल शाह, मुम्बई, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती के शुभ पावन प्रसंग पर।

3300/- श्री जिनेश कुमारजी जैन (डेहरा वाले-हिण्डौनसिटी), जयपुर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री स्वरूपचन्दजी जैन की छठी पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

3100/- श्री हुक्मीचन्दजी, संतोष कुमारजी डोसी, शांतिनगर-बैंगलोर, युवारत्न स्व. श्री विनोद कुमारजी डोसी सुपुत्र श्री हुक्मीचन्दजी मदनकँवरजी डोसी की द्वितीय पुण्य तिथि दिनांक 16 नवम्बर 2013 के उपलक्ष्य में।

3100/- श्री बुद्धिप्रकाशजी, रिखबचन्दजी, धर्मचन्दजी, विजयजी, नरेन्द्रजी (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, बहिन श्रीमती संतोषबाईजी धर्मपत्नी श्री सुबाहुकुमारजी सर्राफ के मासखमण की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

3100/- श्रीमती पुष्पा बाई अमृत लाल जी सुराणा, चेन्नई, विरक्ता बहन सुश्री शिल्पी सुराणा के मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री दिलीपजी सुगनचन्दजी भण्डारी, रत्नागिरी, श्री सुगनचन्दजी भंडारी का दिनांक 17 अगस्त 2013 को स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

2100/- डॉ. भावेन्द्र शरदजी जैन, जोधपुर, गाँधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र के मानद सचिव श्री नेमीचन्दजी जैन 'भावुक' का 21 अक्टबूर, 2010 को तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवीजी जैन का 28 अक्टूबर 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर दोनों की पुण्य स्मृति में।

2100/ श्री मोहनलालजी, सुमेरचन्दजी चोरड़िया, इन्दौर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शनलाभ प्राप्त करने की खुशी में।

2100/- श्री सोहनलालजी जैन, सीकर, चि. हिमांशुजी जैन बिट्स पिलानी से बी.ई. फाइनल कम्प्यूटर साइन्स का ईबेइन्क कम्पनी बैंगलोर में सॉफ्टवेअर इंजीनियर के पद पर केम्पस चयन होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री सागरमलजी प्रकाशदेवीजी छाजेड़, चेन्नई, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., शासन प्रभाविका, साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. तथा संत-सतीवृन्द के चातुर्मास स्थलों पर दर्शन लाभ करने की खुशी में।

2100/- श्री रिषभचन्दजी, जीतमलजी, राजाजी बोथरा, जयपुर, श्रीमती अन्जूजी धर्मसहायिका श्री नरेशजी बोथरा-औरंगाबाद के 8 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्री धर्मचन्दजी, कमलकुमारजी, संजयकुमारजी मेहता, दूदू-जयपुर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शनलाभ करने की खुशी में।

2100/- श्री मंगलचन्दजी, धर्मीचन्दजी, राजेन्द्रजी भंसाली, चेन्नई, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा तथा संत-सती के दर्शनलाभ प्राप्त करने की खुशी में भेंट।

2100/- श्री निर्मल कुमारजी, मनोहरलालजी बम्ब, शूले-बैंगलोर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सपरिवार दर्शनलाभ करने की खुशी में।

2004/- श्री महेन्द्रमलजी गांग (जोधपुर वाले), सूरत, अपने सुपुत्र अभिषेक जी एवं अनुपम जी (यू.एस.ए.) के, स्वयं के तथा पुत्रवधू श्रीमती स्वाति जी धर्मपत्नी श्री अनुपमजी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में।

1501/- श्री अनिल कुमारजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, अपने पिताश्री श्री घनश्यामजी जैन (अध्यक्ष श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, अलीगढ़-रामपुरा) के ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त होने एवं उनके नवजात सुपौत्र आरुषजी को आचार्य भगवन्त एवं संत-सतीवृन्द के दर्शनलाभ प्राप्त करने की खुशी में।

1500/- श्री धनरूपचन्दजी, अमित कुमारजी मेहता, बैंगलोर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन सान्निध्य में पर्युषण पर्वाधिराज पर्व सवाईमाधोपुर में मनाने के उपलक्ष्य में।

1500/- श्री राजेश कुमारजी, अजय कुमारजी, संजय कुमारजी मेहता, मुम्बई, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शनलाभ करने की खुशी में।

1500/- श्री सुनील कुमारजी, सलील कुमारजी ढढ्ढा, उदयपुर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सवाईमाधोपुर में दर्शनलाभ करने की खुशी में।

1500/- श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शांतिनगर-बैंगलोर, सप्रेम भेंट।

1500/- श्री प्रकाशचन्दजी, शान्तिलालजी, महावीरचन्दजी, मोहितजी लोढ़ा (नाडसर), लोढ़ा फाइनेन्स, चेन्नई, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती व श्री महावीरचन्दजी लोढ़ा के चेन्नई में नूतन गृहप्रवेश के उपलक्ष्य में।

1111/- श्री हर्षित कुमारजी, गजेन्द्र कुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमती तीजादेवीजी जैन पुत्रवधू श्रीमती आशाजी धर्मपत्नी श्री गजेन्द्र कुमारजी जैन के आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की प्रेरणा से प्रथम बार तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1111/- श्री जगदीशजी, हनुमानजी, रवीन्द्रजी, आनन्दजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द का विक्रम संवत् 2070 का चातुर्मास सवाईमाधोपुर में स्वस्थ्य समाधि, प्रभावना के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1101/- श्री कमलकिशोरजी, अभय कुमारजी कांकरिया, चेन्नई, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सपरिवार दर्शनलाभ प्राप्त करने की खुशी में।

1101/- श्री महेन्द्र कुमारजी जैन (सोप वाले), सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी स्व. श्री शान्तिलालजी जैन की पुण्य स्मृति में।

1101/- श्री त्रिलोकचन्दजी जैन (गाडोली वाले), उनियारा, धर्मसहायिका श्रीमती सीमाजी जैन के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1100/- श्री ओमप्रकाशजी टीकमचन्दजी जैन, नवसारी, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के कृपा प्रसाद से स्वयं की अठाई तपस्या सुख शांति के साथ सम्पन्न होने पर सप्रेम।

1100/- तविशाजी चौहान (महागढ़ वाले), इन्दौर, परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर में दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1100/- श्री देवराजजी, रमेशचन्दजी नाहर (कोसाणा वाले), कालीकट, श्री रमेशचन्दजी एवं धर्मसहायिका श्रीमती संगीताजी नाहर द्वारा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सेवा में ग्यारह दिवसीय तप करने व पूज्य आचार्य भगवन्तके दर्शन लाभ होने की खुशी में।

1100/- श्री विजयराजजी, आनन्द कुमारजी बाघमार, बैंगलोर, आचार्य भगवन्त के दर्शन लाभ होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती शोभादेवीजी स्वरूपचन्दजी मेहता (उमरगाँव रोड़ वाले), मुम्बई, पूज्य आचार्य भगवन्त प्रभृति संत-सतीवृन्द के सवाईमाधोपुर, किशनगढ़ में दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में।

1100/- श्री पदमराजजी, सज्जनराजजी, चन्द्रप्रभाजी मेहता (जोधपुर वाले), बैंगलोर, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शन लाभ करने की खुशी में।

1100/- श्री नरेन्द्रजी ढढ्ढा, बीकानेर, श्री अंकितजी ढढ्ढा के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री आनन्दजी भण्डारी, श्री महावीरजी धोका, श्री नवरतनजी रांका, श्री प्रवीणजी कोठारी, प्रकाशजी लोढ़ा, पृथ्वीराजजी मुथा आदि युवारत्नबन्धु मैसूर, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शन लाभ की खुशी में।

1100/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजेन्द्रजी बाघमार (कोसाणा वाले), मैसूर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शन लाभ की खुशी में।

1100/- श्री बी. सी. भण्डारी जी, कानपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शन लाभ की खुशी में।

1100/- श्री मदनलालजी, राजेशजी बाघमार (कोसाणा वाले), जबलपुर, श्रीमती मधुजी राजेशजी बाघमार द्वारा उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती लाडदेवीजी हीरावत, जयपुर, सुपौत्र चि. प्रणयजी सुपुत्र श्री प्रमोदजी सुनीताजी हीरावत के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती सुशीलाकँवरजी, किस्तूरचन्दजी डोसी (सी.ए.), ब्यावर, पुत्रवधू सौ.कां. भारतीजी धर्मपत्नी श्री शैलेश कुमारजी डोसी के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री झूमरलालजी, शांतिलालजी कवाड़, चेन्नई, चि. राहुलजी के 9 की तपस्या एवं श्री सुनीलजी के 5 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्रीमती देवबालाजी, प्रेमचन्दजी जैन, ठाणे, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शन लाभ की खुशी में।

1100/- सौ.कां. बिन्दूजी बहन, मुम्बई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर चातुर्मास में दर्शन लाभ करने की खुशी में।

1100/- श्री माँगीलालजी, महावीरचन्दजी, विनोद कुमारजी बोहरा, चेन्नई, श्रीमती सुआबाईजी धर्मपत्नी श्री माँगीलालजी बोहरा के 52 दिवसीय तपस्या महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.

आदि ठाणा के सान्निध्य में सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री माँगीलालजी, महावीरचन्दजी, विनोद कुमारजी बोहरा, चेन्नई, श्री माँगीलालजी के 16 की, श्री महावीरचन्दजी के 11 की, लतिकाजी बोहरा के 11 की तपस्या महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री झूमरलालजी, राजकुमारजी बोहरा, चेन्नई, श्रीमती विमलाबाईजी धर्मपत्नी श्री झूमरलालजी बोहरा के 15 की तपस्या एवं श्री सज्जनराजजी बोहरा के 8 की तपस्या महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री मीठालालजी, धर्मीचन्दजी, हुक्मीचन्दजी छल्लाणी, कुम्भकोणम्, बोहरा परिवार द्वारा की गई सभी तपस्याओं की अनुमोदना के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री गुलाबचन्दजी, रमेशचन्दजी डूंगरवाल, चेन्नई, श्री संजय कुमारजी के 9 की तपस्या महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री झूमरलालजी, राजकुमारजी बोहरा, चेन्नई, व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा-5 का चातुर्मास आवडी-चेन्नई में होने की खुशी में।

1100/- श्री हीराचन्दजी सुपुत्र श्री पारसमलजी रांका, चेन्नई के 33 की तपस्या के प्रत्याख्यान व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के मुखारविन्द से अंगीकार करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री मदनलालजी, अनिल कुमारजी रांका, गुलाबपुरा, श्रीमती कंचनबाईजी धर्मपत्नी श्री मदनलालजी रांका द्वारा महासती सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास में तपस्या करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री देवीलालजी, पुखराजजी, नेमीचन्दजी रांका, आगूचा, श्रीमती पारसदेवीजी धर्मपत्नी श्री पुखराजजी द्वारा महासती सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास में 8 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री महावीर प्रसादजी, विमलकुमारजी रांका, आगूंचा,व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-7 के गुलाबपुरा चातुर्मास में श्रीमती मानकँवरजी रांका के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, राकेश कुमारजी, मुकेश कुमारजी रांका, गुलाबपुरा, श्री दीपचंदजी एवं श्रीमती मंजूरानीजी तथा श्रीमती सुमनजी रांका द्वारा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री मनसुखलालजी, आनन्दरामजी गुगलिया, लोनावाला, श्री अशोकजी गुगलिया के 8 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री लादूलालजी, विमल कुमारजी, अमित कुमारजी, कविशजी कोठारी, दूदू-जयपुर, श्री लादूलालजी के 8 की तपस्या, पुत्रवधू श्रीमती सीमाजी धर्मपत्नी श्री विमलजी के 9 की तपस्या तथा आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के सवाईमाधोपुर में सपरिवार दर्शनलाभ की खुशी में।

1100/- श्री बुधमलजी पदमचन्दजी कोठारी, अहमदाबाद-चेन्नई, श्रीमती किरणकँवरजी धर्मपत्नी श्री बुधमलजी तथा सुपुत्री इन्दिराजी, रेखाजी, संतोषजी के द्वारा एकान्तर तपाराधना एवं परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा के दर्शनलाभ की खुशी में।

1100/- श्री विजराजजी जैन (बाफणा), शाहपुरा-ठाणे, सप्रेम भेंट।

1100/- श्री हुकमीचन्दजी, प्रकाशचन्दजी, मनीष कुमारजी मेहता (गिरि वाले), ब्यावर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा तथा संत-सती के दर्शनलाभ की खुशी में।

1100/- श्री आशीष कुमारजी जैन, अबोहर-पंजाब, पूज्य महासती श्री सुमतिकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-4 के बीकानेर चातुर्मास के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री शोभागसिंहजी, जयसिंहजी, विजयसिंहजी, मनोहरजी (सी.ए.) भण्डारी (नवाब वाले), किशनगढ़, श्री मोहनलालजी भण्डारी का 16 सितम्बर 2013 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री राजेन्द्रजी, सौरभजी चोरड़िया, बेंगलोर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा तथा संत-सती के दर्शनलाभ की खुशी में।

1100/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजेन्द्रजी बाघमार, मैसूर, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा तथा संत-सतीवृन्द के दर्शनलाभ की खुशी में।

1100/- श्रीमती शारदाजी एवं सुरेशचन्दजी जैन, गंजखेरली-अलवर, सुपौत्र चि. ध्रुवजी सुपुत्र श्रीमती पूजाजी अरूण कुमारजी जैन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री केसरीमलजी मेहता (जोधपुर वाले), जयपुर, सुश्राविका श्रीमती सूरजजी मेहता का 14 अक्टूबर 2013 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री सुभाषचन्दजी, अशोक कुमारजी धोका, मैसूर, पर्वाराधिराज पर्युषण के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री अरविन्दजी रांका, आवड़ी-चेन्नई, सप्रेम।

1100/- श्री अभिनन्दन कुमारजी, प्रवीण कुमारजी जैन (आलनपुर वाले), जयपुर, पूज्य पिताश्री श्री बाबूलालजी जैन (मंत्री) की प्रथम पुण्यतिथि 04 नवम्बर 2013 पर भावांजलि स्वरूप।

1100/- श्री सागरमलजी कोठारी, ब्यावर, श्री विवेकजी सुपुत्र श्री सुभाषचन्दजी कोठारी का Accenture Co, में Richfield America में चयन होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री कमलचन्दजी बैद, जयपुर, पूज्य मातुश्री की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री ओमप्रकाशजी जैन, नवसारी, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं संत-सती के सुपौत्र रिषित के प्रथम बार दर्शनलाभ की खुशी में।

1100/- श्री बंशीलालजी, लोकेश कुमारजी मुणोत, कोटा, आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं संत-सतीवृन्द के दर्शनलाभ की खुशी में।

1100/- श्री एस. एस. जैन संघ, पल्लीपेट, पूज्य आचार्य भगवन्त के कृपाप्रसाद से पर्वाधिराज पर्युषण सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री कमलकिशोरजी, पीयूषजी, ध्वजजी, चारित्र जी कटारियार, रायपुर, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा तथा संत-सतीवृन्द के दर्शनलाभ की खुशी में।

1100/- वीरमाता श्रीमती ललितादेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री शांतिलालजी लुणावत, पीपाड़सिटी, महासती श्री रिद्धिप्रभाजी म.सा. के एकान्तर तपस्या की पूर्णाहुति एवं दर्शनवन्दन के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1100/- श्री प्रकाशमलजी, सुनील कुमारजी, हर्षजी बोथरा, चेन्नई, पूज्य पिताजी स्व. श्री

रतनलालजी-बोथरा की 50वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में एवं आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन लाभ की खुशी में।

1100/- श्री स्वरूपचन्दजी, आनन्दजी ललवानी, चेन्नई, श्री आनन्दजी ललवानी के पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन मुखारविन्द से गुरु आम्नाय लेने की खुशी में।

1100/- श्री महावीर प्रसादजी, दिलीप कुमारजी जैन (चौधरी), गुलाबबाडी-कोटा, चि. हेमन्तजी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री पारसमल जी मगराज जी बोहरा, बाड़मेर

1100/- श्री पारसमल जी हेमंत जी मनोज जी ओस्तवाल, भोपालगढ़ (हा.मु. बेंगलुरू) आचार्य प्रवर श्री हीरांचद जी म.सा. उपाध्यायप्रवर श्री मानचंद्र जी म.सा. आदि संत-सतियों के दर्शन वंदन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री सुरेश कुमार, दिलीप कुमार, चंद्रकांत जी रांका, पीपलगांव , महाराष्ट्र, अट्ठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री कन्हैयालाल जी, सुरेश जी, विजय जी, अशोक जी, भंवर लाल जी, प्रकाश जी चौधरी, पहोना वाले श्रीमती पतास बाई धर्मपत्नी स्व. श्री बालाबक्षजी चौधरी का स्वर्गवास 23 अक्टूबर, 2013 को होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री योगेन्द्र जी जैन, नसिया कॉलोनी, गंगापुर, परम पूज्या महासती शासन प्रभाविका साध्वी प्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा आदि ठाणा 8 के दर्शन वंदन प्रवचन का लाभ लेने एवं महासती उषा जी म.सा. के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री अभय बी. कांकरिया, जलगांव, नवनिर्मित गृहप्रवेश के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती चित्रा जी धर्मपत्नी श्री विपिन कुमार जी जैन, लोहामंडी-आगरा (यू.पी.), पूज्य शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा आदि ठाणा के दर्शन-वंदन-प्रवचन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती सूरजकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री अचलराज जी, श्री सुनील जी, श्री शरद जी मोहनोत, जोधपुर, दौहित्री निशा मेहता सुपुत्री श्रीमती स्नेहलता-रमेश जी मेहता, जोधपुर के प्रथम प्रयास में सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के प्रसंग में।

1100/- श्री विजय जी मेहता, जोधपुर, जिनवाणी सहयोग हेतु।

1100/- श्री गौतमचन्द जी, विवेककुमार जी चोरड़िया, चेन्नई, जिनवाणी सहयोग हेतु।

जिनवाणी विशेषांक 'आगमादर्श आचार्य श्री हीरा' के लिए अर्थसहयोग

5100/- श्री पदमचन्दजी मेहता, जोधपुर

5100/- श्री रावलचन्दजी चौपड़ा, जोधपुर

5100/- श्री जवाहरमलजी, अमरमलजी, शांतिमलजी मेहता, जोधपुर

5100/- श्री जौहरीमलजी राकेशजी कुम्भट, जोधपुर

5100/- श्री माँगीलालजी, जौहरीमलजी, नेमीचन्दजी, प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, जोधपुर

5100/- श्री पंकज कुमारजी सुपुत्र प्रकाशमलजी भण्डारी, जोधपुर

5100/- श्री सुखराजजी, अशोकजी मेहता-गीता भवन, जोधपुर

5100/- श्री लुणकरणजी, विजयजी, विकासजी लोढ़ा, कानपुर

5100/- श्री सिद्धार्थजी, पार्श्वजी जैन, बैंगलोर

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

100000/- उत्तम कल्याण ट्रस्ट, जयपुर, मण्डल से प्रकाशित पुस्तक दशवैकालिक सूत्र के पुनर्मुद्रण हेतु सप्रेम।

85000/- मैसर्स सम्भवनाथ एजेन्सीज, बैंगलोर, मण्डल से प्रकाशित पुस्तक निर्ग्रन्थ भजनावली के पुनर्मुद्रण हेतु सप्रेम।

55000/- श्री रतनलाल सी. बाफणाजी, जलगाँव, मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'रत्न-मंजूषा' के प्रथम संस्करण के मुद्रण हेतु सप्रेम।

51000/- श्री मनोहरलालजी, मोहनलालजी जोगड़, पिलखोड़ा-जलगाँव, सप्रेम।

40000/- श्री महावीरचन्दजी, गौतमचन्दजी छाजेड़, चेन्नई, मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'आहार संयम और रात्रि भोजन त्याग' के चतुर्थ संस्करण के पुनर्मुद्रण हेतु सप्रेम।

30000/- श्री धनरूपचन्दजी, अमित कुमारजी मेहता, बैंगलोर, मण्डल से प्रकाशित पुस्तक गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-6 के पुनर्मुद्रण हेतु सप्रेम।

28000/- श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर, मण्डल से प्रकाशित पुस्तक आनुपूर्वी के पुनर्मुद्रण हेतु सप्रेम।

20000/- श्री सुभाषचन्दजी धोका, मैसूर, मण्डल से प्रकाशित पुस्तक गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-2 के पुनर्मुद्रण हेतु सप्रेम।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

48878/- श्री सुभाष जी, कल्पना जी जैन, नीमच (यू.एस.ए.) पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम।

21000/- श्रीमती सायर कंवर जी पत्नी स्व. श्री सुरजराज जी ओस्तवाल, जोधपुर पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम।

11000/- श्रीमती सायरदेवी जी चौरड़िया, चेन्नई, पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम।

11000/- श्री चंचलमल जी, शांतिलाल जी, राहुल जी, रौनक जी बोथरा, जोधपुर, स्व. श्रीमान् अनराज जी बोथरा की स्मृति में पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम।

11000/- श्री मोहनलाल जी जीरावला, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम।

11000/- श्री पुखराज जी, नवरतनजी, अभिषेक जी गिड़िया, जोधपुर,पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम।

11000/- श्री हरकराज जी, नरेन्द्र जी, महेन्द्र जी, राजेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम।

11000/- श्री चन्दूलाल जी कर्नावट, जोधपुर, स्व. श्रीमती विद्यादेवीजी की स्मृति में पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम।

11000/- श्रीमती मनोहरदेवी जी कांकरिया, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम।

5100/- श्री कान्तिलाल जी चौधरी, धुलिया, पुत्रवधू सौ. बिन्दु पत्नी श्री हितैष जी चौधरी के 9 उपवास की तपस्या करने के उपलक्ष्य में सप्रेम।

2100/- श्री संजय जी, हरकचन्द जी बोहरा, धुलिया सप्रेम।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

40000/- श्री भोपालचंद जी पगारिया, बैंगलुरू

25000/- रतन देवी चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर

3100/- श्री जैन स्थानवासी युवक संघ, चाकूस-जयपुर, संघ मंत्री श्री विवेककुमारजी जैन द्वारा पर्युषण पर्वाधिराज 2013 के उपलक्ष्य में सप्रेम।

पर्युषण सहायता

21000/- श्री महावीरचंद जी, केशरचंद जी, मोहनलाल जी, सम्पतराज जी छाजेड, लासूर स्टेशन

21000/- श्री सम्पतराज जी चौधरी, नई दिल्ली

11111/- श्री गौतमचंद जी, प्रकाशचंद जी, लासूर स्टेशन

11000/- सौ. ज्योति मोहनलाल जी छाजेड, लासूर स्टेशन

11000/- श्रीमती सुशीला जी चोरडिया, उज्जैन

5100/- श्री कल्याणमल जी, रस्सीलाल जी, सुरेशचंद्र जी मोहनोत, लासूर स्टेशन

2100/- श्री शांतिचंद जी मेहता, जोधपुर

2100/- श्री राजेन्द्र जी, संतोष जी कर्णावट, लासूर स्टेशन

2100/- श्री मोहनलाल जी, मनोज कुमार जी मुथा, लासूर स्टेशन

2100/- श्री राजेन्द्र जी, दिनेश जी मुथा, लासूर स्टेशन

2100/- श्री श्रीचंद जी, हस्तीमल जी डोसी, मेड़ता सिटी

1100/- श्री चम्पालाल जी, विनोद जी कर्णावट, लासूर स्टेशन

1100/- श्री राजेन्द्र जी, मोतीलाल जी चंडालिया, लासूर स्टेशन

1100/- डॉ. बंशीलाल जी, प्रशांत कुमार जी बंब, लासूर स्टेशन

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
111000	हाँगकाँग	21000	मुम्बई	10001	कोलकाता
9100	कानपुर	5100	डोम्बीवली	5000	रालेगांव
4100	चलथान	4100	पांढ़रकवाड़ा	3100	वाराणसी
3100	सतारा	3100	अम्बाजोगाई	2500	वाकोद
2150	मण्डपीया	2105	गरोड़	2100	सहाड़ा
2100	अलीगढ	2100	केलशी	2100	बाड़मेर
2100	दरीबा माइन्स	2100	सिद्धीगंज	2000	पारसोली
1651	वागड़ी(चालीस गांव)	1500	आजादनगर(भीलवाड़ा)	1100	लासूरस्टेशन
1100	दूणी	1100	इच्छापुर	1100	देई
1100	आकोदियामण्डी				

महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ को प्राप्त पर्युषण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
11000	डबीपुरा (हैदराबाद)	5100	बड़नेरा	5000	रत्नागिरी
4100	कामठी	4100	चिपलूण	3100	विदिशा
2600	मुक्ताई नगर	2500	बेरछा	2100	सिल्लोड़

2100	वाकोद	2100	फत्तेपुर	1700	माण्ड्ल
1511	वालूज	1501	चिखली	1500	पारसिवनी.
1500	बड़वानी	1115	किनगांव राजा	1101	रालेगांव
1100	दूसरबीड़	1100	कजगांव	1100	शिरूड़
1100	होलनाथा	1100	वरणगांव	1100	बोरकुण्ड़
1100	शेन्दूर्णी	1100	कसारे		

2100 श्री मुकेश कनकमल जी चोरडिया, पारोला

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

48000/- श्री पुखराज जी, प्रकाशचन्द जी, रमेशचन्द जी, पदमचन्द जी बाघमार, चेन्नई, श्री पुखराजजी-श्रीमती अनिताबाईजी बाघमार कोसाणा वाले, हाल मुकाम चेन्नई, अपनी सुपुत्री आरती का शुभ विवाह प्रफुल कुमार जी सुराणा के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री अनिल डी. डोशी, मुम्बई (महा.)

12000/- श्री मोहनलाल जी, मनीष जी बोगावत, पंडरकवडा

12000/- डॉ. जबरचन्द जी, शीतल कुमार जी खिंवसरा, आवड़ी-चेन्नई, पंडित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के कोसाना चातुर्मास में दर्शन-वंदन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तद्नुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

मार्गशीर्ष शुक्ला 14, सोमवार	16.12.2013	चतुर्दशी
मार्गशीर्ष शुक्ला 15, मंगलवार	17.12.2013	पक्खी
पौष कृष्णा 8, बुधवार	25.12.2013	अष्टमी
पौष कृष्णा 8, गुरुवार	26.12.2013	अष्टमी
पौष कृष्णा 9, शुक्रवार	27.12.2013	पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक
पौष कृष्णा 14, मंगलवार	31.12.2013	चतुर्दशी, पक्खी
पौष शुक्ला 8, बुधवार	08.01.2014	अष्टमी
पौष शुक्ला 14, मंगलवार	14.01.2014	चतुर्दशी, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 104 वां जन्म-दिवस।
पौष शुक्ला 14, बुधवार	15.01.2014	चतुर्दशी, पक्खी
माघ कृष्णा 4, सोमवार	20.01.2014	उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 80 वां जन्म-दिवस।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

- आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम् *With Best Compliments from :* परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

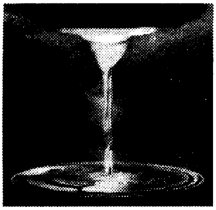
Electric Arc Furnace

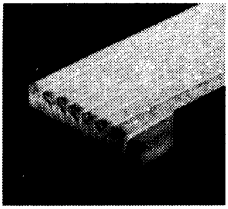
Billets

Rolling Mill

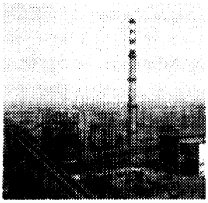
Captive Power Plant

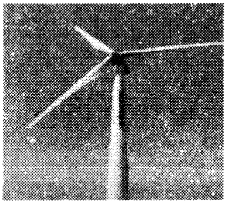
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT
MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय !   हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का ।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आदरणीय रत्नबंधुवर,

रत्न संघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा तथा रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरु भक्तों के पूर्ण सहयोग से गत सात वर्षों से मेधावी छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना चल रही है। संघ द्वारा इस योजना का विस्तार कर दिया गया है।

निवेदन है कि अपने परिवार में आई खुशियों को मूर्त रूप देने के लिए छात्रवृत्ति योजना में रुपये 3000/-, 6000/- व 9000/- का अर्थ सहयोग करके दिवस विशेषों को चिरस्थायी बनायें एवं पुण्य कमायें।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पण्डितरत्न उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ अवसर पर छात्रवृत्ति योजना में 50,000/- रुपये या एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र अर्थ सहयोग करावें।

ज्ञान का एक दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइए
दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में लाभ उठाकर आनन्द पाइये

इस योजना में जो गुरुभक्त अर्थ सहयोग करना चाहते हैं, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि जमा करा सकते हैं या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है-

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address- AXIS Bank LTD. Anna Salai, Chennai(T.N.) IFSC Code- UTIB0000168
PAN No.- AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.Budhmal Bohra
No.-53, Erullappan street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.), Telefax No.- 044-42728476

अधिक जानकारी एवं सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें-

Name	Place	Contact No.	Name	Place	Contact No.
Ashok Kavad	Chennai	9381041097	Sumtichand Mehta	Pipar	9414462729
Budhmal Bohra	Chennai	9444235065	Manoj Kankaria	Jodhpur	9414563597
Praveen Karnaavat	Mumbai	9821055932	Kushalchand Jain	Sawai Madhopur	9460441570
Mahendra Bafna	Jalgaon	9422773411	Rajkumar Golecha	Pali	9829020742
Ravindra Jain	Sawai Madhopur	9413401835	Harish Kavad	Chennai	9500114455
Suresh Chordia	Chennai	9444028841	Jitendra Daga	Jaipur	9829011589
Vikram Bagmar	Chennai	9841090292	Sheryansh Mehta	Jodhpur	9799506999

जय गुरु हीरा | जय गुरु हस्ती | जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।

- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera

Jai Guru Maan

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं।
ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी।
- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२ ००९

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 दिसम्बर, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 12 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 दिसम्बर, 2013 ★ मार्गशीर्ष, 2070

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विनय चन्द डागा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन